श्री तारक गुरु-ग्रन्थमाला का ५ वाँ पुष्प

चिन्तन की चाँदनी

लेखक
परमश्रद्धेय पण्डितप्रवर प्रसिद्धवक्ता
श्री पुष्कर मुनि जी महाराज
के सुशिष्य
देवेन्द्र मुनि, शास्त्री, साहित्यरत्न

प्रकाशक
श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय
पदराडा, (उदयपुर)

पुस्तक
चिन्तन की चाँदनी

०

लेखक
देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न

०

सम्पादक
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

०

विषय
उद्बोधक चिंतन-सूत्र

०

पुस्तक पृष्ठ
एक सौ छिहत्तर

०

प्रथम प्रकाशन
अक्टूबर, १९६८

०

मूल्य
तीन रुपए

०

प्रकाशक
श्री तारकगुरु जैन ग्रन्थालय
पदराडा, जिला—उदयपुर

०

मुद्रक
श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
राजा की मण्डी, आगरा
वास्ते—ज्ञानमुद्रणालय

समर्पण

श्रद्धालोक के देवता
परमश्रद्धेय पूज्य गुरुदेव
श्री पुष्कर मुनि जी महाराज
के
चरण कमलों में

पुस्तक प्रकाशन में अर्थसहयोगी

श्रीमान मोरुलाल जी दीपचन्द जी

मु० लोनावला, जिला, पुना (महाराष्ट्र)

प्राथमिकी

•

अपने प्रवुद्ध पाठको के पाणि-पद्मो मे 'चिन्तन की चादनी' पुस्तक थमाते हुए मन प्रसन्न है, हृदय आनन्द विभोर है

प्रस्तुत पुस्तक मे समय समय पर धर्म, दर्शन साहित्य, समाज, सस्कृति, कला, विज्ञान, अध्यात्म और जीवन प्रभृति विषयो पर चिन्तन की मुद्रा मे अकित सक्षिप्त विचारसूत्र है. यदि इन विचारसूत्रो का विस्तार किया जाय तो एक वृहद्काय ग्रन्थ तैयार हो सकता है.

आज के वैज्ञानिक युग मे मानव के पास समय की अत्यधिक कमी है, वह वडे-वडे ग्रन्थ, निवन्ध, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र आदि को पढने से कतराता है समयाभाव के कारण सक्षिप्त मे वहुत कुछ जानना समझना चाहता है. प्रस्तुत उपक्रम उन्ही जिज्ञासुओ के लिए है

परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज की अपार कृपा, प्रोत्साहन, और मार्गदर्शन के कारण ही मैं चिन्तन की दिशा मे गतिशील हुआ हूँ अत इसमे जो भी नया चिन्तन, व नया विचार है वह सब गुरुदेव की दया-दृष्टि का ही सुफल है.

सुयोग्य सम्पादक 'सरस' जी ने पाण्डुलिपि को देखकर आवश्यक सशोधन व परिमार्जन किया है और साथ ही मेरे प्रेम भरे आग्रह को सम्मान देकर श्रीयुत वनारसीदास जी चतुर्वेदी ने पुस्तक पर सक्षिप्त किन्तु महत्त्वपूर्ण भूमिका लिखने का सद्भाव प्रदर्शित किया है तदर्थ मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ. पाठको ने इसे पसन्द किया तो शीघ्र ही दूसरा नया उपहार भी अर्पित किया जायेगा.

प्रकाश-पर्व
जैनस्थानक, घोडनदी
पुणे (महाराष्ट्र)
२१-१०-६८

—देवेन्द्र मुनि

प्रकाशकीय

दीपमालिका के इस सांस्कृतिक पर्व पर जहाँ संसार प्राकृतिक अंधकार को मिटाने के लिए मिट्टी के नन्हे-नन्हे दीपक जला रहा है, बिजली के वड़े वड़े लट्टू जलाकर प्रकाश की विजय का पर्व मनाने मे सलग्न हैं, उस पुनीत अवसर पर हम अपने प्रिय पाठको को जीवन के अन्त र्लोक को आलोकित करने वाली यह 'चिन्तन की चांदनी' प्रस्तुत करने का उपक्रम कर रहे हैं.

'चिन्तन की चादनी' की शुभ्र किरणे जीवन के विभिन्न पक्षो में परिव्याप्त अधकार को मिटायेगी विचारों के अधकार में भटकते मन, मस्तिष्क को नया आलोक देगी, और जीवन का पथ प्रशस्त करेगी—यह इसका स्वाध्याय करने वाले पाठक अनुभव करेंगे.

चिन्तन की चाँदनी के चिन्तनकार है—श्री देवेन्द्र मुनि जी, शास्त्री साहित्यरत्न आप श्रद्धेय गुरुदेव आगमतत्त्ववेत्ता मधुरप्रवक्ता श्री पुष्कर मुनि जी म० के सुयोग्य शिष्य हैं. मुनि श्री जी साहित्य एवं श्रुतसाधना मे सतत संलग्न हैं. अध्ययन, अनुशीलन, चिन्तन मनन, लेखन वस यही उनके जीवन का उदात्त ध्येय है.

मुनि श्री अब तक लगभग ४० पुस्तको से अधिक का लेखन-सपादन कर चुके हैं. कल्पसूत्र जैसे आगम ग्रन्थ पर नवीनशैली में सुन्दर विवेचन व सटिप्पण सपादन करके आपने अपनी सपादन-कला का सुन्दर परिचय दिया है. उनकी स्फुरणशील प्रतिभा, और लेखन-कला से हमारा स्थानकवासी समाज ही नही, वल्कि पूरा जैन समाज गौरवान्वित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है.

पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री वनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखकर हमे अनुग्रहीत किया है, तदर्थ हम उनके आभारी हैं.

इसके प्रकाशन मे जिन जिन महानुभावों ने उदार अर्थ सहयोग देकर हमारा उत्साह वढ़ाया है, हम उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग की अपेक्षा रखते हैं.

मंत्री—

श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय

संपादकीय

●

* चिन्तन और चिंता—अंतर्मुखी वृत्तियाँ है, दोनो ही व्यक्ति को आत्मलीन बनाती है, आत्म-समुद्र की अतल गहराई मे उतारकर उसे डुबो देती है
* आत्म-समुद्र में जब अन्तर्मंथन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, तो चिन्ता का हलाहल विष भी निकलता है और चिन्तन का अमृत भी !
* चिन्ता का विष—जीवन को कुण्ठित, मूर्च्छित तथा निष्प्राण बना देता है चिन्तन का अमृत जीवन को सक्रिय, तेजस्वी एव उर्ध्वगामी बनाता है
* आज का जन जीवन, चाहे वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का जीवन है, उसमें एक कुण्ठा, मूर्च्छा, निष्क्रियता छाई हुई है। वह चिन्ताग्रस्त है. चिन्ताओ के भार से उसका दम निकला जा रहा है उसका तेज क्षीण हो चला है.
* जीवन की इस कुण्ठा को तोड़ने के लिए चिन्तन का सुदृढ प्रहार होना चाहिए. युग की मूर्च्छा को मिटाने के लिए चिन्तन का अमृत-स्पर्श आज नितान्त अपेक्षित है.
* चिन्तन जगे तो चिन्ता मिटे, चिन्ता मिटे तो जीवन मे स्फूर्ति और तेजस्विता आये.
* सक्रिय और तेजस्वी जीवन वस्तुत जीवन है, वह अमृत है, जो युग के समूच्छित कर्तृत्व को जागृत करता है, जगत को अपनी रचनात्मकता मे उपरत करता है
* आज के आस्थाहीन युग-मानस को आत्मनिष्ठ बनाने के लिए चिन्तन का

द्वार खुलना चाहिए जीवन की अधोगामी वृत्तियो का स्रोत तभी ऊर्ध्वगामी बनेगा, जब चिन्तन का वेग उसे उद्वेलित करेगा.

* चिन्तन की इस हिम-धवल-रजत-ज्योत्स्ना की छाया मे जब हमारे व्यक्तित्व का शतदलकमल स्वस्थ, शान्त प्रसन्न एव विकस्वर होकर आत्म-मुखी बनेगा तो निश्चय ही आनन्द की अपूर्व अनुभूति से वह पुलक उठेगा सात्त्विक गुणो की सौरभ से स्वयं महकेगा और अपने परिपार्श्व को भी महकाता रहेगा

* श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण सघ की युवा पीढी के होनहार सत, श्री देवेन्द्र मुनि जी एक चिन्तनशील सत है, चिन्तनशील है इसलिए वे गम्भीर अवश्य है, किन्तु इस गभीरता के मथन से वे सदा आनन्द, प्रसन्नता एव प्रेरणा की अमृत कणिकाएँ हम सबके लिए बटोरकर इन अक्षर रेखाओ मे बिखेर देते है उनके जीवन की स्वच्छ व निर्मल भूमि पर जब देखो तब चिंतन की चादनी छितराई मिलेगी. पूर्णिमा को भी अमावस्या को भी ! सच तो यह है, कि जिस जीवन मे चिंतन की चांदनी खिल उठी उस जीवन मे अमावस्या कभी आती ही नही, और पूर्णिमा कभी जाती नही.

* 'चिंतन की चादनी' मे विहरण करने वाले पाठक को लेखक की अन्तर्मुखीन स्फुरणा, प्रज्ञा, व आत्मनिष्ठा से साक्षात्कार होगा, चिंतन का माधुर्य, उल्लास एव नवीन स्फूर्ति के साथ प्राप्त होगा ऐसा मुझे विश्वास है

* श्री देवेन्द्र मुनि जी ने अपने अन्त करण से स्फुरित चिन्तन सूत्रो की शब्द-सज्जा, व काट-छाट आदि का दायित्व मुझे सौंपा, यह उनका आत्मीय स्नेह एव सद्भाव मेरी प्रसन्नता का विषय है. मैं अपने दायित्व को निभाने मे कहाँ तक सफल रहा, इसका निर्णय पाठको के हाथ मे है

* मै आशा और विश्वास करता हू कि मुनि श्री जी का चिन्तनशील मानस इसी प्रकार हमे चिन्तन की नवीन स्फुरणाएँ देता रहेगा. आत्म-मथन के अमृत-स्पर्श से धर्म, समाज और राष्ट्र के अन्तश्चैतन्य को जागृत करता रहेगा.....

दीपमालिका
आगरा
२१-१०-६८

—श्रीचन्द सुराना 'सरस'

दो शब्द

•

जब श्रद्धेय देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्यरत्न की पुस्तक 'चिन्तन की चांदनी' मुझे भूमिका लिखने के आदेश के साथ प्राप्त हुई, तो स्वभावतः मेरे मन मे सकोच हुआ

यहाँ मैं ईमानदारी के साथ और विना किसी सकोच के यह वात स्वीकार करता हू कि मैं तो एक साधारण कार्यकर्ता हू, चिन्तक नही. मैंने उस कूचे मे कभी पैर भी नही रक्खा ! इसलिए मैं इस पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए अपने को सर्वथा अनधिकारी ही मानता हूँ, हाँ दो चार वातें निवेदन अवश्य कर सकता हूँ.

चिन्तन के गम्भीर सागर मे गोते लगाकर श्री मुनि जी ने जो रत्न प्राप्त किए हैं और जिन्हे सजोकर उन्होने इस पुस्तक मे रख दिया है उनका यथार्थ मूल्याकन, ठीक-ठीक परख—वे ही कर सकते हैं, जो इस पथ के पथिक रह चुके हो पर अपने प्रात कालीन स्वाध्याय के समय दूसरो के द्वारा एकत्रित रत्नो को देखने तथा उनमे से कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे अवश्य प्राप्त हुआ है. चूंकि मैं वर्षो से अपना मानसिक भोजन अंग्रेजी पुस्तको से ही लेता रहा हूँ, इसलिए प्राय विदेशी मनीषियो के ही विचारो का अध्ययन मैंने किया है. रूस के नपोतकिन और गोर्की, फ्रान्स के रोमारोला आस्ट्रिया के स्टीफन ज्विग, इङ्गलैण्ड के एडवर्ड कारपेन्टर तथा ए० जी० गार्डनर आयर्लैण्ड के ए. ई. के सिवाय अमरीका के एमर्सन, थोरो तथा ह्विटमैन का भी मैं प्रशसक रहा हूँ. कभी कभी धम्मपद, निर्ग्रन्थ प्रवचन तथा गीता का भी अनुशीलन कर लेता हू लाला हरदयाल जी के Aints for self culture से भी मुझे बहुत प्रेरणा मिली है स्वाध्याय के लिये

मैंने देश विदेश की सीमा को कभी नही स्वीकार किया. विदेशी ग्रन्थकारो के विचाररत्नो से मेरी बीसियो नोटबुक भरी पड़ी हैं.

मुनि जी की चिन्तन की चांदनी को मैंने ध्यानपूर्वक इधर-उधर से देखा, यद्यपि उसके प्रति न्याय करने के लिये पर्याप्त अवकाश चाहिये था, जो अब मेरे लिये सर्वथा दुर्लभ है.

इस ग्रन्थ के कितने ही विचार मुझे मौलिक प्रतीत हुए और कुछ परिभाषाए भी विशेष आकर्षक जंची. उन सब स्थलो पर मैंने निशान भी लगा दिये थे—इस खयाल से कि उन्हे यहां उद्धृत कर दूंगा—पर उनकी संख्या इतनी अधिक निकली कि स्थान की कमी के कारण वह खयाल छोड़ देना पड़ा जो विचार मुझे खास तौर पर पसन्द आये उनका कुछ विवरण ही यहां दे रहा हूं.

पृष्ठ ३—अध्यात्म और विज्ञान
४—परते तोड़नी होगी
५—अपनी पहचान
८-९—धनवान बन्धु
१०—धर्म की परिभाषा
१८—गरुड़ बनिये
२०—सम्पदा के अर्थ
२१—सुखी कौन
२७—गाली और अपना मुंह देखिये
२८—ब्रह्मचर्य की साधना
२९—आत्म-क्षरण
३३—गन्दाजल
३९—मन का मनोवेग
४०—मन को घूरा मत बनाओ
४२—विचारों की पवित्रता
४३—एकाग्रता
४५—उपवास
आदि आदि

इस पुस्तक को पढकर मेरे मन में कभी उसके रचयिता के दर्शन करने

तथा विचार परिवर्तन करने की अभिलाषा उत्पन्न हो गई. बन्धुवर डा० हरीशङ्कर शर्मा की कृपा से मुझे श्रद्धेय अमरमुनि जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उनकी विद्वत्ता तथा सज्जनता से प्रभावित भी हुआ. मैं अपनी झंझटो मे व्याप्त रहने के कारण मुनि जी के निकट सम्पर्क मे नही आ सका इसका मुझे खेद है हाँ, सन्मति ज्ञानपीठ के कुछ प्रकाशन समय समय पर मुझे मिलते रहे हैं और वे मेरे लिये प्रेरणाप्रद सिद्ध हुए है

जीवन के विभिन्न परिपार्श्वो को छूने वाले मुनि जी के ये चिन्तनसूत्र जिस प्रकार मुझे आकर्षक व प्रेरणादायी लगे हैं, मैं आशा करता हूँ कि इस प्रकार पाठक वर्ग को भी लगेगा

इतनी सुन्दर और चिन्तनपूर्ण विचार सामग्री प्रस्तुत करने के लिए मैं मुनि जी की विद्वत्ता का अभिनन्दन करता हूँ.

—बनारसीदास चतुर्वेदी
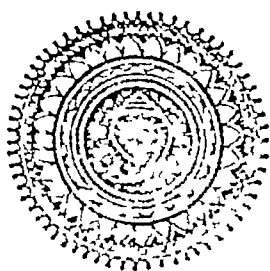
चिन्तन की चाँदनी

आलोक-क्रम

चिन्तन की चाँदनी

प

र

म

त

त्व

जीवन और जगत् में जिसकी श्रेष्ठता असंदिग्ध है, जो साधकों के लिए परम साध्य है, ऋषियों के लिए परम ज्ञेय है—वही इस सम्पूर्ण मानव सृष्टि का परम-तत्त्व है—अध्यात्म।

आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, भगवान और धर्म—सब इसी परमतत्त्व की अभिव्यक्तियाँ हैं।

परम तत्त्व

●

आत्मा और परमात्मा

आत्मा और परमात्मा के बीच वह कौन-सी दीवार है, जो परमात्मा के दर्शन नही होने देती—एक जिज्ञासु ने पूछा.

मैंने कहा—इस दीवार का नाम है मोह ! मोह की दीवार हट गई, कि परमात्मा के दर्शन कीजिए

अध्यात्म और विज्ञान

बाह्य-प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का मार्ग विज्ञान ने प्रशस्त किया है, उससे भौतिक समृद्धि का द्वार खुला है

आत्म-प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का मार्ग अध्यात्म ने दिख-लाया है, उससे अनन्त आत्मिक समृद्धि की उपलब्धि की जा सकती है.

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से मानव जीवन सुखी, समृद्ध और शान्तिमय बन सकता है.

खजाना

भौतिक विज्ञान कहता है कि समुद्र के गर्भ मे इतना सोना और

खजाना छिपा है कि उसे निकाला जाए तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति करोडपति बन सकता है

अध्यात्म विज्ञान कहता है कि—आत्मा के भीतर शक्तियो का इतना अक्षय खजाना छिपा है कि उसे प्राप्त किया जाए तो ससार मे कोई भी प्राणी दीन-हीन नही रहे.

कठिनता यही है— कि खजाना प्राप्त नहीं हो रहा है.

स्वभाव का संघर्ष

जीव तत्त्व का स्वभाव है—ऊर्ध्वगमन ?

और जड़तत्त्व का स्वभाव है—अधोगमन.

जीव निरन्तर अपने स्वभाव के अनुसार ऊर्ध्वगमन करने का प्रयत्न करता रहता है, किन्तु जड तत्व उस पर अपना प्रभाव जमाए बैठा है और उसे नीचे से नीचे धकेल रहा है.

अनादि काल से जड-चेतन के स्वभाव का यही सघर्ष विश्व मे चलता रहा है

देह का कोयला

हीरा कोयले मे छिपा रहता है। पर, कोयला काला होता है, हीरा अत्यन्त उज्ज्वल चमकदार !

इस देह के कोयले मे आत्मा का हीरा छिपा है देह नश्वर है और विकारी ! किन्तु उसमे रहने वाली आत्मा अजर-अमर और परम विशुद्ध !

परतें तोड़नी होगी

कुँआ खोदना प्रारम्भ करते ही किसी को पानी मिलजाता है ?

पहले कंकर, मिट्टी पत्थर की परतें तोड़नी होती है, श्रम करते-करते आखिर मे निर्मल मधुर जल का स्रोत मिलता है

आत्मा का निर्मल जल-स्रोत प्राप्त करने के लिए भी विषय-विकारों की परतें तोडनी होगी, तप-साधना करनी होगी.

हल्का-भारी

हल्की वस्तु पानी की सतह पर तैरती रहती है, और भारी उसकी तह में डूब जाती है

कर्मों से हल्का आत्मा संसार रूपी समुद्र के ऊपर-ऊपर तैरता रहता है, और भारी आत्मा उसमे डूबकर गोते खाता रहता है

आत्मा को हल्का बनाओ। भगवान महावीर का उद्घोष है—

"कसेहि अप्पाण, जरेहि अप्पाण"—आत्मा को कृश करो, जीर्ण करो, वह हल्का होकर ससार समुद्र पर तैरता रहेगा।

अपनी पहचान

जिसने स्वय को पहचान लिया, उसने भगवान को भी पहचान लिया. आत्म-ज्ञान ही भगवद् ज्ञान है भगवान महावीर ने इसी सत्य को यो व्यक्त किया है—

"जे एग जाणई, से सव्व जाणई"

जो एक को जान लेता है, वह सब को जान लेता है।
उपनिषदो ने आत्म-ज्ञान को सर्वज्ञता का रूप देत हुए कहा है—

"यस्मिन् विज्ञाते सर्वमिद विज्ञात भवति"

जिसको जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है

मेरे आत्मन्! तुम सर्व प्रथम अपने को पहचानो। अपनी अनन्त शक्तियों का भान करो।

एक ही चैतन्य

जिस प्रकार तकिये के खोल—गिलाफ रंग-बिरंगे होते हैं, किन्तु भीतर में रुई सब मे एक समान सफेद ही रहती है

खज़ाना छिपा है कि उसे निकाला जाए तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति करोड़पति बन सकता है

आध्यात्म विज्ञान कहता है कि—आत्मा के भीतर शक्तियों का इतना अक्षय खजाना छिपा है कि उसे प्राप्त किया जाए तो संसार में कोई भी प्राणी दीन-हीन नहीं रहे.

कठिनता यही है– कि खजाना प्राप्त नहीं हो रहा है.

स्वभाव का संघर्ष

जीव तत्त्व का स्वभाव है—ऊर्ध्वगमन ?

और जड़तत्त्व का स्वभाव है—अधोगमन.

जीव निरन्तर अपने स्वभाव के अनुसार ऊर्ध्वगमन करने का प्रयत्न करता रहता है, किन्तु जड़ तत्व उस पर अपना प्रभाव जमाए बैठा है और उसे नीचे से नीचे धकेल रहा है

अनादि काल से जड-चेतन के स्वभाव का यही संघर्ष विश्व में चलता रहा है

देह का कोयला

हीरा कोयले में छिपा रहता है। पर, कोयला काला होता है, हीरा अत्यन्त उज्ज्वल चमकदार !

इस देह के कोयले मे आत्मा का हीरा छिपा है. देह नश्वर है और विकारी ! किन्तु उसमें रहने वाली आत्मा अजर-अमर और परम विशुद्ध !

परतें तोड़नी होंगी

कुँआ खोदना प्रारम्भ करते ही किसी को पानी मिलजाता है ?

पहले कंकर, मिट्टी पत्थर की परतें तोड़नी होती है, तब करते-करते आखिर में निर्मल मधुर जल का स्रोत मिलता है

आत्मा का निर्मल जल-स्रोत प्राप्त करने के लिए भी विषय-विकारो की परतें तोडनी होगी, तप-साधना करनी होगी.

हल्का-भारी

हल्की वस्तु पानी की सतह पर तैरती रहती है, और भारी उसकी तह मे डूब जाती है

कर्मों से हल्का आत्मा ससार रूपी समुद्र के ऊपर-ऊपर तैरता रहता है, और भारी आत्मा उसमे डूबकर गोते खाता रहता है.

आत्मा को हल्का बनाओ। भगवान महावीर का उद्घोष है—

"कसेहि अप्पाण, जरेहि अप्पाण"—आत्मा को कृश करो, जीर्ण करो, वह हल्का होकर ससार समुद्र पर तैरता रहेगा।

अपनी पहचान

जिसने स्वय को पहचान लिया, उसने भगवान को भी पहचान लिया. आत्म-ज्ञान ही भगवद् ज्ञान है भगवान महावीर ने इसी सत्य को यो व्यक्त किया है—

"जे एग जाणई, से सव्व जाणई"

जो एक को जान लेता है, वह सब को जान लेता है।
उपनिषदो ने आत्म-ज्ञान को सर्वज्ञता का रूप देते हुए कहा है—

"यस्मिन् विज्ञाते सर्वमिद विज्ञात भवति"

जिसको जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है

मेरे आत्मन्! तुम सर्व प्रथम अपने को पहचानो! अपनी अनन्त शक्तियो का भान करो!

एक ही चैतन्य

जिस प्रकार तकिये के खोल—गिलाफ रग-बिरगे होते है, किन्तु भीतर में रुई सब मे एक समान सफेद ही रहती है.

जिस प्रकार गाय की चमडी काली, गोरी, लाल आदि विभिन्न रगो की होती है, किन्तु दूध सबका एक जैसा ही सफेद होता है, इसी प्रकार सब प्राणियो के बाहरी रग-रूप आकार भिन्न होते हुए भी आत्मा—चैतन्य सब में एक जैसा ही है उसमे कोई अन्तर नही. इसी बात को भगवान् महावीर ने यो कहा है —

एगे आया—आत्मा एक है, सब प्राणियो मे एक समान तथा एक स्वरूप वाली है

चार पुरुषार्थ

भारतीय दर्शन ने सामाजिक जीवन की परिपूर्णता के लिए चार पुरुषार्थ माने हैं– काम, अर्थ, मोक्ष और धर्म

काम शरीर प्रधान प्रवृत्ति है, उसकी पूर्ति का साधन है—अर्थ

मोक्ष आत्मा की सहज वृत्ति है, उसकी परिपूर्ति का साधन है—धर्म

ससार काम भाव से प्रेरित है, आत्म-साधक मोक्ष-भावना से.

मृण्मय-चिन्मय

मानव-जीवन मृण्मय और चिन्मय का विचित्र संगम है

यह माटी का दीपक है, जिसकी मृण्मय देह मे चिन्मय ज्योति प्रज्ज्वलित हो रही है.

जो देह की सुन्दरता पर लुभाता है, वह मृण्मय (मिट्टी युक्त) से प्यार करता है, जो उसके ज्ञान और साधना पर दृष्टि टिकाता है, वह चिन्मय के दर्शन करता है.

आध्यात्मिकता

वृक्ष मूल के आधार पर फलता फूलता है

महल नींव के आधार पर खड़ा रहता है, उसी प्रकार जीवन आध्यात्मिकता के आधार पर फलता है, स्थिर रहता है.

आत्मा-परमात्मा

आत्मा और परमात्मा मे क्या भेद है ?

देह-बद्ध आत्मा जीवात्मा है, देह के विकार व देहाभिमान से मुक्त जीवात्मा, परमात्मा है.

शक्ति और शान्ति

शक्ति की साधना द्वैत की साधना है, शान्ति की साधना अद्वैत की साधना है

शक्ति-प्रयोग के लिए कोई दूसरा चाहिए शान्ति के लिए एकत्व की अनुभूति ही पर्याप्त है।

देवता कौन ?

'दिव्यतीति देव.'—संस्कृत की इस व्युत्पत्ति के अनुसार देवता वह है, जो सदा क्रीडा करता है— "आत्म क्रीड. आत्म रति:"

अपने स्वरूप मे जो सदा क्रीडा करता है वह देव ही नही, किन्तु देवाधिदेव भी हो जाता है—यह जैन संस्कृति का दिव्य घोष है

महाविदेह

महाविदेह—जैन परिभाषा का वह क्षेत्र है, जहाँ पर जन्म लेने वाला आत्मा साधना के द्वारा उसी भव मे परम-विदेह (देहातीत-मोक्ष) अवस्था को प्राप्त कर सकता है.

जो इस देह मे रहकर भी विदेह (देहातीत भाव मे) रहता है, क्या उसके लिए कोई भी क्षेत्र महाविदेह नही बन सकता ?

महाविदेह को सिर्फ क्षेत्र रूप मे ही नही, भाव रूप मे भी देखने की आवश्यकता है

हरि

दु:ख, दैन्य, दौर्मनस्य आदि विपत्तियो का हरण करके जो जीवन को सुखमय बनाता है, वह भारतीय संस्कृति का हरि है

शिवशंकर

जो जीवन और जगत् की विपदाओ के जहर को स्वय पीकर दूसरो को सुख का अमृत बाँटता हुआ सबका 'शं' अर्थात् सुख करने वाला है, वही इस विश्व का शिव शकर है

विष्णु

विष्णु का अर्थ है व्यापक.

जो व्यापक होता है, वही भगवान होता है

व्यापक और विराट् भगवान की उपासना करने वाले यदि क्षुद्र और संकीर्ण भावनाओ मे जकड़े रहे, तो, व्यापक की उपासना कैसे कर सकेंगे ?

विराट् की आराधना करने के लिए विराट् बनना होगा

सोना और आत्मा

कूडे-कंकड के नीचे दब जाने पर भी क्या कभी सोना कूडा बना है ? हजारो हजार साल तक मिट्टी मे मिले रहने पर भी क्या कभी सोना मिट्टी बन सकता है ?

फिर क्यो नही विश्वास करते कि विकारो के कूडे ककड से दबे रहने पर भी तुम्हारा आत्म-स्वर्ण कभी विकारी नही बन सकता.

अनादि काल से कर्मों की मिट्टी मे मिले रहने पर भी तुम्हारा आत्मा कभी मृण्मय, जड नही हो सकता

तुम चैतन्य हो, ज्ञानमय हो और सदा ज्ञानमय ही रहोगे

भगवान-बन्धु

भगवान और भक्त के बीच आज कितना वैषम्य है ?

भगवान के अग पर हीरों से जडी सोने की अंगी चढ़ाई जा रही है, और भक्त फटेहाल है !

भगवान के सामने मधुर मोहनभोग चढाए जा रहे हैं, और भक्त को रोटी का रूखा-सूखा टुकड़ा भी नसीव नही !

भगवान को रहने के लिए वडे-वड़े सगमर्मर के मन्दिर वनाए जा रहे है, किन्तु भक्त को सिर छिपाने के लिए किसी दीवार का कोना भी नही !

भगवान मालदार है, भक्त दरिद्र ! दीन ! क्या फिर भी भगवान दीन-वन्धु ही कहलायेगा, या धनवान-वन्धु ?

धर्म

चोराहे की प्रकाश-वत्ती की तरह धर्म भी सव के लिए प्रकाशदायी है. चोराहे की वत्ती पर किमी का अधिकार नही, किन्तु उपयोग हर कोई कर सकता है. यही वात धर्म के लिए भी है

धर्मरहित जीवन

पानी रहित सरोवर, हरियाली रहित पर्वत और वृक्ष रहित उपवन. वैसा ही है धर्म रहित जीवन.

शव और शिव

हमारा धर्म—शव को नही, शिव को महत्व देता है. चित्र को नहीं, चरित्र को पूजता है.

जो धर्म निष्कर्मता का उपदेश तो करता है, पर निष्कामता नही सिखाता, जो धर्म निराशा का सदेश तो देता है, पर आशा का उन्मेष नही जगाता, जो धर्म निवृत्ति की वात तो करता है, पर प्रवृत्ति की कुशलता नहीं सिखाता, समझ लो वह धर्म आज ससार मे जिन्दा नही रह सकता

चरित्र

जैन धर्म की भाषा मे कुशल प्रवृत्ति ही चरित्र है अर्थात् अशुभ से निवृत्त होकर शुभ प्रवृत्ति मे कुशल रहना ही सम्यक् चारित्र है.

धर्म, जीवन से भिन्न नहीं

दीपक बोलता नहीं, जलता है. धर्म का व्याख्यान मत करो, उसे जीवन मे उतार कर प्रकाश फैलाओ.

जिस प्रकार दीपक लौ से भिन्न नही है, उसी प्रकार धर्म जीवन की लौ से भिन्न नही है.

धर्म की परिभाषा

आचार्य कुन्दकुन्द से पूछा गया—धर्म क्या है ? बड़े सहज ढंग से उन्होंने बताया—'वत्थु सहावो धम्मो'—वस्तु का अपना स्वभाव, निज गुण—धर्म है,

अग्नि का स्वभाव तेज है, अग्नि किसी भी स्थान मे जलाएँ, किसी समय मे जलाएँ, उसमे से तेज प्रस्फुरित होगा ही. स्थान या काल उसके स्वभाव को बदल नही सकते, वह चाहे ब्राह्मण के घर मे जले चाहे शूद्र के घर मे, चाहे विवाह मंडप मे जले चाहे श्मशान में, चाहे दिन में जले या रात मे—उसका स्वभाव कभी भी क्षीण या नष्ट नही हो सकता.

अभिप्राय यह हुआ कि जो सदा, सर्वत्र सहज भाव से प्रभावशील रहे —वह धर्म है वह धर्म क्या, जो जीवन के कण-कण मे न रम सके? वह धर्म क्या, जो परिवार, समाज और राष्ट्र को जीने की कला नही सिखा सके

जैन-धर्म ने बताया है कि धर्म वह है— जो जीवन के हर क्षेत्र को पवित्र कर दे. धर्म वह सुगंधि है जिसको जहाँ भी रखो, महक देगा. जीवन की हर सांस और धड़कन मे गुंजरित होगा.

धर्म क्या है ?

मृत्यु रूपी विष का प्रतिविष । अमृत !

और दर्शन ?

मृत्यु के सघन अंधकार मे से दूर क्षितिज के उस पार देखने वाली दिव्य दृष्टि !

खोज

प्रत्येक रूक्ष और नीरस वस्तु का एक सरसस्निग्ध पक्ष भी होता है. इस सरसता की सरस अभिव्यजना करना ही कविता है
प्रत्येक भयावने अन्धकार के भीतर प्रकाश की एक दिव्य ज्योति छिपी रहती है, इस दिव्य ज्योति का प्रकट करना ही अध्यात्म की अन्तर् अनुभूति है

प्रत्येक अतीत मे इतिहास की एक अतल गहराई छिपी रहती है, उस गहराई को छूकर उघाड देना ही मानवीय आत्मा का अनुसन्धान है.

धर्म का आधार

पात्र बड़ा या पदार्थ ? क्या आप नही देखते कि अमृत तुल्य दूध भी खराब पात्र मे पडकर बिगड जाता है ?

पहले अपना हृदय पात्र शुद्ध करो, सत्पात्र बनो, तभी ज्ञान का शुद्ध दूध सुरक्षित रूप से टिक सकेगा.

इसलिए भगवान महावीर ने कहा है **'धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई'** धर्म शुद्ध-पवित्र हृदय में ही ठहर सकता है

धर्म और विज्ञान

मनुष्य के साथ मनुष्य का क्या कर्तव्य है—इसकी शिक्षा विज्ञान नहीं, धर्म देता है.

विज्ञान जीवन को सुविधा दे सकता है, कला नहीं सिखाता जीवन की कला सीखने के लिए धर्म का अध्ययन आवश्यक है.

धर्मोपासक ! तुम पवित्र वस्त्र पहन कर देव दर्शन और मन्दिर की परिक्रमा करके ही पवित्रता का पुण्यार्जन करना चाहते हो ? पर दो क्षण की बाह्य पवित्रता से जीवन में पवित्रता का स्पर्श कैसे होगा ? कभी सोचा है ?

चौका लगा।र पूजा के पीढे पर बैठने के समय तुम बहुत ऊँचाई को छूना चाहते हो ? परन्तु एक क्षण की ऊँचाई का ध्यान करने से जीवन ऊँचा कैसे बनेगा ?

धर्म, मात्र घड़ी-दो-घड़ी को साधना नही है, रविवार या मगलवार का व्रत ही धर्म का थर्मामीटर नही है. अष्टमी-चतुदर्शी का प्रतिक्रमण ही साधना का मानदड नही है. तुम जो कुछ भी बोलते हो, सोचते हो, वह सब धर्म की अभिव्यक्ति का अवसर है, वह अवसर ही तुम्हारी धार्मिकता की सच्चाई को प्रकट करता है.

मानव सुधार के आन्दोलन और उपदेश अखबारो मे चलाने से क्या होना है ? उन्हे तो आत्मा के भीतर चलने दो ।

जो पुण्य कोलाहल के साथ किया जाता है, जीवन उत्थान मे उसका सबसे कम महत्व है. धर्म पटह पीट कर मत करो, नाटक को भाति धर्म का आचरण सिर्फ छलना है ।

धर्म की साधना जीवन के कण-कण मे व्याप्त होने दो, हर क्षेत्र,—दुकान—घर, आफिस—तुम्हारा मदिर हो, उपाश्रय हो, स्थानक हो ! और तुम्हारे आदर्शों का सच्चा प्रतीक हो !

धर्म शून्य सप्रदाय

जिस तलाव का पानी सूख गया है, उसमें दरारें पड़ जाती है, जिस संप्रदाय मे धर्म का जल सूख गया है, उसमे भेद पड़ जाते हैं.

जल से परिपूरित सरोवर मे और धर्म से युक्त संप्रदाय में कभी दरारें—भेद-विग्रह नही पड सकते.

चिन्तन की चाँदनी

स

त्यं

शि

व

म्

जो महासागर से भी गम्भीर है, सूर्य मण्डल से भी तेजस्वी है, चन्द्रमण्डल से भी अधिक शीतल है, वह अनन्त चमत्कारों का अक्षयस्रोत सत्य—इस सृष्टि का परम सत्य है, वही सत्य शिवम् है.

पवित्र एवं निष्काम अन्तस्तल से प्रस्फुरित सत्य—ही शिव है वही विश्व का वाग्देवता है साधक और सत्पुरुष—महापुरुष—सब की अन्तिम उपलब्धि है—सत्य।

सत्यं शिवम्

●

सत्य

सत्य मे शक्ति है, तेज है असत्य मे इन दोनो का अभाव है. असत्य स्वय मे चल नही सकता, वह पगु है, इसलिए वह सदा सत्य का सहारा ताकता है

असत्य स्वय मे कुरूप है इस लिए वह अपने चेहरे पर सदा सत्य का सुन्दर मुखौटा डालने का प्रयत्न करता है.

जब किसी को सत्य सिद्ध करने के लिए असत्य का सहारा लेते देखता हू तो लगता है—वह भिखारी से भी दौलत मांगने का प्रयत्न करता है. अन्धे से सूर्य की रोशनी के बारे मे पूछ रहा है.

सत्य का अर्थ

सत्य का अर्थ है—जो सदा सद्-विद्यमान रहे.

जिसे प्रकट करने मे भय व सकोच होता है, और जिसे छिपाने की आवश्यकता होती है समझ लो वह सत्य नही है.

सत्य और तथ्य

सत्य है—वस्तु स्थिति का सही आकलन, वर्णन, और तथ्य है—जीवन निर्माणकारी घटनाओं का सकलन।

विज्ञान सत्य है, धर्म तथ्य है.

फूल भी सत्य है, कांटा भी सत्य है.

किन्तु सौरभ और परिमल की मधुरिमा की अनुभूति तथ्य है

साधक केवल सत्य का उपासक नही, वह सत्य के साथ तथ्य की भी उपासना करता है.

सत्य : असत्य

अग्नि शिखा की तरह सत्य सदा ऊर्ध्वगामी होगा.

जलधारा की तरह असत्य सदा निम्नगामी होगा

असत्य का नकली सिक्का

असत्य का नकली सिक्का बाजार मे तब तक चल सकता है, जब तक कि सत्य का सच्चा सिक्का जनता के हाथो में नही आजाता.

मुंहफट : मधुरभाषी

मुंह पर कडी, अप्रिय किन्तु. सच्ची बात कहनेवाला अनघड या मुंहफट भले ही कहा जाय, परन्तु वह उस व्यक्ति से कहीं अधिक सत्य के समीप है, जो मधुर शब्दो मे सत्य को छिपाकर दूसरों को प्रसन्न करना चाहता है

सत्य, संयम

सत्य कभी-कभी बहुत कटु हो जाता है.

तप कभी-कभी बहुत उग्र हो जाता है.

सत्य की कटुता और तप की उग्रता (तेजस्विता) को मधुरता और शक्ति में परिणत करने के लिए ही संयम का उपदेश किया गया है. सत्य और तप के साथ संयम की भी साधना आवश्यक है.

सत्य का निवास

सत्य का उद्गम पवित्र व शुद्ध अन्त करण मे होता है धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई—के अनुसार पवित्र हृदय ही सत्य का निवास स्थान है स्वार्थ व सुख का त्याग करने से अन्त करण विशुद्ध बनता है

सत्य : तीखा कटु

प्रेम और श्रद्धा के अतिरेक से कभी-कभी सत्य मे तीखापन आ सकता है, किंतु कटुता आना द्वेष एवं अहकार का प्रतीक है

सत्य मे माधुर्य

सत्य को मधुर बनाना अलग बात है और छिपाना, या प्रकट करते हुए डरना अलग बात।

पहला अहिंसा और प्रेम का आदर्श है, दूसरा भय व हीनता का प्रदर्शन।

सत्य का प्रचार

सत्य का प्रसार करने के लिए भाषण की आवश्यकता नही, आचरण की आवश्यकता है

सत्याचरण ही सत्य का सबसे सबल एव श्रेष्ठ प्रचारक है।

सत्य—अहिंसा

सत्य एक वस्तुस्थिति है, जो अनुभूति मे व्यक्त होती है अहिंसा एक वृत्ति है, जो जीवन मे साकार होती है

सत्य का अनुभव करना है.

अहिंसा का विकास करना है

सत्य का पूरक पक्ष—अहिंसा

सत्य—नग्न होता है, इसलिए वह कटु भी हो सकता है. सत्य की कटुता का शमन अहिंसा से हो सकता है.

अहिंसा हृदय की मृदुलता है, मृदुलता मे कही दुर्बलता एव विकार न आ जाए इसकी पहरेदारी सत्य को करनी होती है
सत्य, अहिंसा एक दूसरे के पूरक है. एक के बिना दूसरे की पूर्णता नही हो सकती.

हिंसा : अहिंसा

अहिंसा और हिंसा मे एक महान् अन्तर है—
अहिंसा मरना सिखाती है.
हिंसा मारना सिखाती है.
अहिंसा बचाना सिखाती है
हिंसा बचना सिखाती है
मरना वीरता है मारना क्रूरता है.
बचाना दयालुता है बचना कायरता है.

गरुड बनिए !

जो 'होचुका' उसकी फिकर मत करिए, जो होता है उसका विचार करिए
अतीत की चिन्ता में पडा रहने वाला कीडे मकोडे की तरह उसी खाइ मे रेंगता है, जिसमे उसके बाप-दादे रेगते रहे. वह उससे आगे नही बढ पाता.
अनन्त भविष्य का दर्शन करने वाला गरुड की तरह आकाश मे उन्मुक्त उड़ान भर कर अनन्त आकाश पथ को नापता रहता है.
जीवन की खाई मे रेंगने वाले कीडे मकोडे न बनिए, अनन्त उज्ज्वल भविष्य के गगन मे उडने वाले गरुड़ बनिए

चतुर्भुज ब्रह्मा

विवेक के साथ धन, धन के साथ उदारता और उदारता के साथ नम्रता सगार का चतुर्भुज ब्रह्मा है

मधुरता

अंगूर को मधुर बनाने के लिए रक्त दिया जाता है.

तो क्या प्रेम के फल को मधुर बनाने के लिए त्याग-बलिदान का रक्त नही चाहिए ?

स्वाध्याय

स्वाध्याय—ज्ञान के अक्षयकोष की कुञ्जी और विचारशीलता के मन्दिर की नीव है

जैसे अन्न जल के बिना शरीर की वृद्धि नही होती, वैसे ही स्वाध्याय के बिना बुद्धि की वृद्धि नही होती.

गुणो का आदर

मैंने देखा—इस ससार मे सर्वत्र गुणो का आदर होता है.

तोते को पालकर मेवा खिलाया जाता है किन्तु कौवे को कोई घर की मुडेर पर भी नही बैठने देता

पानीदार मोती

जौहरी उसी मोती की कीमत करता है, जो पानीदार है

सन्त उसी भक्त को महत्व देते हैं, जिसमे सदाचार का पानी है

वीरता की परिभाषा

वीरता—किसी को मारने मे नही, किन्तु किसी को बचाने के लिए अपना बलिदान करने मे है

वीरता—किसी की प्रतिष्ठा लूटने में नही, किंतु अप्रतिष्ठित को प्रतिष्ठित करके उसका संरक्षण करने मे है

बिना म्यान की तलवार

हिता हित के सम्यग्विवेक से रहित व्यक्ति की शक्ति, बिना म्यान

की तलवार है. नंगी तलवार दूसरे के लिए ही नही, स्वय के लिए भी घातक हो सकती है

जगाने वाला

मैंने देखा है—संसार मे हर कंकर भी शकर बन सकता है, यदि कोई पुजाने वाला हो तो...?

हर राह मजिल वन सकती है, यदि कोई वताने वाला हो तो. ?

हर पुस्तक शास्त्र वन सकती है, यदि कोई समझाने वाला हो तो..?

हर अक्षर मत्र वन सकता है, यदि कोई मिलाने वाला हो तो ?

हर जडी औषधि वन सकती है यदि कोई प्रयोग मे लाने वाला हो तो ?

हर पुरुष परमेश्वर वन सकता है, यदि कोई जगाने वाला हो तो...?

सम्पदा के अर्थ

तुम्हे सम्पदा चाहिए ?

कौन सी ?

सम्पदा का अर्थ क्या है ?

'सम्यक् तया सम्पद्यते या सा सम्पदा' "जो सम्यक् नीति से न्यायपूर्वक प्राप्त होती हो, वह सम्पदा"

तुम आत्म-निरीक्षण करो क्या तुमने जो नोटो से तिजोरी को भर रखी है वह सही माने मे सम्पदा है ? यह वैभव का अम्वार लगा रखा है, क्या वह न्याय और नीति से प्राप्त किया है ?

जो अन्याय, अनीति और दुर्व्यवहार से प्राप्त की जाती है, वह सम्पदा नही, विपदा है—"विषम मार्गेणापद्यते या सा विपदा"

विपदा को तुम सम्पदा समझ वैठे हो, यही भ्रान्ति है.

जहर को तुम अमृत मान वैठे हो, कितना वडा अज्ञान है यह !

सम्पदा – न्याय से प्राप्त वस्तु है

विपदा—अन्याय से प्राप्त !

विपदा से यदि घबराते हो, तो उसे सत्कर्मो मे व्यय कर डालो, वह सम्पदा बन जायेगी ।

आन्तरिक सम्पदा

जिसे जीवन की आन्तरिक सम्पदा प्राप्त हो गई, वह बाह्य सम्पत्ति और वैभव को 'विपदा' मानता है.

बाह्य-सम्पदा बादलो की रगरेलियो की तरह क्षणिक है, आन्तरिक सम्पदा ध्रुव की तरह अचल ! सुस्थिर !

उभयमुखी साधना

तप उभयमुखी साधना है.

बाहर मे चलने वाला अनशन आदि तप जब समभाव की अन्तरग साधना के साथ जुड़ता है, तब वह आभ्यन्तर तप हो जाता है

बाह्य और आभ्यन्तर का समन्वय करके चलने वाली साधना ही जैनधर्म की उभयमुखी साधना है. वही तपकर्म निर्जरा है, और मक्ति का अनन्यतम साधन.

सुखी कौन ?

सुखी कौन ?

जो किसी दूसरे के सहारे को आकाक्षा करता है, वह परमुखापेक्षी है और वह ससार का सबसे बडा दीन पुरुष है.

अरस्तु ने सुखी की परिभाषा करते हुए लिखा है—'जो आत्मनिर्भर है, वह सबसे अधिक सुखी है"

सफलता के लिए

सफलता चाहिए ?

तो, कभी भी हताश-निराश न होइए. अपने कर्म मे, कर्तव्य मे जुटे रहिए, चमगादड़ की तरह अपने कार्य मे चिपट जाइए.

यदि चारो ओर शत्रुओ का जाल फैला हुआ है, तो सावधानी से ऐसे जमे रहिए, जैसे दांतो के बीच जीभ

यदि आपको अपने पथ से विचलित करने के लिए भय व प्रलोभन के आधी-तूफान उठे आ रहे हो, तो जैसे रावण की सभा मे अगद ने अपने पैर गड़ाए वैसे जीवन पथ पर पैर गडा कर डट जाइए !

सफलता मिलेगी, अवश्य मिलेगी !!

श्रेष्ठ नर्तकी

सब से श्रेष्ठ नर्तकी वह है, जो अभिनय करते समय इस भाव से ललकती रहती है कि वह किसी को प्रसन्न करने के लिए किसी के समक्ष नृत्य नही कर रही है, किन्तु आत्म देवता को प्रसन्न करने के लिए नाच रही है

और सब से बडा गायक वह है, जो किसी को रिझाने के लिए किसी के समक्ष स्वरालाप नही करता, किन्तु आत्माभिव्यक्ति के लिए ही आत्मदेव के समक्ष तन्मय होकर गाता है

चाह क्या है ?

शास्त्रो में मन को कामधेनु और कल्पवृक्ष कहा है. इससे जो चाहो सो प्राप्त कर सकते हो !

पर, पहले यह बात बताओ कि तुम्हारी 'चाह' क्या है ?

तुम दूसरो का सुख छीन कर सुखी बनना चाहते हो, या अपना सुख बाट कर !

सुख की पहली तृष्णा नरक की ओर ले जायेगी. और दूसरी कामना स्वर्ग का द्वार उघाड देगी

उपासना

उपासना शब्द का अर्थ है—आत्मा के समीप निवास करना.

जिस उपासना मे आत्मा की समीपता नहीं है, वह उपासना नहीं केवल उपहास है.

उपासना और वासना

उपासना और वासना मे उतना ही विरोध है, जितना अमृत और विष मे है.

मन की डाली पर पलने वाला एक सुन्दर सुरभित फूल है, एक तीक्ष्ण कांटा.

शक्ति का सदुपयोग

भय—व क्षोभक विचारो से शक्ति क्षीण होती है

शान्त व स्थिर विचारो से शक्ति की वृद्धि होती है

सेवा व धार्मिक विचारो से शक्ति का सदुपयोग होता है

तुम्हे शक्ति-सचय करके उसका सदुपयोग करना है, तो भय से दूर रहो, और शान्तिपूर्वक सेवा मे जुट जाओ !

सत्य के रूप

सत्य जीवन का अखण्ड तत्त्व है उसके विभिन्न रूप जीवन को आवृत किए हुए है

प्रेम—यह सत्य का स्नेहमय-रूप है

न्याय—यह सत्य की समत्व भावना है.

सम्यक्त्व—सत्य की शोधक वृत्ति है.

शान्ति—यह सत्य की अन्तिम उपलब्धि है

स्वार्थ, परमार्थ

स्वदेह भाव मे केन्द्रित अह स्वार्थ है 'स्वदेह' से स्व-कुटम्ब, स्व-समाज तथा स्व-देश के लिए विस्तृत स्वार्थ—परार्थ बन जाता है परार्थ का विश्वमंगल रूप ही परमार्थ है

योग, प्रयोग

आत्मा से परमात्मा के साथ चिन्तन-सूत्र जोडना योग है

अणु और प्रकृति की परिक्रमा करना प्रयोग है.

प्रयोग को योग से अनुबन्धित करके चलिए, वह श्रेयस्कर होगा

योग-प्रयोग अलग-अलग रहेगे तो प्रयोग विनाशकारी सिद्ध होगा और योग केवल भार !

'जैन' कौन ?

राग-द्वेष को विजय करने वाले—'जिन' कहलाते हैं. 'जिन' का अनुगामी अर्थात् विजय पथ का अनुगामी जैन होता है.

'जैन' विकारो का विजेता, भय और अज्ञान का विजेता, राग-द्वेष का विजेता.

आत्म-विजय ही जिसका जीवन लक्ष्य हो—वह है जैन !

क्या 'जैन' की परिभाषा उसके वर्तमान चरित्र पर एक चुनौती नही है ? क्या वह अपने स्वरूप को पहचान पाया है ?

तेरा काव्य ?

कवि ! तेरा काव्यशास्त्र क्या है ?

पुस्तकों मे वर्णित, रससिद्धान्तो मे विवक्षित और छन्द-अनुशासन मे बधा-बंधाया लय-गीति का स्वर-गुंजन ही क्या तेरा काव्य है ?

नही ! तेरा काव्य तेरे अनन्त अन्तराल मे प्रच्छन्न है. तेरी अनुभूतियां मानवीय चेतना को स्पर्श करने वाली प्रेरणाएं और आस्था के अतल उत्स से उछलकर लहराने वाली भाव-लहरियां ही तेरे काव्य की अमर अभिव्यक्ति है.

वागदेवी

वाणी समुद्र से भी अधिक गंभीर है, आकाश से भी अधिक विराट् है. वाणी की महत्ता का निदर्शन करते हुए वैदिक ऋषि ने कहा है—

'वाग् वै समुद्रम्'

वाणी समुद्र की तरह अनन्त हैं. इसमे बहुमूल्य मणियो का अक्षय-कोष छिपा है. अनन्त वैभव भरा पड़ा है. जिसके पास वाणी का

वैभव प्राप्त करने की कला है, वह ससार का सबसे महान् ऐश्वर्यशाली है. जो वाणी से दरिद्र है, वह ससार का सबसे बडा दरिद्र है.

अमूर्त भावो को मूर्तरूप देने वाली वाणी– मानव के लिए प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ वरदान है यदि वाणी न होती तो मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नही होता

ऋग्वेद के सूक्त मे कहा है—

'अह राष्ट्री, सगमनी वसूना'

ऋग्० १०।१२५।३

मै वाग्देवी ससार की अधीश्वरी हू मै अपने उपासको को ऐश्वर्य एव समृद्धि देने वाली हू.

वाणी की महिमा अपार है.

उचित वाणी

समय पर और उचित शब्दावली मे कहा गया एक वाक्य भी सोने की अगूठी मे जड़े हुए नगीने की तरह सदा चमकता रहता है.

बोल कर बोया भी जाता है, खोया भो जाता है और कुछ सजोया भी जाता है.

जैसी वाणी, वैसा ही फलित !

पवित्र वाणी

पानी की भाति वाणी भी सदा स्वच्छ और पवित्र ही अच्छी लगती है.

वाणी ब्रह्म है

वाणी ज्ञान की अधिष्ठात्री है शाख्यायन आरण्यक मे वाणी को ही ब्रह्म कहा है—

'स या वाग् ब्रह्म'

— [illegible]

जो वाणी ब्रह्मस्वरूप है, उसको सदा पवित्र और स्वच्छ रखना चाहिए.

ब्रह्म स्वरूप वाणी के द्वारा कटु एव असभ्य शब्दो का प्रयोग करने वाला क्या उस ब्रह्म का अपमान—अवहेलना नही करता है ?

✓ वाणी अग्नि है

'वाचि मे ऽग्नि प्रतिष्ठितो —'

(शां. आ. ११।६)

मेरी वाणी मे अग्नि प्रतिष्ठित है—यह उद्घोष करने वाला भारतीय चिन्तन वाणी की अमोघ शक्ति से अपरिचित नही है

वाणी अग्नि है—उसकी एक चिनगारी लाखो मन कूडे-कचरे के ढेर को क्षणभर मे भस्मसात् कर सकती है यदि उसका गलत उपयोग किया गया तो वही वाणी सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर सकती है

आज की भाषा मे वाणी एक—अणुशक्ति (अणु ऊर्जा) है वह विनाश एव निर्माण दोनो कार्य कर सकती है आवश्यकता है मनुष्य उसके प्रयोग की कला सीखे और निर्माण के द्वार खोलता जाये.

मधुर वाणी

जिस चाय मे चीनी नही डाली गई हो, उस चाय मे और वनस्पति के काढे मे क्या अन्तर है ? वह कड़वी चाय एक घूँट पीते ही थू-थू करके थूकी जाती है.

जिस वाणी मे मधुरता नही होती, उस वाणी मे और बकवास में क्या अन्तर है ? वह कठोर वाणी सुनते ही श्रोता थू-थू कर घृणा प्रदर्शित करने लगते हैं

भगवान महावीर ने कहा है—वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमिय

—दशवै० ७।५६

बुद्धिमान हितकारी एव आनुलोमिक—प्रिय वाणी बोले.

यही बात अथर्ववेद के सूक्त मे व्यक्त की गई है—

अन्योअन्यम्मं वल्गु वदन्त

—३।३०।१२

'एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक मधुर सभाषण करना चाहिए'

मधुर वाणी से कही गई कडी से कडी बात भी श्रोता के गले उतर जाती है जैसे कि मीठे केप्सूल के भीतर भरी हुई कड़वी दवा

समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति सर्वप्रथम वाणी को मधुर, प्रिय एव हितकारी बनाने का प्रयत्न करे ।

गाली

गाली रिटर्न टिकट लेकर ही मुह के स्टेशन से रवाना होती है. ऋषियो की भाषा मे कहे तो—"शप्तारमेतु शपथ"

—अथर्व० २।७।५.

'शाप (गाली) शाप देने वाले के पास ही लौटकर आ जाता है'

अपना मुह देखिए

मनुष्य अपनी आंखो से ससार की सब वस्तुएं देख सकता है. किन्तु अपने चेहरे पर लगे दाग को नही देख सकता

दूसरो को देखना सरल है, स्वय को देखना कठिन है तथागत बुद्ध ने कहा है—

'सुदस्सं वज्जमञ्ञेस अत्तनोपन दुद्दसो'

—धम्मपद १८।१८.

दूसरो का दोप देखना सरल है, अपना दोप देख पाना बहुत कठिन.

जिस प्रकार अपना मुह देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार अपने दोप देखने के लिए—आत्मचिन्तन रूप दर्पण की आवश्यकता है. विवेक रूप नयन जब खुलेंगे और आत्म-चिन्तन का स्वच्छ दर्पण सम्मुख होगा तभी मनुष्य अपने अन्तर का दर्शन कर सकेगा.

संकल्प

सकल्प मनरूपी मोटर का ब्रेक है. ब्रेक की आवश्यकता हर समय नही, पर दुर्घटना के समय होती है

मन जव विकारो की दुर्घटना मे फँसता है, तव संकल्प का ब्रेक ठीक रहना चाहिये ताकि दुर्घटना से वचा जाये.

अमृत. अनुभव

अमृत की एक वूँद की अपेक्षा अनुभव की एक वूँद अधिक श्रेष्ठ है अमृत सिर्फ एक जीवन को वचाता है, अनुभव हजारो लाखो जीवन को सुखमय वनाता है

ब्रह्मचर्य की साधना

ब्रह्मचर्य की साधना के लिए सयम की साधना करनी होगी.

मन-संयम, दृष्टि-सयम,

वाणी-सयम, खाद्य-संयम,

इन सवके सयम का रूप ही ब्रह्मचर्य है

सन्त

अधेरी रात मे गगन मे तारे चमक रहे है, भवन मे दीपक चमक रहे हैं, उसी प्रकार अज्ञान तमसाच्छन्न संसार में अपनी निर्मल ज्ञान ज्योति के साथ सन्तपुरुप चमक रहे हैं

गर्जते नही, चमकते है

दीपक की तरह सन्त वोलते नही, चमकते है

वादलो में छिपी विजली की तरह सन्त गर्जते नही, चमकते हैं

सन्त की पहचान

स्वभाव से दीन, जाति से हीन, वृत्तियो से अलीन और आचरण से

मलिन व्यक्ति को सुधार कर जो उन्नीत (उन्नत) बना देता है, वह महान् कलाकार इस पृथिवी पर 'सन्त' कहलाता है

जो दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए स्वयं त्रास (कष्ट) उठा सकता है, भूखे की भूख मिटाने के लिए खुद त्याग कर सकता है, पर, कभी किसी दीन दुखी का उपहास नही कर सकता, उस महान आत्मा का नाम है— 'सन्त' !

जो सेवा करने के समय सबसे आगे की पंक्ति मे खड़ा रहता है, किन्तु सेवा का फल लेने के समय सबसे पीछे रहता है, वह कौन है ?

उसका नाम है—'सन्त' ! सन्त सेवा चाहता है पुरस्कार नही !

काम रूपी अश्व के मुँह पर जिसने ज्ञान की लगाम डालकर संयम के सुदृढ हाथो से पकड रखा है, उस कुशल अश्वारोही को 'सन्त' कहा जाता है

'सन्त' का जीवन 'वसन्त' के समान सदा प्रफुल्लित और महकता रहता है

× × ×

'सन्त' हमेशा टकोर (घड़ी का घण्टे का शब्द) करते है, किन्तु कभी भी टक टक (निरंतर होने वाला शब्द) नही करते

टकोर से मनुष्य चकोर बनता है, और टक-टक से चिडचिडा टकोर समय पर की जाती है और टक-टक निरन्तर ! टकोर की ध्वनि सब ध्यान से सुनते है, किन्तु टक-टक पर कोई कान भी नही देते

× × ×

आत्म-शरण

सीपी के आत्म-शरण से मोती और बांस के आत्म-शरण से वंशलोचन बनता है

मन के आत्म-शरण से साधुता का विकास होता है, और रवि के आत्म-शरण से नूतन कार्य का निर्माण होता है

[illegible]

साधक के दो पतिमान

साधक के दो रूप है —

कुछ साधक दीपक के समान होते हैं—जो कप्टो की हवा के हलके से झोके से ही गुल हो जाते हैं.

कुछ साधक अगारे के समान होते है—जो कष्ट व सकट की हवा का स्पर्श पाकर और अधिक तीव्रता के साथ चमकते हैं विपत्तियो की आधी मे उनका तेज और अधिक निखर उठता है

साधक

साधक के लिए कहा गया है— वह वज्र के समान कठोर हो, तो कुसुम के समान कोमल भी हो

सिद्धान्त एव आदर्श के प्रश्न पर उसका संकल्प वज्र के समान कठोर, दृढ एवं अविचल रहे वह साहस पूर्वक बलिदान होने को प्रस्तुत रहे

जहाँ व्यावहारिकता एव व्यक्तिगत जीवन का प्रसग उपस्थित हो, वहाँ पर उसका हृदय पुष्प के समान कोमल, मृदुल एव स्नेहिल बना रहे प्रेम एव सहानुभूति से मुस्काता रहे— यही साधक का जीवन दर्शन है.

विश्वास और विवेक

विश्वास आत्मा की ज्योति है, संशय आत्मा का अन्धकार है. विवेक हृदय का सौरभ है, अविवेक मन की गन्दगी है

श्रद्धा का जल

साधना के वृक्ष को श्रद्धा का जल सींचते रहो, सिद्धि के अभिनव पुष्प अवश्य खिलेंगे.

साधु का मन

वृक्ष का मूल जमीन मे रहता है और शाखाएँ, पत्ते, फूल, फल बाहर विस्तृत आकाश मे फैले रहते हैं.

साधु का व्यवहार जनता में (समाज में) फैला रहता है किन्तु उसका मन तो अन्दर में ज्ञान ध्यान की गहराई में आबद्ध रहता है

पक्षी हमेशा वृक्ष की ऊँचाई पर ही रहते है, किन्तु जब उन्हे दाना चुगना होता है तो नीचे जमीन पर उतरते है.

साधु अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति के लिये ही ससार की भूमिका से सम्बन्ध जोडते हैं किन्तु उनका मन तो सदैव ज्ञान और भक्ति की ऊँचाई पर ही रहता है

साधक का जीवन

मक्खन किससे निकला ?

छाछ (मट्ठा) से !

एक बार अपना रूप लेने के बाद फिर उसे छाछ मे कितना ही डालो, वह छाछ नही बनता

सच्चे साधक का जीवन ऐसा ही होता है वह ससारी जीवो मे से आता है, पर एक बार साधक बन जाने के बाद, फिर भले ही ससारी जीवो मे रहे, किन्तु पुन: ससारी नही बनता ।

महापुरुष का सान्निध्य

पानी का किनारा जैसे सरसब्ज रहता है, वैसे ही महापुरुष का सान्निध्य सदा चिन्तन, मनन से सरसब्ज रहता है.

सामर्थ्य किस काम का ?

मानव ! तू शक्तिसपन्न होकर भी यदि किसी दुर्बल, और रुग्ण की पीडा में हाथ नहीं बटा सका, तो तेरी शक्ति किस काम की ?

मानव ! तू समर्थ होकर भी यदि दीन-दुखी और असमर्थ के आंसू नही पोछ सका, तो तेरा सामर्थ्य किस काम का ?

साध्य एक

प्रकाश के लिए, कोई घी का दीपक जलाता है, कोई तेल का कोई मोमबत्ती जलाता है, तो कोई बिजली !

साधन भिन्न है, मगर साध्य सबका एक है—प्रकाश.

आत्मज्योति को प्राप्त करने के लिए कोई जप करता है, कोई ध्यान करता है, कोई स्वाध्याय ।

साधन भिन्न है, मगर साध्य सब का एक है—आत्मज्योति प्रज्वलित करना.

✓ आत्म-चिन्तन

प्रात उदय होने वाला सूर्य संध्या की गोद मे जाते-जाते जीवन का एक महत्वपूर्ण दिन चुराकर ले जाता है

रात्रि को निद्रा की गोद मे सोते-सोते आत्म-चिन्तन करो—"आज का दिन सफल हुआ या असफल ?"

तुमने कुछ ऐसा तो नही किया कि जिसकी चिन्ता मे आज भी परेशान रहे, और आने वाला कल भी परेशानी मे गुजरे. तथागत बुद्ध ने कहा है—

पाप करने वाला—पहले भी सोचता है, पीछे भी सोचता है पाप करते भी सोचता है —"पापकारी उभयत्य सोचति"

पुण्य करने वाला—पहले भी प्रसन्न रहता है, पीछे भी प्रसन्न रहता है, पुण्य करते भी प्रसन्न रहता है—"कतपुञ्ञो उभयत्य मोदति"

तुम सोचो—आज का दिन शोक करने का कारण तो नही बना ?

आज का दिन यदि सुकृत मे व्यतीत हुआ है, तो निश्चय ही तुम्हारे आनन्द का कारण होगा.

आंख खोल !

देख ! तेरी आत्मा के स्वर्णिमपथ पर ज्ञान-दर्शन-चा[illegible] क्ति-ओं के असंख्य-असख्य बहुमूल्य [illegible] ती-माणव [illegible]

आंख खोल ! देख ! और जी[illegible] भरले ! ते[illegible] ों का दारिद्रय मिट जायेगा

चि

धुआँ दमघोटू होता है, वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता किन्तु अगरबत्ती का संपर्क पाकर धुआं कितना मनभावना और सुहावना लगता है ?

व्यक्ति कितना ही बुरा और निम्न क्यो न हो, किन्तु सत्पुरुष के संपर्क मे आकर वह भी लोकप्रिय और श्रेष्ठ बन जाता है.

गन्दा जल

मैंने देखा—नाली के गन्दे जल का छींटा लग जाने पर बहुत से धार्मिक और स्वच्छता प्रेमी छि: छि: करते हुए नाक भौंह सिकोड़ते, स्नान करते और पुन: नए कपड़े पहनते हैं

मैंने देखा—वही गन्दा जल बहता बहता जब गगाजल मे मिल गया. तो अब वे ही धार्मिक, श्रद्धालु स्वच्छता प्रेमी उस जल को अञ्जलि मे भर कर सिर पर चढ़ाते हुए देवताओ को अर्घ्य देते है.

यह चमत्कार किसका है ?

संगति का !

गन्दाजल गगाजल बन सकता है, कंकर शंकर बन सकता है, पापी-धर्मात्मा बन सकता है—संगति श्रेष्ठ चाहिए. सत्संग होना चाहिए

महापुरुष बनने का तरीका

महापुरुष बनने का एक तरीका है कि जितना दूसरो को बदलना चाहते हो, उतना अपने को बदल लो

जो अपने को बदल लेता है, वह अर्थात् उसका आदर्श दूसरों को बदल देता है

कोई भी महापुरुष पहले वाणी से नहीं, चरित्र से बोलता है.

महान्

नदी का पानी जितना अधिक गहरा होगा उतना ही अधिक शान्त एवं स्थिर होगा.

मनुष्य जितना अधिक महान होगा, उतना ही अधिक गम्भीर एवं शान्त होगा.

महानता

दुष्ट को नष्ट करना वीरता हो सकती है, किन्तु महानता नहीं। महानता है दुष्ट को भी शिष्ट बनाने में. दुर्जन को सज्जन बनाने मे. महानता सहार में नही, उद्धार मे है

सत्पुरुप

सत्पुरुष का जीवन नारियल के समान है

नारियल वाहर में कठोर किन्तु भीतर मे स्नेहिल, मधुर और स्वच्छ होता है नारियल का यही रूप उसकी मागलिकता का प्रतीक है

सत्पुरुप जीवन के वाह्य क्षेत्र मे संघर्ष व कष्टो से जूझने के लिए कठोर बने रहते हैं, किन्तु उनका हृदय सदा स्नेह और माधुर्य से भरा रहता है सदा स्वच्छ व पवित्र विचारो से अनुप्राणित रहता है.

तीन बल

हिंसा, प्रतिहिंसा का मार्ग पशुता का मार्ग है, वह पशुवल है. प्रेम और सद्व्यवहार का मार्ग मानवता का मार्ग है, वह मानवीय-वल है

सत्य और समर्पण का मार्ग देवत्व का मार्ग है, वह दैवीवल है.

मानव, महामानव

जो परिस्थितियों को देख कर चलता है, वह मानव है, परिस्थितियाँ मानव का निर्माण करती है.

जो परिस्थितियों को बनाकर चलता है वह महामानव है, महामानव स्वयं परिस्थितियो का निर्माण करता है

चिन्तन की चाँदनी

अ

न्त

र्व

ल

मानव का अन्तःकरण अनन्त आत्मबल का अक्षयकोष है। बाहर मे वह जितना दीन-हीन-दुर्बल प्रतीत होता है, भीतर मे उतना ही समृद्ध, उन्नत एव सबल है

एकाग्रता, भक्ति, श्रद्धा, साहस, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, विवेक, अनासक्ति अभय आदि के रूप मे उसका अन्तर्बल असीम है, अनन्त है

वह अपने असीम अन्तर्बल (आत्मबल) का परिज्ञान करे, उसे जागृत करे और जीवन-समर मे विजय-दुन्दुभि बजाता हुआ आगे बढता चले—इसी पवित्र प्रेरणा के निमित्त ये अक्षरबिन्दु निर्मित हुए हैं

मन की कुटिया

मन की कुटिया को सद्विचारो के छप्पर से छाए रखो, ताकि विकारो एवं दुर्विचारों की वर्षा का पानी उसमे न चूए

इसी बात को तथागत ने भिक्षुओ को सम्बोधित करके यो कहा है—

> यथागार सुच्छन्नं वुट्ठी न समतिविज्झति।
> एवं सुभावित चित्त रागो न समतिविज्झति ॥

जिस प्रकार छाए हुए घर मे पानी नही टपकता है, उसी प्रकार सुभावित चित्त मे विकार नही घुसते.

मन : लाडला बेटा.

जैसे इकलौता बेटा मा-बाप के प्यार मे इतरा कर ऊधमी बन जाता है, स्वय मा बाप और बुजुर्गो की आज्ञा की अवहेलना करने लग जाता है, उसी प्रकार हमारा मन लाडले बेटे की तरह इतराया हुआ अब हमारे (आत्मा के) ही आदेश को ठुकराकर मनमानी करने लग गया है.

मन का मनीबेग

मन एक मनीबेग (Mony Beg) है, इसमें दुर्विचारो के कंकर नही, सद्विचारो के सिक्के भरिए.

मन की तिजोरी

मन संसार की सबसे गुप्त और सुरक्षित तिजोरी है इसके खजाने का पूरा पता स्वयं मालिक को भी नही है.

बोलो, तुम इस तिजोरी मे क्या भरोगे ?

विकार, वैमनस्य और दुर्भावों का कूड़ाकरकट ? या सद्भाव और सद्विचारो की बहुमूल्य मणियां ?

मन की बैटरी

मनुष्य का मन बैटरी के समान है इसमें प्रतिभा का सेल लगते ही

जिस साधक का मन साधना में सध गया है, वह संसार के बीच रहता हुआ भी ससार-भाव के साथ कभी भी घुलता-मिलता नही.

मन सृष्टि का निर्माता है.

मन ही सृष्टि का निर्माता है जिसने मन को साध लिया, उसने समूची सृष्टि को साध लिया. आचार्य शकर के शब्दो मे—"जित जगत्केन ? मनो हि येन" जिसने मन को जीत लिया उसने जगत् को जीत लिया

मन मशीन है.

मन एक मशीन है. मशीन की जिस प्रकार बार-बार सफाई (ऑइलिंग) करना पड़ता है उसी प्रकार सद्विचारों के मनन से मन का भी ऑइलिंग करते रहिए, वह कभी दुर्विचारो का जग नही खायेगा.

नन्हा सा कंकर

तालाब में नन्हा-सा एक ककर डालते ही जिस प्रकार समूचा तालाब तरंगित हो जाता है, उसी प्रकार मन मे विचारो की एक हल्की-सी लहर उठते ही सम्पूर्ण मन आन्दोलित हो उठता है.

मेरुदण्ड

मन जीवन का मेरुदण्ड (रीढ की हड्डी) है. मेरुदण्ड की स्वस्थता पर शरीर की स्वस्थता निर्भर करती है, और मन की स्वस्थता पर जीवन की स्वस्थता.

मन का खेत

साधक ! तुमने साधना की खेती की है, मन का खेत त्याग व संयम के हल से जोत कर तैयार किया है क्षमा और करुणा के सुन्दर बीज डाले हैं अब इस खेत में विकारो की घास-पात न उगने दो. यदि उगने लगी है तो काट कर साफ कर दो. अन्यथा वह सद्गुणो की फसल पर छा जायेगी और उसे बढने नही देगी.

साधक ! मन का खेत साफ करलो.

मन की कुटिया

मन की कुटिया को सद्विचारो के छप्पर मे छाए रखो, ताकि विकारो एव दुर्विचारो की वर्षा का पानी उसमें न चूए.

इसी बात को तथागत ने भिक्षुओ को सम्बोधित करके यो कहा है—

> यथागार सुच्छन्न वुट्ठी न समतिविज्जति।
> एव सुभावित चित्त रागो न समतिविज्जति ॥

जिस प्रकार छाए हुए घर मे पानी नही टपकता है, उसी प्रकार सुभावित चित्त मे विकार नही घुसते

मन लाडला बेटा.

जैसे इकलौता बेटा मां-बाप के प्यार मे इतरा कर ऊधमी बन जाता है, स्वय मा बाप और बुजुर्गों की आज्ञा की अवहेलना करने लग जाता है, उसी प्रकार हमारा मन लाडले बेटे की तरह इतराया हुआ अब हमारे (आत्मा के) ही आदेश को ठुकराकर मनमानी करने लग गया है

मन का मनीबेग

मन एक मनीबेग (Mony Beg) है, इसमें दुर्विचारो के कंकर नही, सद्विचारो के सिक्के भरिए.

मन की तिजोरी

मन ससार की सबसे गुप्त और सुरक्षित तिजोरी है इसके खजाने का पूरा पता स्वय मालिक को भी नही है.

बोलो, तुम इस तिजोरी मे क्या भरोगे ?

विकार, वैमनस्य और दुर्भावों का कूडाकरकट ? या सद्भाव और सद्विचारो की बहुमूल्य मणियां ?

मन की बैटरी

मनुष्य का मन बैटरी के समान है. इसमें प्रतिभा का सेल लगते ही

तेज जाग्रत हो जाता है जरा-सा श्रम का बटन दवा कि नही ज्ञान का प्रकाश जगमगा उठता है

मर्द की परिभाषा

मद, (अहकार) मदन (काम) और मन को मारने वाला ही सच्चा मर्द कहलाता है.

मन को घूरा मत वनाओ !

देखो यह गांव के घूरे पर समूचे गाव का कूड़ा-कचरा इकट्ठा हो रहा है, गन्दगी फैल रही है, वदवू के मारे दमघुटा जा रहा है, और कितने कीड़े कुलवुला रहे हैं ?

अव उधर देखो, एक निन्दक के मनरूपी घूरे पर गांव भरके पापो का कूडा-कचरा इकट्ठा हो गया है. उसमे असद्भावो की गदगी फैल रही है, दुर्वचनो की दुर्गन्ध मार रही है और मात्सर्य तथा द्वेष के कीडे कुलवुला रहे हैं.

अपने मन को अच्छाइयो की खुशवू से भरा वगीचा नही वना सकते हो, तो कम से कम गांव का घूरा तो मत वनाओ !

मन जादूगर है.

मन जादूगर है, वह क्षरण भर मे आकाश मे चौकड़ी भरता है, तो दूसरे ही क्षरण समुद्रो मे लहरो पर तैरता चला जाता है. एक क्षरण पर्वतो की चोटियों पर छलांगे लगाता हुआ मिलेगा तो दूसरे क्षरण कही अन्धगर्त में ठोकरें खाता होगा.

इस जादूगर की लीला विचित्र है कोई समझ नही पाया. इसे छूना 'वायुरिव सु दुष्करम्' है, और इसे पकड पाना तो असभव ! यह तीव्र गति से 'दुट्ठस्सो परिधावइ' मनचले घोड़े की तरह दौड़ रहा है, विना थमे, विना रुके

मनोयोग

मनोजयी महावीर ने कहा—'परिणामे बधो, परिणामे मोक्खो' वन्धन और मुक्ति मन के भीतर ही है.

मुक्ति के साधक को सर्वप्रथम मनोजय करना चाहिए. मनोयोग पर विजय प्राप्त करना चाहिए.

जब साधक चौदहवे गुणस्थान मे प्रविष्ट होता है तो, सर्वप्रथम मनोयोग का निरोध करता है मनोयोग का निरोध होने पर वचन-योग और काययोग का निरोध स्वत हो जाता है.

चार प्रकार के मन

विचारको ने मन की दशाओ का विश्लेषण करके उसे चार स्तरो पर विभक्त किया है.

(१) मरा मन—जिसका आत्मविश्वास टूट गया है, जीवन मे आशाएँ निराशा मे बदल गई है, कुछ भी करने की शक्ति, स्फूर्ति व ऊर्जा जिसमे नही है

(२) डरा मन—जिसकी आत्म शक्तियाँ विशृङ्खलित हो गई है, जो चलता तो है, पर हर चरण लडखडाता गिरता है, भय-भीत, शकाग्रस्त एव विशृङ्खलित मन—डरा मन है.

(३) थका मन—जो आशा-निराशा के थपेडे खाकर शात हो गया हो, जिसमे स्फूर्ति तो है, गति की क्षमता भी है, पर उचित प्रेरणाओ के अभाव में निठल्ला पडा रहता है, बेकार टूटी गाडी की तरह

(४) जीवित मन—जिसमे आशा, स्फूर्ति और साहस का रक्त दौड रहा हो, वह जीवित मन है उसे न प्रेरणा की जरूरत होती है और न सहारे की.

मन का दास या स्वामी ?

समाज मे बीच शक्ति और सम्मान से रहने का एक गुरुमन्त्र है—अपना अभिमान स्वय कुचल डालो मन के कहने से नही, आत्मा के कहने से चलो

मन की बात मानने वाला मानी होता है, आत्मा की बात मानने वाला ज्ञानी '

— स्वर्ण

जो मन का दास है, वह मनुष्य का दास है, दास का स्वाभिमान और सन्मान कैसा ?

स्वाभिमान और सन्मान की रक्षा के लिए मन के स्वामी बन कर रहो !

तल्लीनता

मानसिक तल्लीनता से शरीर की नसो मे एकतानता उत्पन्न होती है. इसीसे शरीर सुखानुभूति करता है तल्लीनता के तीन रूप हैं—काम, भक्ति और ध्यान.

स्त्री विषयक तल्लीनता काम है.

ईश्वर विषयक तल्लीनता भक्ति है.

आत्मा विषयक तल्लीनता ध्यान है

एकाग्रता और पवित्रता

जो पानी स्थिर होगा और स्वच्छ निर्मल होगा, उसी मे प्रतिबिम्ब दिखलाई देगा. इसका अर्थ है एकाग्रता का मूल्य तभी है जब उसमे पवित्रता है.

पवित्रता रहित एकाग्रता, स्थिर किन्तु मलिन जल की तरह है.

मैला दर्पण

मन के दर्पण को पोछ कर साफ करो. मिट्टी से मैले दर्पण मे अपना प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखलाई नही पड़ता.

वासना से मलिन-मानस मे ईश्वरीय गुणों का प्रतिबिम्ब कैसे दिखलाई देगा ?

विचारो की पवित्रता

गुप्त से गुप्त विचार को भी कभी अपवित्र न होने दो.

विचार रूपी बीज ही वाणी और व्यवहार के रूप मे पल्लवित-पुष्पित होता है.

यदि बीज पवित्र होगा, तो फल-फूल भी निश्चित ही पवित्र और मधुर होंगे.

कार्य सिद्धि के लिए एकाग्रता अमोघ उपाय है बिना एकाग्रता के प्रवृत्ति मे प्राण सचार नही होता साधना निर्जीव रहती है निर्जीव साधना कभी भी लक्ष्य की ओर कैसे गति कर सकती है ?

भगवान् महावीर ने कहा है—

> तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे, तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे ।
> तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे, तब्भावणाभाविए ।।
>
> —अनुयोगद्वार ३८

जो करो, वह तन्मय होकर करो, चित्त को वही लगाओ, लेश्या को वही नियोजित करो वैसा ही अध्यवसाय जागृत करो उसके लिए समर्पित हो जाओ, उसी मे उपयुक्त हो जावो, तभी तुम्हारी क्रिया भाव क्रिया होगी, सजीव क्रिया होगी.

एक क्रिया मे शक्ति लगाने से क्रिया निखर जाती है. अन्यथा वह बिखर जाती है

कायोत्सर्ग मानस चिकित्सा

मन मस्तिष्क और शरीर के बीच एगसूत्रीय सम्बन्ध है तीनो की सामजस्य विहीन गति से उत्पन्न होने वाली स्थिति स्नायविक तनाव के रूप मे आजकल का प्रमुख रोग है

आजकल का बुद्धिजीवी, राजनयिक प्राय. इस रोग का शिकार होता दृष्टिगोचर होता है

जैन साधना मे इस रोग की एक महत्त्वपूर्ण चिकित्सा है—कायोत्सर्ग ! कायोत्सर्ग शरीर की प्रवृत्ति को शिथिल करता है, मानसिक आवेग को कम करता है और मस्तिष्क की गति को सतुलित रखता है

शरीर और मन की चचलता को कम करना—स्नायविक रोग की सबसे महत्त्वपूर्ण चिकित्सा है

कायोत्सर्ग का फल

महान श्रुतधर आचार्य भद्रबाहु ने कायोत्सर्ग के पाँच फल बतलाए हैं—

१. दैहिक जड़ता की शुद्धि—श्लेष्म आदि के द्वारा देह मे जड़ता आती है कायोत्सर्ग से श्लेष्म आदि दोष नष्ट होते हैं, अत उनसे उत्पन्न होने वाली जड़ता भी नष्ट हो जाती है.
२. बौद्धिक जड़ता की शुद्धि—कायोत्सर्ग मे चित्त एकाग्र होता है. एकाग्रता से बौद्धिक जड़ता नष्ट होती है.
३. सुख-दुख तितिक्षा—सुख-दुख सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है
४. शुद्ध भावना का अभ्यास होता है
५ ध्यानयोग की योग्यता प्राप्त होती है.

मूल मत्र

जैन धर्म का मूल मत्र है—'कषाय-विजय' ! कषाय-विजय' के लिए ही समस्त साधनो का आलम्बन लिया जाता है पर, आज हो रहा है साधनो के नाम पर कषायो का उद्दीपन !

साधना क्षेत्र के आरोहियो के लिए यह फिसलन चिन्तनीय प्रश्न है

धर्मध्यान

धर्मध्यान (उच्च चिंतन) की आराधना करने वाले साधक के लिए तीन बात आवश्यक है—

(१) हृदय सद्श्रद्धा से अनुप्राणित हो.
(२) निरन्तर स्वाध्याय का अभ्यास चालू रहे
(३) सद्भावना से हृदय को भावित करता रहे

ये तीनो बात धर्मध्यान के लक्षण, आलम्बन एवं अनुप्रेक्षा से फलित होती है.

सन्तुलन

यह शरीर भी चंचल है, और मन भी चंचल है

चंचलता का त्याग करना सहज नही सम्पूर्ण चचलता का त्याग करके जिया भी कैसे जाए ?

अधिक चचल रहकर भी कोई अपना जीवन कैसे चलाए ?

जीवन की सफलता इसी मे है कि चंचलता के साथ स्थिरता का संतुलन जमा रहे

जन परिभाषा मे इसी को 'इन्द्रिय-संयम' एवं 'मन. सयम' कहा है.

वेग. आवेग सवेग

सबसे बड़ा सुख मन की शान्ति है

मन तो निरन्तर गतिशील है, वह वेगवान है. किन्तु वेग जब गलत मार्ग मे बहता है, तो आवेग बन जाता है आवेग अशान्ति का मूल है.

मनुष्य का मन थकता है तो शान्ति की शरण मे जाता है.

शान्ति की ओर मुड़ना ही सवेग है.

सवेग से मन को शान्ति प्राप्त होती है.

उपवास अग्नि है

उपवास एक आन्तरिक अग्नि है

अग्नि घास फूस को जलाती है अन्न को पकाकर मधुर बनाती है

उपवास से शारीरिक एव मानसिक विकार भस्म हो जाते है, हृदय शुद्ध होकर पवित्र तथा मधुर बन जाता है

उपवास की परिभाषा

उपवास का अर्थ है—समीप मे रहना

किसके समीप ?

आत्मा के, निर्मल एव उदार चित्तवृत्तियो के समीप रहना। यही उपवास की सच्ची परिभाषा है

उपवास का अर्थ आहार-त्याग ही नही है, वह केवल निवृत्तिपरक साधना ही नही है, किन्तु विषय विकार के त्याग की संयुक्त आराधना है

उपवास का प्रयोजन शरीर शोषण ही नही, किन्तु पोषण अर्थात् ध्येय को पुष्ट करना, लक्ष्य की प्राप्ति करना भी है

तथागत बुद्ध ने लक्ष्यपूर्ति के लिए संकल्प किया था—"इस आसन पर बैठे-बैठे मेरा शरीर भले सूख जाएँ, चमड़ी, हड्डी और मांस भले विनष्ट हो जाएं, किन्तु दुर्लभ बोधि को प्राप्त किए बिना यह शरीर इस आसन से विचलित नही होगा."

इसी प्रकार का घोर संकल्प भगवान महावीर ने किया था—"मैं सब प्रकार के कष्टो को तब तक सहन करूंगा जब तक केवलज्ञान की उपलब्धि न हो जाए."

ये दोनों महान संकल्प उपवास के उदात्त प्रयोजन को स्पष्ट करते हैं.

दो साधन

स्वाध्याय और ध्यान—परमात्मभाव की अभिव्यक्ति के लिए दो अमोघ साधन हैं

स्वाध्याय और ध्यान के अभ्यास से परमात्म-ज्योति प्रकट होती है.

· ४ चमत्कार !

मैं खड़ा था मधुछत्र (शहद के छत्ते) के पास.

मधुछत्र को तोड़ने के लिए एक आदमी आया. मक्खियां उस पर चिपट गई, तीखे डंक मार-मार कर उसे घायल कर डाला, वह चिल्लाया और उलटे पावों भाग गया.

मैंने अनुभव किया - आदमी के सामने मधुमक्खी की क्या ताकत है ? यह कितनी कमजोर है ? किन्तु उनके सामूहिक आक्रमण ने मनुष्य जैसे बलवान शत्रु को भी परास्त कर दिया. यह संगठन का एक चमत्कार है

कागज अग्नि का स्पर्श पाते ही क्षण भर मे जल उठता है और दूसरे ही क्षण जलकर राख भी हो जाता है

कोयला धीरे-धीरे जलता है, और बहुत देर तक जलता रहता है.

कुछ व्यक्ति उपदेश सुनकर कागज की तरह एकदम प्रज्ज्वलित हो उठते है, पर उनका यह प्रकाश क्षणिक होता है, वे भावुक होते है.

कुछ व्यक्ति कोयले की तरह धीरे-धीरे, मगर लम्बे समय तक जलते रहते है, उनका प्रकाश दीर्घकालिक होता है वे श्रद्धालु होते है.

भक्ति

बुद्धि की शुद्धि और सवृद्धि के लिए उसे स्वाध्याय मे जोडिए.

मन की एकाग्रता और प्रसन्नता के लिए उसे भक्ति मे लगाइए.

भक्ति की शक्ति

भक्ति एक शक्ति है. वह आसक्ति के बधनो को तोडकर मन को विरक्ति की ओर उत्प्रेरित करती है.

भक्ति का पुष्प

जब कीचड से कमल पैदा हो सकते है, पहाडो की कठोर चट्टानो से पानी के झरने निकल सकते है, और कोयले की खानो से हीरे प्राप्त हो सकते है, तो क्या मानव के अन्तस्तल मे भक्ति और प्रेम के सुरभित फूल नही खिल सकते ?

अमृता भक्ति

जो भक्ति आत्म-प्रसन्नता के लिए शान्त और निस्पृह भाव से की जाती है, वह अमृता भक्ति है.

जो भक्ति आत्म-ख्याति के लिए, कामना और मद की भावना से अभिभूत होकर की जाती है, वह [illegible] भक्ति है

जो भक्ति केवल प्रदर्शन, प्रशंसा और लोकवंचना के लिए की जाती है वह विषा भक्ति है.

भगवान की खरीदी

भक्त भगवान को खरीद सकता है.

धन से नही, बल से नही, और संसार के अनन्त वैभव से भी नही। किन्तु भक्त भगवान को खरीद सकता है—सिर्फ भक्ति के दो सच्चे फूलो से।

जिन्हे भगवान की खरीदी करनी हो, वे आए, भक्ति के फूल लाए, जिसके फूल श्रेष्ठ और सच्चे होंगे भगवान अपने आप उसके फूलों पर विक जाएगा.

आनन्दानुभूति

जिस साधना मे साधक को आनन्द की अनुभूति नही होती, वह साधना की नही जाती, ढोई जाती है

वह शिव नही, शव है. वह गंधहीन फूल और जलशून्य सरोवर है.

साधना वह है, जिस मे आनन्द की अनुभूतियाँ ऐसे स्फुरित हो जैसे सरोवर मे उर्मिया उछलती हो.

मन, वचन और तन प्रसन्न और प्रशान्त हो, वह साधना है, आनन्द का स्रोत है

आनन्द और शान्ति

आनन्द मे एक प्रकार की सवेग अनुभूति होती है, वह बहा लेजाती है, मन व इन्द्रियों को उत्तेजित करती है.

शान्ति आवेगो को अपने उदर में समा लेती है, वह किनारे लगा देती है, उसमे मन व इन्द्रियो को समाधान मिलता है, एक प्रकार की स्थिर, निरावेग अनुभूति होती है

जो भक्ति केवल प्रदर्शन, प्रशसा और लोकवचना के लिए की जाती है वह विपा भक्ति है

भगवान की खरीदी

भक्त भगवान को खरीद सकता है.

धन से नही, बल से नही, और ससार के अनन्त वैभव से भी नही। किन्तु भक्त भगवान को खरीद सकता है—सिर्फ भक्ति के दो सच्चे फूलों से।

जिन्हे भगवान की खरीदी करनी हो, वे आए, भक्ति के फूल लाएं, जिसके फूल श्रेष्ठ और सच्चे होगे भगवान अपने आप उसके फूलो पर बिक जाएगा.

आनन्दानुभूति

जिस साधना मे साधक को आनन्द की अनुभूति नही होती, वह साधना की नही जाती, ढोई जाती है.

वह शिव नही, शव है वह गधहीन फूल और जलशून्य सरोवर है

साधना वह है, जिस मे आनन्द की अनुभूतियाँ ऐसे स्फुरित हों जैसे सरोवर मे उर्मिया उछलती हो.

मन, वचन और तन प्रसन्न और प्रशान्त हो, वह साधना है, आनन्द का स्रोत है

आनन्द और शान्ति

आनन्द मे एक प्रकार की सवेग अनुभूति होती है, वह वहा लेजाती है, मन व इन्द्रियो को उत्तेजित करती है

शान्ति आवेगो को अपने उदर मे समा लेती है, वह किनारे लगा देती है, उसमे मन व इन्द्रियो को समाधान मिलता है, एक प्रकार की स्थिर, निरावेग अनुभूति होती है

विश्वास और विवेक

विश्वास आत्मा की ज्योति है, संशय आत्मा का अन्धकार है. विवेक हृदय का सौरभ है, अविवेक मन की गन्दगी है

आत्मविश्वास

जब तक मैं सोचता रहा, सोचता रहा, आत्मविश्वास विगलित होता प्रतीत हुआ !

जब मैंने अधिक सोचना बन्द करके कार्य करना प्रारम्भ कर दिया, आत्मविश्वास स्फुरित होने लगा

श्रद्धा, अन्धी नहीं है !

कौन कहता है कि श्रद्धा अन्धी होती है ?

श्रद्धा का अर्थ है—अन्तर्बल ! वह धीरज का चिन्ह है श्रद्धा के बिना क्रिया में तीव्रता आ ही नही सकती जहाँ तीव्र क्रियाशीलता है वहाँ अन्धता कैसी ?

भगवान की तलाश

मित्र ! भगवान की तलाश मे इधर उधर कहाँ भटक रहे हो ? नदी, पर्वत, खण्डहर, मन्दिर क्या ये भगवान के आवास हो सकते हैं ? कहाँ है इनमे पवित्रता ? कहाँ है इनमे ज्योति ?

भगवान का आवास है ज्योतिर्मय चैतन्य-मन्दिर ! भावालोक ! प्राचीन आचार्य के शब्दो मे—

> "न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये ।
> भावेहि विद्यते देवस्तस्माद भावो हि कारणम् ।"

देवता न काष्ठ मे है, न पाषाण मे है और न मिट्टी मे ही वह तो प्राणि की भावनाओ मे रहता है, उसके सकल्पो मे निवास करता है, उसकी श्रद्धा मे ही भगवान का आवास है

जिस मन मे श्रद्धा की ज्योति प्रज्ज्वलित है, वही भगवान के दर्शन हो सकते हैं

श्रद्धा

आस्था— आचार—चरित्र की जननी है

आस्था के विना धर्म, देश, समाज एव परिवार की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है

प्रश्न यह है कि आज मनुष्य की आस्था एक नही है, और इससे भी वडा प्रश्न यह है कि आज पुरानी आस्थाएँ टूट रही है, और नई आस्था का निर्माण नही हो पा रहा है

फिर राष्ट्र के चरित्र का विकास हो तो किस आधार पर ?

धर्म और समाज का अभ्युदय हो तो किस धरातल पर ?

आस्था-श्रद्धा ही जीवन का बल है, सृष्टि का बीज है तथागत बुद्ध के शब्दो मे—' सद्धा बीज तपो वुट्ठि श्रद्धा बीज है, तप. कर्म वृष्टि है— इसीलिए वेद मे कहा है—श्रद्धे । श्रद्धापयेह न —हे श्रद्धे ! हमारे मन मे विश्वास की ज्योति जलाओ ।

चलना : भटकना

भ्रमण तो किसी पथ पर भी किया जा सकता है और घेरे मे भी !

पथ पर भ्रमण करना चलना कहलाता है, वह मजिल की ओर वढाता है

घेरे मे भ्रमण करना—भटकना है. हजार-लाख वर्ष तक भटकने के बाद भी मजिल तो दूर ही दूर है !

विवेक युक्त साधना चलना है, विवेकहीन साधना-भटकना है

एक है घोडे का तेज दौडना और दूसरा है वैल का कोल्हू के इर्द-गिर्द चक्कर लगाना.

विश्वास और सशय

सशय वह नाजुक फूल है जो जरा-सी गर्म हवा का स्पर्श लगते ही मुरझा जाता है

विश्वास वह हिमालय है, जो प्रलय के तूफानो मे भी सदा अविचल, स्थिर खड़ा रहता है.

वातानुकूलित मन

आज का युग वातानुकूलित निर्माण का है मकान, दुकान, रेलगाड़ी, कार आदि प्रत्येक स्थान को वातानुकूलित बनाया जाता है

अब समय है, सम्यग्दर्शन की मशीन से मन को भी वातानुकूलित बनाइए बाहर के सुख-दुख, सयोग-वियोग आदि के गर्म व शीत वातावरण से सदा अप्रभावित !

सम्यग्दृष्टि साधक का मन वस्तुत इसी प्रकार का होता है.

सम्यक्त्व का रग

उपशम और क्षयोपशमसम्यक्त्व का रग कच्चा रग है, विपरीत सयोगो की प्रबलता होने पर मिट सकता है. किन्तु क्षायकसम्यक्त्व का पक्का रग कभी नही उतरेगा

जीवन में दृढ श्रद्धा और विश्वास का पक्का रग लगाइए

सम्यक्दृष्टि साधक

कभी-कभी बहनों को पापड सेकते हुए देखकर मेरा चिन्तनसूत्र गहरा उतर जाता है—कितनी सावधानी ! न पापड जलता है और न हाथ भी !

सम्यक्दृष्टि साधक को भी जीवन में इतनी ही सावधानी रखनी होती है, ससार मे सुखो का पापड सेकते समय वह वस्तु को भी संभाले रखता है और अपने सद्गुणो की सुरक्षा भी करता है

सम्यग्दर्शन का कनक्शन

बिजली के समस्त साधनो से सज्जित भवन मे जबतक बिजली का कनक्शन नही किया जाता, तब तक प्रकाश नहीं जगमगा सकता

विभिन्न प्रकार की क्रियाओ से सवलित जीवन-भवन में जवतक सम्यग्दर्शन का कनक्शन नही किया जायेगा, तव तक जीवन मे प्रकाश कहा से आयेगा ?

सम्यग्दृष्टि

मिथ्यादृष्टि भी ससार मे रहता है और सम्यग्दृष्टि भी, मिथ्यादृष्टि ससार मे, परिवार मे रहता है तो घी की मक्खी की तरह उसी में फँस जाता है, जब कि सम्यग्दृष्टि परिवार, भोग, सुख-दुःख सब का अनुभव करते हुए भी उनसे अलग रहता है.

सेठ का मुनीम लाखो-करोडो का हिसाव रखता है. लेन-देन करता है, किन्तु उस धन को अपना सगझा तो समझ लो जेल के दरवाजे दूर नही हैं, हथकडियाँ पडने को ही है

इस भाव को अध्यात्मवादी आचार्य कुन्दकुन्द ने इस प्रकार व्यक्त किया है

> जह विसमुवभु जतो वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि
> पुग्गलकमस्सुदय तह भु जदि णेव वज्झए णाणी ।।

—समयसार १६५

जिस प्रकार वैद्य (औषध रूप मे) विष खाता हुआ भी विष से मरता नही, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि आत्मा कर्मोदय के कारण सुख-दु ख का अनुभव करते हुए भी उनसे वद्ध नही होता

आत्मा जव पर को अपना समझ लेता है तव ससार की कैद मे फँस जाता है, विषयो के विष से ग्रस्त हो जाता है

वहम

'वहम आस्तीन का साँप है'—यह एक कहावत है। किन्तु साँप एक वार ही काटता है, वहम तो रात-दिन आदमी का रक्त पीता रहता है —कपड़ों मे छिपे खटमल की तरह या लकड़ी में घुसे घुन की तरह

भय का सामना करो

भय को टालने का प्रयत्न मत करो, उसे सामने आने दो! टकराने दो, और उसका पेट चीर कर हनुमान की तरह निकल जाओ

भय को टालना भय को बढाना है, भय से लडना— भय को समाप्त करना है.

/ निराश न हो

दिल एक शीशा है.

इसे निराशा की ठेस लगी कि फूटा।

दिल एक फूल है.

इसे नाउम्मीदी की हवा लगी कि मुरझा गया

हिम्मत भले हो हीरे जितनी सख्त हो, पर निराशा की चोट लगते ही वह चूर-चूर हो जाती है.

मन को निराश न होने दीजिए! मन के उपवन मे निरन्तर आशा का शीतल जल छिड़कते रहिए. इसे निराशा की सर्द-गर्म हवाओ से बचाये रखिए.

अभय ही भगवान है

अभय ही भगवान है. जो अभय की साधना करता है, वही प्रभु की आराधना करता है जो सदा भय-भीत, डरा-डरा रहता है, वह प्रति-पल मृत्यु की ओर बढता रहता है.

भगवान महावीर ने प्रश्नव्याकरण सूत्र मे अभय का सन्देश देते हुए कहा है—

"भीतो भूतेहिं घिप्पइ
भीतो य भरं न नित्थरेज्जा"

भयाकुल व्यक्ति भूतों का शिकार हो जाता है. वह (भयभीत) कोई उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य नही कर सकता, अतः 'ण भाइयव्वं' कभी भी डरना नहीं चाहिए.

अभय का यही उद्घोष अथर्ववेद के ऋषि ने किया है—

> यथा द्यौश्च पृथिवी च न विभीतो न रिष्यतः
> एव मे प्राणा मा विभे ।
>
> —अथर्व २।१५।१

जिस प्रकार आकाश कभी नही डरता, और पृथ्वी भी नही डरती, इसलिए वे कभी नष्ट नही होते इसी प्रकार मेरे प्राण ! तू भी कभी किसी से न डर । सदा अक्षय बना रह.

भय मृत्यु है

'सर्वत्र अभय' रहने वाला मनुष्य जीवन मे सिर्फ एक बार मरता है, जब कि भयभीत रहने वाला एक दिन मे कई बार मर जाता है.
भय मृत्यु है, अभय अमृत है

कष्टो का स्वागत करो ।

सचमुच मनुष्य का जीवन रत्न की तरह बिना रगड खाए चमक नही सकता
और सोने की तरह बिना सघर्षो की आग मे तपे उसमे निखार नही आ सकता.
मानव ! यदि रत्न और स्वर्ण की तरह चमकना है तो फिर कष्टों और सघर्षो से कतराओ नही, उनका स्वागत करो !

निर्भय हो मन !

कायर मनुष्य ससार मे जिन्दा नही रह सकता, वह जीवित ही मरे के समान है, और मृत्यु भी उसे शीघ्र वरण कर लेती है
कायरता मन मे भय पैदा करती है भय मन और हृदय को सकुचित कर देता है. शुष्क बना देता है, और सिकुड़ा हुआ शुष्क हृदय मृत्यु की निशानी है
इसलिए डरो नही, भय मत खाओ ! निर्भय हो, और निर्भीक होकर जीवन यात्रा सम्पन्न करो

एक प्रसिद्ध कवि के शब्दो में—

निर्भय हो, निर्भय मानव मन !
निर्भीक धरा पर कर विचरण !

शासन

प्रेम का शासन हृदय पर होता है, उसमें मानवता का सचार है
तलवार का शासन केवल शरीर पर चलता है, उसमें बर्बरता छिपी है

प्रेम का झरना

मैंने देखा—पर्वत की कठोर चट्टानों के अन्तरहृदय को भेद कर शीतल जल के निर्मल निर्झर कल-कल करते हुए प्रवाहित हो रहे हैं.

मेरे विश्वास की दिशा बदल गई—कठोर और क्रूर मानव-हृदय से भी करुणा, स्नेह एव प्रेम का निर्झर वह सकता है

वह मानव हृदय पत्थर से भी गया गुजरा नही होगा, जिसके भीतर से प्रेम का झरना नही फूट सकता ? स्नेह और करुणा की धारा प्रवाहित नही हो सकती ?

मोह और प्रेम

मोह और प्रेम ! भावनात्मक प्रवाह के दो छोर, इतने ही दूर, इतने ही विलग जितने पूर्व और पश्चिम !

दोनों का उत्स हृदय है, किन्तु परिणति अत्यन्त विचित्र ! भिन्न !

मोह जीवन के सद्गुणो का विघातक है, प्रेम विधायक !

मोह देह का उपासक है, प्रेम आत्मा का पुजारी !

मोह विकार है, प्रेम शुद्ध संस्कार है !

मोह वासना का रूपान्तर है, प्रेम साधना का राजमार्ग है

प्रेम आक्सीजन की भाति प्राणो का पोषक है, मोह हाइड्रोजन की भाति जीवन सत्त्व का शोषक !

प्रेम की जड़ी

देखो, मैं तुम्हें एक चमत्कारी जड़ी बताता हूं—जो अमूल्य है, दुर्लभ है,

किन्तु इसके चमत्कार ससार भर मे विदित हैं, और एक नही, असख्य चमत्कारो की निधि है

वह जडी दुश्मन को भी दोस्त वना देती है, राक्षस को भी देवता वना देती है, टूटे हुए दिलो को दूध पानी की तरह मिला देती है, और इन्सान को भगवान वना देती है !

वह जड़ी क्या है ?

उस जड़ी का नाम है—प्रेम !

प्रेम और काम

प्रेम और काम मे अन्तर है

प्रेम मिलन के लिए है, काम सृजन के लिए. मिलन स्वभाव-सिद्ध है, अत निष्काम है सृजन प्रयत्न-साध्य है, अतएव सकाम है.

निष्काम मिलन प्रेम है, सकाम मिलन काम है

उत्थान का क्रम

प्रेम से काम, काम से वासना, वासना से व्यभिचार यह पतन का क्रम है.

प्रेम से मिलन, मिलन से निर्दोष सात्विक मनोनुभूति रूप आनन्द और आनन्द से आत्म-विस्मृति, आत्मार्पण—यह उत्थान का क्रम है.

प्रेम का रूप

गुरु-शिष्य के प्रेम मे आध्यात्मिक विशुद्धता है.

माता-पुत्र के प्रेम मे स्नेहात्मक उज्ज्वलता है.

वहन-भाई के प्रेम मे भावो की पवित्रता है.

पति-पत्नी के प्रेम मे मन की मादकता है.

सहृदयता

सहृदयता की भाषा वही समझ सकता है, जो स्वयं सहृदय हो

क्रूर हृदय सहृदयता के फूल को वैसे ही कुचल डालता है, जैसे उन्मत्त गजराज कोमल पुष्पलताओं को

अहंकार कैसा ?

हजार-लाख कमलो को पैदा करके भी कीचड़ कभी गर्व से फूला नही

असंख्य-असंख्य मोतियो को जन्म देकर भी सीप कभी अहङ्कार मे इतराई नही.

पर, मानव है जो कुछ भी नही करके गर्व मे अकड़ा जा रहा है

'मान' कैसे मिले ?

इङ्गलैंड के प्रधानमत्री एटली ने एक बार कहा था कि—"वह नेता कभी भी सफल नही हो सकता, जिसके लिए विरोधियो के मन मे भी मान न हो"

और यह तो सर्वविदित ही है कि यह मान कैसे मिलता है ?

उदारता से, सच्चरित्र से, त्याग से, सेवा और सहृदयता से

आज के नेताओ मे इन गुणो की ज्यो-ज्यो कमी होती जा रही है, त्यो-त्यो उनका मान गिरता जा रहा है.

अपना मान गिराने वाले वे स्वय हैं और शिकायत है कि जनता अपने नेताओ का आदर-सम्मान नही करती.

प्रत्यंचा

धनुप की प्रत्यचा की तरह प्रेम की प्रत्यचा भी अत्यधिक खीचने से टूट जाती है

क्षेम का मार्ग

प्रेम क्षेम का मार्ग है, और विनय वृद्धि का.

सत्य से समृद्धि प्राप्त होती है, और संयम से सिद्धि.

भगवान महावीर ने कहा है- णच्चा नमई मेहावी'—बुद्धिमान ज्ञान प्राप्त करके विनम्र बन जाता है

वृक्ष फल आने पर नीचे नम जाता है, बादल जल भरने पर झुक जाता है, वैसे ही बुद्धिमान ज्ञान पाकर विनम्र हो जाता है

नमे ते गमे

गुजराती मे कहावत है—नमे ते गमे जो नमता है, वह सब को प्रिय लगता है

हिन्दी की भी कहावत है—गरमी खावे अपने को, और नरमी खावे गैर को'—इस का अभिप्राय भी यही है कि नम्रता बड़े से बड़े शत्रु को परास्त कर देती है

नम्रता पत्थर को मोम बना देती है, जब कार्य सिद्ध करना हो, और मोम भी वज्र का काम कर देता है—यदि उसे हथियार के रूप में प्रयुक्त करना हो

कार्यसिद्धि का मंत्र

जो काम नम्रता से बन सकता है, वह उग्रता से क्यो किया जाए ? और उग्रता से बनेगा भी कैसे ?

जो कार्य गुड देने से हो सकता है वह जहर से क्यो किया जाए ? सभव है कही उसका परिणाम ही विपरीत हो जाए. कार्य सिद्धि की बजाय पश्चात्ताप ही हाथ लगे.

कोमल मिट्टी

कोमल मिट्टी के ही घडे बन सकते है, कठोर मिट्टी के नही. नम्र और कोमल व्यक्ति ही गुणपात्र बन सकता है, उद्धत और कठोर व्यक्ति नही !

जीभ और दांत

एक गुरु ने मृत्यु के समय अन्तिम शिक्षा सुनने के लिए उत्सुक

अपने शिष्यों को सम्बोधित करके मुँह खोलकर कहा— "देखो! मेरा मुँह देख रहे हो।"

शिष्यो ने विनम्रता किन्तु आश्चर्यपूर्वक कहा— हां! गुरुदेव!

इसमे क्या है?

जीभ है!

दाँत?

नही है!

क्या समझे इससे?

शिष्य संभ्रान्त-से खड़े देखते रहे

गुरु ने इसका रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा—जीभ पहले आई और आखिर तक विद्यमान है. दाँत वाद मे आए और पहले चले गए। जीभ कोमल है. दाँत कड़े है। जो कोमल होता है वह, ससार मे अमर रहता है, जो कडा होता है वह शीघ्र समाप्त हो जाता है.

विनम्र व्यक्ति स्वयं तो झुकता ही है, साथ ही संसार को भी झुका लेता है.

मित्र की पहचान

मित्र वह है जो मन्त्र को—अर्थात् साथी और सखा की गुप्त बात को पचा सके

जो मित्र की गुप्त बात को भी लाउडस्पीकर की भांति सर्वत्र प्रचारित करदे, वह मित्र नही, शत्रु से भी वढकर है.

मित्रता

मित्रता दो प्रकार की है—

सज्जन की मित्रता सोने के वर्तन की तरह जल्दी वननी नही, किन्तु वनने के वाद जल्दी टूटती नही, और टटने पर जल्दी ही जुड़ जाती है

दुर्जन की मित्रता—मिट्टी के बरतन की तरह जल्दी ही बन जाती है, और जल्दी ही टूट जाती है, किन्तु टूटने के बाद पुन जुड नही सकती.

दर्पण ' दूर्वीन

सच्चा मित्र दर्पण के समान होता है

वह मित्र के गुण-दोषो का सच्चा स्वरूप उसे दिखाता रहता है कपटी (खुशामदी) मित्र दूर्वीन के समान होता है वह छोटे से गुण को बहुत बड़ा करके दिखा देता है, और बडे-बडे दुर्गुणो को छोटे से रूप मे भी दिखाता है

पहला मित्र की भलाई चाहता है, दूसरा खुशामद।

क्रोध और प्रेम

क्रोध जिस दरवाजे को नही खोल सकता, प्रेम से वह दरवाजा अपने आप खुल जाता है

अहकार जिस दुर्ग को विजय नही कर सकता, समर्पण उसे क्षण भर मे अपने अधीन कर लेता है

पुराने जमाने मे एक राजा था। एक बार वह बहुत बडी सेना लेकर अपने शत्रु राजा को विजय करने के लिए चल पडा

बहुत दिनो तक घोर सघर्ष करने पर भी दोनो ओर से कोई किसी के सामने परास्त नही हुआ आक्रामक सेना लाख प्रयत्न करने पर भी दुर्ग को भेद नही सकी

एक दिन अचानक भूकम्प आया, किला ध्वस्त हो गया, और हजारों आदमी मलबे मे दबकर मर गये.

शत्रु की यह विपन्नता देखकर आक्रामक राजा का हृदय द्रवित हो गया। उसने आदेश दिया—सेना वापस राजधानी की ओर चलें, हम युद्ध नही करेंगे

सेनापति ने कहा —"महाराज ! विजय का यही तो अनुकूल अवसर

है चलिए किले के भीतर चलकर हम शत्रु की राजधानी पर अधिकार कर लें."

राजा ने गम्भीर स्मित के साथ कहा – "सेनापति ! क्या कभी बीमार और दुर्घटनाग्रस्त अपग के साथ कुश्ती लड़ी जाती है. यदि विजय की ही आकांक्षा है, तो पहले ये किले की दीवारें दुरुस्त करवा दो, हम फिर पुन युद्ध करेंगे"

यह सवाद जब उस विपद्ग्रस्त राजा ने सुना तो स्नेह और समर्पण के जल से उसका हृदय छलछला उठा, वह उसी क्षण किले से बाहर आया, और बोला – "भाई राजा ! तुम जब इस किले को दुरुस्त करा सकते हो, तो लो यह किला मैं तुम्हे ही दिए देता हूँ. तुम भीतर आ जाओ ! और इस राजधानी को सभालो".

प्रेम और समर्पण का भाव जगने के बाद कौन किसकी राजधानी भोगे और कौन ले ?

आक्रामक राजा ने विपन्न राजा के साथ मैत्री का हाथ बढाया, दोनो प्रेमपूर्वक मिले

क्षमा का मोहिनीरूप

पौराणिक आख्यान के अनुसार जब शकर ने क्रुद्ध होकर विकराल प्रलयरूप धारण किया तो विष्णु ने मोहिनीरूप बनाकर उनके प्रचण्ड क्रोध को शान्त किया.

इस आख्यान की फलश्रुति को समझिए—क्रोध का विकराल रूप क्षमा के मोहिनीरूप से ही शान्त हो सकता है.

शान्ति कहा ?

अशान्ति से छटपटाते हुए विराट ऐश्वर्य और वैभव संपन्न सम्राटों ने एक अकिंचन शान्ति देवता से पूछा—प्रभो ! शान्ति कहाँ है ? कैसे प्राप्त होगी ?

शान्ति देवता ने गम्भीर स्मित के साथ उत्तर दिया—तुम्हारे भीतर ! इच्छाओ के त्याग से वह प्राप्त होगी.

ज्ञान और भक्ति

विषयो से मन को हटाने का निषेधात्मक उपदेश ज्ञान है, मन हटाकर ईश्वर मे लगाने का विधेयात्मक रूप भक्ति है

निषेधात्मक उपदेश से जब साधना मे परितृप्ति नही मिली तो विधेयात्मक रूप भक्तिमार्ग का उदय हुआ

सेवाधर्म

सेवा करना एक अलग बात है, और सेवा को धर्म मानकर जीवन में उसकी आराधना करना बिल्कुल अलग बात है

जो सेवा को साधन नही, किन्तु साधना मानता है, जीवनधर्म के रूप मे स्वीकार करता है, और व्रत के रूप मे निभाए चलता है, वस्तुतः वह सेवाधर्मी है

बडप्पन का गज

तुम्हारे बडप्पन का गज क्या है ?

क्या तन से, धन से, जन से और बल से ही तुम अपनी महत्ता का कीर्तिमान स्थापित करना चाहते हो ?

सचमुच महानता का गज तन-धन-जन नही, किन्तु मन है

जिसका मन बडा है, वही बडा है

मित्र क्यो नही मिलता.

एक सज्जन की शिकायत थी कि उन्हे 'कोई अच्छा मित्र नही मिलता'

मै इस बात पर चिन्तन करता करता सज्जन के व्यक्तित्व का पर्दा उठाकर भीतर गहरा चला गया. देखा वहाँ, माया की कटीली झाडियो मे अहकार का नाग फन फुंकारता हुआ बैठा है अपनी विष ज्वालाओ से आस-पास का वातावरण जहरीला बना रखा है.
मैने सोचा-जहाँ कपट के तीखे कांटो के बीच अहङ्कार का नाग छिपा

है, क्या वहाँ कोई मित्रता का चरण वढानेवाला आ सकता है ? उन सज्जन की यह शिकायत दुनियाँ से नही, अपने आप से ही है.

मौन

मौन रहना अपने मे कुछ महत्व नही रखता !

मौन का महत्व है उसके उद्देश्य मे, मौन यदि भय से प्रेरित है तो वह पशुता का चिन्ह है, संयम मे उत्पन्न मौन—साधुता है.

मौन : शक्ति का स्रोत

शक्ति को संचित करने का एक अपूर्व साधन है—मौन !

मौन से विकेन्द्रित शक्ति संचित होती है, वाणी मे वल और तेज जाग्रत होता है मनोवल प्रदीप्त होता है.

मौन का अर्थ

मौन का क्या अर्थ है ?

नही वोलना !

यह स्थूल अर्थ है—और प्राय. साधारण मनुष्य इसी अर्थ मे 'मौन' का भाव ग्रहण करते है

क्या मौन का यह अर्थ गलत है ?

गलत नही, किन्तु अपूर्ण अवश्य है, अधूरा है

मौन का सही अर्थ समझाने के लिए प्राचीन आचार्यों ने ये चार रूप वतलाए हैं

१—वाणी का मौन—चुप रहना, सावद्य वचन न वोलना

२—मन का मौन— मन मे असत् विकल्पो का न उठना, इधर-उधर न भटकना.

३—शरीर का मौन--इन्द्रियो को विषयों से निवृत्त रखना, शान्त रखना

४—आत्मा का मौन--समस्त वाह्य भावों से पराङ्मुख रहकर आत्मभाव में निमग्न होना

प्रथम मौन सामान्य है, अन्तिम मौन सर्वोत्कृष्ट।

मौन और मुनि

साधना के द्वार पर मौन की ओर क्रमशः बढने वाला साधक मौनी—मुनि कहलाता है

मौन रखने वाला मुनि होता है—"मौनाद्मुनि"

पर, कैसा मौन ?

वाणी का, मन का, या आत्मा का ? वस्तुत जो आत्मा का मौन रखता है, वही 'मुनि' होता है

मनन और मुनि

महात्मा बुद्ध ने कहा है—

'यो मुनाति उभे लोके मुनि तेन पवुच्चति' (धम्मपद)

जो दोनो लोको का मनन करता है, वह मुनि है अर्थात् जो साधक जीवन के इस पार और उस पार—दोनो पार आनन्द, सुख एव समृद्धि का दर्शन करता है, और उसे प्राप्त कराने वाला अनुकूल आचरण करता है, वही वस्तुत. मुनि है

मनन—एक लोक का नही, उभय लोकानुसारी होना चाहिए

'या लोकद्वयसाधनी तनुभृता सा चातुरी चातुरी'

वस्तत जो उभयलोक को सफल करने वाला चिन्तन है, वही चिन्तन है, वही चातुरी है, वही मनन है और वही मुनि है

हीरे के समान

हीरे के समान तुम्हारे जीवन मे निर्मल कान्ति और आभा है तो फिर चिन्ता न करो, अपने आप स्वर्णसिंहासन मिल जायेगा.

पश्चात्ताप का पानी

पश्चात्ताप का पानी भूलो की गन्दगी को धोकर साफ कर देता है

पश्चात्ताप प्रायश्चित्त

पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त दोष विशोधन की दो क्रमिक सीढियाँ हैं. प्रायश्चित्त वही कर सकेगा जिसके मन मे अपने कृत पापो के प्रति पश्चात्ताप होगा.
पश्चात्ताप से पाप जल जाते है, प्रायश्चित्त उन्हे बुहारकर साफ कर देता है.

जीभ और दांत

एक दिन दातो ने जीभ से कहा—तुम दिनभर चपर-चपर करती रहती हो, यह ठीक नही, हम बत्तीस है, कही बिगड गए तो तुम्हारा कचूमर निकाल देगे.
जीभ धीमे से मुस्कराई, भैया ! बत्तीसो के बीच मे अकेली बैठी हूँ, तो समझलो कुछ है ! कभी कुछ कह दूंगी तो बत्तीसो को तुडवा डालूगी !

ऋणमुक्ति

इच्छा और आसक्ति से प्रेरित होकर जो धनसग्रह किया जाता है, वह समाज का ऋण है.
सेवा और परहित मे अर्पण करने से व्यक्ति उस से उऋण (ऋणमुक्त) हो सकता है.

कर्म और वृत्ति

कर्म दूषित हो गया हो तो घबराने की कोई बात नही, किन्तु वृत्ति दूषित नही होनी चाहिए.
कर्म वस्त्र है, वृत्ति जल है, कर्म को वृत्ति पवित्र बना सकती है, किन्तु वृत्ति ही दूषित हो गई तो ?

सेवा

सेवा का महत्व इस बात में नही है कि वह छोटी है या बडी ! किन्तु इस बात मे है कि वह पवित्र है या अपवित्र, शुद्ध भाव से की गई है या अशुद्ध भाव से ! किसी स्वार्थवश की गई है, या निष्काम परार्थ वृत्ति से

चिन्तन की चाँदनी

जी
व
न
द
र्श
न

जीवन एक विराट् अखण्ड सरित् प्रवाह है सरिता में आया हुआ, कूड़ा-कचरा जिस प्रकार उच्छलनलहरों द्वारा बाहर फेंक दिया जाता है, और सरिता का नीर सदा निर्मल, स्वच्छ बना रहता है

उसी प्रकार जीवन-सरिता में विचार और आचार की लहरें निरन्तर उछलती हुई उसमें आया हुआ असद् विचार व असद् आचार का कूड़ा बाहर फेंकती हुई इस धारा को सतत स्वच्छ बनाए रखती है.

विचार व आचार की इन विविध तरंगों का रमणीय रूप ही जीवन है.

जीवन दर्शन—अर्थात् अन्तर्दर्शन! अपने उदात्त और ऊर्ध्वगामी ध्येय के प्रति निष्ठापूर्वक गतिशील रहना, विचार और आचार की उदात्तता, पवित्रता और रमणीयता, बस यही हमारा जीवन-दर्शन है.

जीवन—दर्शन

•

जीने का तरीका

जीने के दो तरीके हैं—अंगार और राख

तुम्हे जीना है तो अन्तरग की उष्मा को बनाए रखो, अगार की तरह तेजस्वी और प्रकाशमान बन कर जीओ ! राख की तरह निस्तेज, रूक्ष और मलिन बनकर नही !

अन्तर्दृष्टि

जीवन एक दर्पण है, दर्पण के सामने जैसा बिम्ब आता है, उसका प्रतिबिम्ब दर्पण मे अवश्य पड़ता है जब आप दूसरों के दोषों का दर्शन करेंगे, चिन्तन और स्मरण करेगे तो उनका प्रतिबिम्ब आपके मनोरूप दर्पण पर अवश्य चित्रित होता रहेगा. प्रकारान्तर से वे ही दोष चुपचाप आपके जीवन में अकुरित हो जाएंगे

इसीलिए भगवान महावीर का यह अमरसूत्र हमे सर्वदा स्मरण रखना चाहिए—'सपिक्खए अप्पगमप्पएणं" सदा अपने से अपना निरीक्षण करते रहना चाहिए दृष्टि को मूंदकर अन्तर्दृष्टि से देखना चाहिए. आत्मा का अनन्त सौन्दर्य दिखलाई पड़ेगा.

चार स्तर

जीवन के चार स्तर है—

जो विकार व वासनाओ का दास है—वह पशु है.

जो विकारो पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है—वह मनुष्य है.

जिसने विकारों पर यत्किंचित् विजय प्राप्त करली—वह देव है.

जो सम्पूर्ण विकारों पर विजय प्राप्त कर चुका—वह देवाधिदेव है.

त्रिभुज

विजली के पंखे के त्रिभुज की तरह जीवन के त्रिभुज हैं—वुद्धि, भावना और कर्म, अर्थात् ज्ञान-दर्शन-चारित्र।

अनुशासन कला है.

अनुशासन करना भी एक कला है. कव कहा जाए और कव सहा जाए इस विज्ञान को समझने वाला ही दूसरो पर अनुशासन कर सकता है. केवल कहा जायेगा तो स्नेह का धागा टूट जाएगा केवल सहा जाएगा तो धैर्य का धागा हाथ से छूट जाएगा.

कहना, सहना की मर्यादा को समझने वाला ही सच्चा अनुशास्ता हो सकता है.

साधक का मन

साधक का मन संसार में दर्पण की तरह रहता है. विश्व की हलचल का प्रतिविम्ब उस पर अवश्य गिरता है, किन्तु वह उसके भीतर सस्कार नही वन पाता.

जीवन को तपाइए

जल को तपाइए, वह वाष्प वनकर आकाश को छूने लगेगा.
जीवन को तपाइए, वह हल्का होकर ऊर्ध्वगामी वनेगा.

भगवान महावीर ने उस जीवन को श्रेष्ठ जीवन बताया है, जो बाहर भीतर एक रूप हो 'जहा अंतो तहा बाहिं" जैसा भीतर वैसा बाहर !
वस्तुत वह अगूरी जीवन है. जिसका बाहर भीतर एक समान मधुर, मृदुल और सरल होता है

जीवन अखण्ड सत्ता है.

जीवन एक अखण्ड सत्ता है, उसे 'व्यक्तिगत जीवन' और 'सार्वजनिक जीवन' इन दो खण्डो मे विभक्त करना उसके सहज सौदर्य को नष्ट करना है
जीवन का सत्य, शिव. सुन्दर' रूप उसकी अखण्डता मे है एकरूपता मे है. उसे अनेक मुखोटो मे व्यक्त करना तो बहुरूपियापन है.

दो चिडिया

एक चिडिया — काले कजरारे बादलो मे अपना घोसला बनाने के लिए अनन्त आकाश मे उडान भरने लगी. हवा के झोके से बादल इधर-उधर भटकते बिखराते और चिड़िया भी उनके पीछे-पीछे भटकती-भटकती क्लान्त श्रान्त हो गई बादलो मे उसे कही ठौर नहीं मिली दूसरी चिड़िया—पर्वत के उच्च शिखर पर अपना घोसला बनाने को चली. कुछ ही समय में वह पर्वत शिखर पर पहुँच गई और एक सुरक्षित स्थान पर सुन्दर छोटा-सा घोसला बनाकर आनन्द से रहने लगी.
मानव ! तुम्हारा लक्ष्य किधर है ? क्षणभगुर सुहाने बादलो की ओर या अचल पर्वत शिखर की ओर ? चिडिया की गति का परिणाम देखकर अपना लक्ष्य पुन॰ सोच-विचार कर स्थिर करो ।

सफनता का गुर

कार्य में सफल होने का एक सबसे बडा गुर है—प्रसन्नता मे कार्य प्रारभ करो और समाप्त नही होने तक जुटे रहो

संघर्ष ही जीवन है. संघर्ष से आगे बढने की प्रेरणा स्फूर्त होती है. जीवन मे तेजस्विता व परिपक्वता आती है संघर्ष से कतराने वाला जीवन मे प्रगति नहीं कर सकता.

गुणग्रहण की दृष्टि !

हर एक व्यक्ति में कोई न कोई गुण या विशेषता अवश्य रहती है. यदि आप मे देखने की दृष्टि है, और ग्रहण करने की क्षमता है तो हर व्यक्ति से आप गुण या शिक्षा ग्रहण कर सकते है और अपने जीवन को महान बना सकते हैं

जीवन विद्यालय है

यदि विश्व की घटनाओ को पढ़ने की दृष्टि खुली है तो जीवन का प्रत्येक क्षेत्र विद्यालय है. जगत की प्रत्येक घटना और प्रत्येक पुरुष गुरु है. उनसे आप कोई न कोई नया पाठ सीख सकते है.

कच्चा घडा

कच्चे घड़े में रखा हुआ अमृत स्वय भी नष्ट हो जाता है, और घड़ा भी फूट जाता है.

कच्चे साधक को दिया हुआ सद्ज्ञान, स्वय भी विनष्ट हो जाता है और साधक भी मार्ग च्युत हो जाता है.

इसीलिए आचार्य ने कहा है—"आमकुम्भा इव वारिगर्भा" कच्चे घड़े मे पानी की तरह कच्चे साधक का ज्ञान स्वय को भी नष्ट करता है, और ज्ञान भी व्यर्थ जाता है ।

मया हुआ कार्यकर्ता

पका हुआ घडा, तपा हुआ सोना और मया हुआ कार्यकर्ता सर्वत्र ही आदरणीय होता है.

पक्का घड़ा

जो घड़ा अग्नि मे तपकर पका नही, वह न पानी धारण कर सकता है और न अन्य कुछ भी।

जो व्यक्ति साधना की अग्नि मे तपकर परिपक्व नही बना, वह सद्गुणो को कैसे धारण कर सकता है ?

दो प्रकार की मनोवृत्ति

ससार मे दो प्रकार की मनोवृत्ति है—

श्वान वृत्ति—कुत्ता पत्थर पर झपटता है, पत्थर मारने वाले पर नही. श्वान वृत्ति वाले व्यक्ति कष्टो के पीछे परेशान होते हैं, कष्ट के मूल कारण को नष्ट नही करते.

सिह वृत्ति—सिह पत्थर पर नही, पत्थर मारने वाले पर झपटता है सिह वृत्ति वाले व्यक्ति कष्टो की परवाह नही करते, किन्तु उनके कारणो को ही नष्ट करना चाहते हैं.

अध्यात्म की भाषा मे पहली निमित्त-परक दृष्टि है, दूसरी उपादान-परक !

जीवन

वर्फ के टुकडे की तरह यह जीवन प्रतिक्षण गलता जा रहा है

पूरव की धूप की तरह यह जीवन प्रतिपल पश्चिम की ओर ढलता जा रहा है.

मानव ! सावधान हो ! वर्फ के गलने से पहले, दिन के ढलने से पहले उसका सदुपयोग करलो

जीवन सफर है.

छोटी-सी सफर और यात्रा के लिए कितनी तैयारी करते हो ? इस-लिए कि कही आगे कष्ट उठाना न पड़े !

जीवन की अगली सफर के लिए क्या कुछ तैयारी कर रहे हो ?

यह कितना बड़ा आश्चर्य है कि छोटी-सी सफर के लिए इतनी तैयारी ? और इतनी लम्बी सफर के लिए इतनी लापरवाही ?

वशीकरण मंत्र

किसी भक्त ने एक सिद्धयोगी से विश्व को वश में करने के लिए वशीकरण मंत्र पूछा.

योगी ने बतलाया—वशीकरण मंत्र तो बतलाता हूं, किन्तु उसकी साधना करनी होगी.

भक्त साधना के लिए वचनबद्ध होकर मंत्र पूछने लगा तो योगी ने बताया - नम्रता और मधुरवचन ये दो ऐसे वशीकरण हैं, जिससे समस्त संसार तुम्हारे वश में आ सकता है, किन्तु इनकी साधना सतत चालू रखनी होती है.

सुख-दुख भी अतिथि है

भारतीय संस्कृति में अतिथि देवता का प्रतिरूप है, देवता की भांति उसका स्वागत किया जाता है

सुख दुख भी जीवन के अतिथि हैं, फिर इनका भी स्वागत क्यों नहीं किया जाए ?

आदरणीय, आचरणीय

महापुरुषों के उदात्त जीवन चरित्र को केवल आदरणीय ही नहीं, उसे आचरणीय भी बनाइए !

अमृत की प्रशंसा और स्तुति करने मात्र से कभी कोई अमर नहीं बन सका.

जल-जल पुकारने से कभी किसी की प्यास नहीं बुझी।

फिर महापुरुषों की स्तुति करने मात्र से महान् कैसे बन जाओगे !

मिठाइयो की सूची बनाने से तो अच्छा है कि रूखी-सूखी रोटी खाकर ही पेट भर लिया जाए !

आमके पेडो की सिर्फ गणना करने से तो अच्छा है कि बेर खाकर ही क्षुधा शान्त करली जाए !

लकडी का बादाम

क्या मिट्टी के सुन्दर फलो से कभी मधुर-रस प्राप्त हुआ है ?
क्या लकड़ी के मेवे और बादाम से दिमाग को स्निग्धता और ताजगी मिली है ? नही !

तो फिर केवल पुस्तकीय ज्ञान से हृदय मे आलोक कैसे जगमगाएगा ?
और केवल शाब्दिक ज्ञान से निर्वाण का परमसुख कैसे प्राप्त होगा ?
भूख मिटाने के लिए वास्तविक फल चाहिए, और निर्वाण प्राप्त करने के लिए ज्ञानमय आचरण चाहिए

विकार वृद्धि

आचारहीन विचारक्रान्ति से विचारो की शुद्धि नही, किन्तु विकारो की वृद्धि होती है। जैसे कि दूषित वायु सेवन से स्वास्थ्य की शुद्धि नही, किन्तु रोग की वृद्धि होती है.

शीशे की आख

शीशे की आख देखने के लिए नही, केवल दिखाने के लिए होती है वैसे ही आचारहीन ज्ञान आत्म-दर्शन के लिए नही, किन्त अह प्रदर्शन के लिए होता है.

सर्वश्रेष्ठ

विश्व के समस्त प्राणियो मे मानव श्रेष्ठ है, समस्त मानवो मे ज्ञानी श्रेष्ठ है और समस्त ज्ञानियो मे आचारवान ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है.

पहले खुद चख लें!

भोजन पकाने वाला पहले शाक आदि बनाकर स्वयं चखता है, उसका स्वाद आदि देखता है. इसी प्रकार उपदेश करने वाले को पहले अपने तत्वज्ञान का स्वय आस्वाद (आचरण) करके फिर उपदेश करना चाहिए.

आत्मा की प्रतिध्वनि

आचार आत्मा की प्रतिध्वनि है और विचार बुद्धि की कौतुक-क्रीड़ा! आचार हृदय सापेक्ष है और विचार अध्ययन एव मन से प्रतिफलित। आचार और विचार का मधुर मिलन ही हृदय और बुद्धि का सगम है, आत्मा और मन का सम्मिलन।

त्रिवेणी

जिस जीवन मे विनय, विवेक और विद्या की पावन त्रिवेणी वह रही हो, वह जीवन स्वय मे एक पुण्यतीर्थ हैं, जन, मन की श्रद्धा का पावन केन्द्र है.

गुलदस्ते का फूल

आचारहीन विचार गुलदस्ते का वह फूल है. जिसका रूप रग कितना ही मोहक हो, जिसकी सौरभ कितनी ही मादक हो, किन्तु वह कितनी देर के लिए?

वह टहनी से टूट चुका. पृथ्वी से उसे पोषण नहीं मिल रहा है, वह कुछ क्षण मे ही मुरझा जायेगा

जिन विचारो को जीवन-रस का पोषण नही मिल पा रहा है, क्या वे उस फूल की तरह कुछ ही क्षणो मे मुरझा नही जायेंगे?

चरित्र का तैल

दीपक में तैल डाले बिना वह प्रज्ज्वलित नही हो सकता, आलोक

नही दे सकता, वैसे ही जीवन दीपक मे चरित्र का तैल दिए बिना वह ससार को क्या, अपने घर को भी आलोकित कैसे कर पायेगा ?

मजाक

मैंने देखा—एक अस्वच्छ, मलिन और गन्दा व्यक्ति गला फाड-फाडकर दुनिया को स्वच्छता और सफाई का उपदेश कर रहा था।

और दूसरी ओर देखा—एक दुराचारी पडित ऊँचे स्वर से नैतिकता और सदाचार की कहानियाँ सुना कर जनता को सदाचार की शिक्षा दे रहा था.

दोनो मे क्या अन्तर है ?

क्या दोनो ही स्वच्छता और सदाचार की मजाक नही कर रहे हैं ?

जीवन का वगीचा

तुम्हारे जीवन के वगीचे मे केवल शब्दो का घास-पात खडा है, मीठी और आदर्श बातो की हरियाली भी खूब है, किन्तु भाव और कर्म का कोई भी फलवान वृक्ष नजर नही आता !

कैसा है यह तुम्हारा जीवन-वगीचा !

आचार का फ्रेम

तुम्हारे विचारो की तस्वीर भले ही सुन्दर है, मनोमोहक है, किन्तु जब तक वह आचार के फ्रेम में नही मढी जा सकती, तब तक जीवन रूपी गृह की शोभा कैसे बढाएगी !

विचारो की तस्वीर को आचार के फ्रेम मे मढवा दो ! तस्वीर भी चमक उठेगी और घर भी !

कैमरा-एक्सरे

प्रभो ! मेरी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अन्तर्भेदी होती जाए.

मेरी दृष्टि केमरा के समान वाह्य वातावरण को अंकित करने में ही केन्द्रित न हो जाए।

मेरी दृष्टि एक्सरे के समान अन्तर्भेदी हो, वाह्य को नही, अन्दर को देखे, तन को नही, मन की गति को देखें, देह को नहीं, आत्मा को परखें जड को नहीं, चैतन्य का दर्शन करे.

प्रभो ! मेरी दृष्टि मे वह तेज जागृत हो, समस्त वाह्य आवरणों को चीरकर अन्तःस्थित आत्मदेव के दर्शन कर सके.

खाने के तीन मानदण्ड

भूख से कम खाने से—शरीर मे स्फूर्ति और स्वास्थ्य अच्छा रहता है.
भर पेट खाने से—शरीर में आलस्य एवं जडता बढती है.

भूख से अधिक खाने से—शरीर निकम्मा और रोगी हो जाता है

कितना खाएं ?

खाना कितना खाएं ? इस सम्बन्ध मे एक प्राचीन कहानी घ्यान देने योग्य है—

ईरान के एक वादशाह अदशीर वावकान ने अपने हकीम से पूछा—हमको दिन-रात मे कितना खाना चाहिए ?

हकीम ने जवाव दिया—१०० दिरम (अर्थात् ३६ तोला)

वादशाह घवराया हुआ-सा वोला—इतने कम खाने मे शरीर कैसे चलेगा ?

हकीम ने उत्तर दिया—शरीर के पोषण के लिए इससे अधिक नहीं चाहिए. वोझ ढोने के लिए जितना चाहे पेट में भर लें।

भगवान महावीर ने भोजन के सम्वन्ध मे साधक को वार-वार यही निर्देश दिया है अल्प आहार करें, परिमित भोजन करें.

'अप्पाहारे, मियासणे', अप्पपिण्डामिपाणासि, आदि साधक के ये विशेषण वात के सूचक हैं.

श्रीमत सेठ के घर पर पुत्रविवाह की धूमधाम मची हुई थी. हजारो मित्र-स्वजन आ जा रहे थे नाना प्रकार के मिष्ठानो से दावत का रग जम रहा था बची हुई जूठन बाहर फैंकी जा रही थी.

जूठन पर एक कौआ कुरा-कुरा करता हुआ आया, आस पास के अपने जाति बन्धुओं को बुला लाया और सभी मिलकर फुदक-फुदक कर खाने लगे.

दूसरी ओर जूठन पर कुत्तों की एक टोली लपक पडी दो चार कुत्ते इकट्ठे हुए. गुर्र-गुर्र होने लगी, एक दूसरे को भोंकने लगे, काटने और भगाने लगे आखिर एक जबर्दस्त कुत्ता जूठन पर अधिकार करके अकेला ही खाने लगा. बाकी कुत्ते दूर-दूर खडे जीभ लपलपा रहे थे

एक ओर कौओ का भ्रातृ मिलन ! प्रेम निमत्रण ! दूसरी ओर कुत्तो का जाति विद्वेष, गुर्राकर अकेले खाना ! मेरे चिन्तन के तार झन-झना उठे—

सभ्यता की ऊँची बात करने वाले मनुष्यो ! तुम्हारे खाने का तरीका कौन-सा है ?

राजा और राजनीति

एक चीनी सत से किसी राजनीति के खिलाडी ने प्रश्न किया— सबसे अच्छा राजा कैसा होता है, और सबसे श्रेष्ठ राजनीति क्या है ?

महात्मा कुछ देर मौन रहने के बाद बोले —

सबसे अच्छा राजा वह है, जिसके बारे मे जनता केवल इतना जानती है कि— वह जीवित है और उसका राज चल रहा है

दूसरे दर्जे का राजा वह है, जिसके सम्बन्ध मे जनता काफी जानती है, और उसकी प्रशसा भी करती हो

जिन राजाओ से जनता भय खाती रहती है—वे निकृष्ट राजा है.

और सब से निकृष्ट राजा वे हैं जिनकी निन्दा जनता खुले आम करती हो—सन्त ने कहकर प्रश्नकर्त्ता की ओर देखा !

प्रश्नकर्ता जिज्ञासा भरी दृष्टि से संत के मुख की ओर देखता रहा, वह उत्सुक भी था, अतृप्त-सा भी संत ने राजनीति का मर्म समझाते हुए कहा—

जनता का जीवन, धान के पौधो का जीवन है, और राजा का जीवन पवन का जीवन है। पवन जिधर को जायेगा, धान के पौधे उधर ही झुक जायेंगे. शासक यदि सदाचारी होगा तो जनता को सदाचार के मार्ग पर चलाने के लिए आदेश निकालने की जरूरत नही होगी.

जनता का हृदय सहज ही स्वच्छ एव द्रवणशील होता है उसमें हस्त-क्षेप करना योग्य नही. कानून का दबाव और सजा की धमकी— दोनो ही स्वस्थ प्रशासन का चिन्ह नही है.

कानून जितने अधिक बनेंगे, चोरो की संख्या भी उतनी ही अधिक बढ़ती जायेगी.

अच्छा शासक वह है, जो अफसर और कानून की जगह जनता के विश्वास पर चलता हो और अच्छी राजनीति वह है—जो भय के आधार पर नहीं, विश्वास और प्रेम के आधार पर खडी हो.

प्रश्नकर्ता ने एक परितृप्ति के साथ संत को अपना राजनीति-गुरु स्वीकार किया और चल पडा.

अफसर और बाघ

जहाँ शासक आलसी, और अदक्ष होता है, वहाँ अधिकारी तेजतर्रार, दुष्ट और चोर होते है और जहाँ अधिकारी दुष्ट एव चोर होते हैं उस राज्य मे जनता कभी-भी सुखी नही हो सकती.

इसीलिए यह चीनी कहावत प्रसिद्ध है—"लोभी और चोर अधिकारी नरभक्षी बाघो से भी अधिक भयानक होते है"

कहते हैं कि एक कुशासक के राज्य मे एक गाँव था, जो पहाडों और जंगलो के बीच पड़ता था. बाघ जब तब जगल मे निकल कर आते और एकाध मनुष्य को चट कर जाते.

एक यात्री वहाँ आया, गाँव वालों की परेशानी सुनकर कहा—यहाँ से कुछ ही दूर पर अमुक गाँव है, वहाँ जाकर क्यो नही बस जाते, वहाँ तो बाघो का कोई भय नही.

गाव वाले एक साथ बोल पडे—अरे ! क्या कहते हो ? वहां के तो अफसर लोग ही वाघ है. न जाने किस समय आए और किस घर से किसको उठाकर ले जायें ? हम यहाँ से नही जाएगें.

वस्तुत सदाचारी शासक जनता का पिता व बन्धु होता है, तो दुराचारी लोभी शासक बाघ, व खूखार भेडिये से कम नही है.

जीवन की परिभाषा

गुरु से शिष्य ने पूछा—जीवन क्या है ?

गुरु ने गम्भीर भाव मुद्रा मे तीन चित्र उपस्थित किए

एक चित्र प्रस्तुत करते हुए गुरु ने कहा—यह बालक का चित्र है

दूसरा चित्र स्वस्थ स्फूर्त युवक का था और तीसरा चित्र गम्भीर वृद्ध पुरुष का.

गुरु ने शिष्य की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा, और फिर समाधान की भाषा मे बोले—बचपन की चचलता, यौवन का उत्साह और बुढापे की गम्भीर विचारशीलता—इन तीनो का समवाय है—जीवन !

शिष्य ने प्रसन्न होकर गुरु को प्रणाम किया .

जीवन का बोझ !

एक दुर्बल, जरा जीर्ण वूढा जेठ की दुपहरी मे लकड़ियो का बोझ सिर पर उठाए हाफता हुआ चला जा रहा था चिलचिलाती धूप और सिर पर भारी बोझ—वृद्ध घबरा उठा, इस घबराहट-अकुलाहट मे ही उसके मन मे इस दीन-हीन जीवन के प्रति घृणा और निराशा जगने लगी

विचारो की उथल पुथल मे वृद्ध ने सिर पर का गट्ठर उतार कर एक पेड के नीचे पटक दिया, और छाया मे सुस्ताता हुआ आर्तस्वर मे पुकार उठा—"हे मृत्यु देवता ! कहां चले गए ! मुझ अपनी शरण मे क्यो नही ले लेते !"

कहते हैं वृद्ध की पुकार यमराज ने सुनी और एक दूत को वृद्ध के पास भेज दिया.

दूत ने वृद्ध के पास आकर कहा—कहो, क्या चाहते हो? यमराज ने तुम्हारी पुकार पर मुझे सहायता करने के लिए भेजा है, क्या कुछ काम है?"

यमदूत की सूरत देखते ही बुड्ढे की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई वह घबराया, और हाथ जोड़कर बोला—"महाराज! कुछ नहीं, यही कि यह गट्ठर उठाकर मेरे माथे पर धर दीजिए।"

यमदूत कुछ देर वृद्ध की ओर घूरकर देखता रहा, आखिर मे एक व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोझ वृद्ध के सिर पर धर दिया, बुड्ढा हांफता हुआ आगे चल दिया

हिन्दू की परिभाषा

एक आचार्य ने हिन्दू की परिभाषा करते हुए लिखा है—हिंसा से जिसका चित्त दु खित होता हो, वह हिन्दू. हिंसया चित्त दुनोति यस्य स हिन्दु..

हिन्दू-करुणा और प्रेम का एक रूप है। सहयोग और सद्भाव की परिभाषा है.

क्या आज का हिन्दू अपने इस मूल स्वरूप की रक्षा कर रहा है?

अलंकार : अहकार

राम धरती का अलंकार है, रावण धरती का अहकार!

जो स्वयं रमता है (आनन्दित रहता है) और दूसरो को रमाता है—वह राम है.

जो स्वय रुदन करता है, और दूसरों को भी रुलाता, है वह रावण है.

भरत . भरण का प्रतीक

भरत भारतीय सस्कृति मे भरण—(सज्जनो के पालन-पोषण) का प्रतीक है.

जो अपने हृदय को सदा सद्गुणो से भरा रखता है, और दूसरो के हृदय को भी सद्गुणो से भरता है, वह भरत है.

शत्रुघ्न !

राम का सहोदर होने का वही अधिकारी है—जो शत्रुघ्न होगा अर्थात् काम, क्रोध, मात्सर्य, आदि शत्रुओ का हनन करने वाला हो शत्रुघ्न का पद पा सकता है

लक्ष्मी · लक्ष्मण

जो सुलक्षणो (सदगुणो) से युक्त है, वह इस युग का लक्ष्मण है.

भारतीय सस्कृति लक्ष्मी सपन्न को नही, किन्तु लक्षण सपन्न को ही महापुरुष मानती है

राम लक्ष्मी से नही, किन्तु लक्ष्मण से ही सदा प्यार करते थे

काम · राम आराम

जहाँ काम है, वहा राम (विवेक) नही रह सकेगा जहाँ राम नही रहेगा वहा आराम (आनन्द) कैसे रहेगा ?

आराम पाने के लिए राम को रखिए, राम को रखने के लिए काम रूपी रावण को परास्त करना ही होगा

√ चरित्र की रक्षा

अपने चरित्र की सदा सावधानी से रक्षा कीजिए वह काच के बरतन की तरह इतना नाजुक है कि एक बार ठेस लगते ही चकनाचूर हो जाता है

√ विजेता कौन ?

ससार में सबसे बडे तीन शत्रु हैं—

दरिद्रता

रोग.

मूर्खता.

जो इन शत्रुओं को जीतता है, वही ससार मे विजेता का पद प्राप्त करता है.

पिता का ऋण

एक दिन आकाश मे काली घटाएँ छाई हुई थी, बादल गर्ज-गर्ज गहरा रहे थे सागर की छाती पर

सागर ने व्यथित स्वर मे बादलो को पुकारा—"बेटा ! जिसने जीवन पाया, क्या उसी के सिर पर यो निर्लज्ज होकर गरज रहे हो ?"

बादल बौखला उठे, कडक-कड़क कर बिजलियाँ कौंधने लगी, गडगड़ करते हुए ओलो ने सागर की छाती को क्षण भर मे बीध डाला।"

सन्त्रस्त सागर ने गहरा नि श्वास खीचा– "ओ मेरे प्रिय पुत्र ! क्या इसी प्रकार पिता के ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करोगे ?"

जीवन-शोधन

'जीवन निर्वाह' ध्येय नही हो सकता, यह तो एक वृत्ति मात्र है हमारा ध्येय है—जीवन-शोधन !

जिसका लक्ष्य जीवन-शोधन पर केन्द्रित है, वह कभी भी, किसी भी परिस्थिति मे 'जीवन निर्वाह' के निम्न तरीके नहीं अपना सकता.

जीवन सगीत

जीवन एक संगीत है. स्वर, वाद्य और ताल के सुमेल में ही संगीत की मधुरिमा है, जीवन–सगीत की स्वर-संगति आज विषम हो रही है. आत्म-देव का स्वर किसी अन्य रूप मे मुखरित हो रहा है तो वाणी का तबला कुछ अन्य राग आलाप रहा है, और आचरणो की तान तो कुछ अलग ही झनझना रही है. तीनों की विसगति से जीवन का संगीत विषम हो रहा है.

भूकम्प का झटका

भूकम्प का हल्का-सा झटका अनुभव होते ही जनता सावधान होकर घरो से निकलकर बाहर आ जाती है.

मन में विचारों का हल्का-सा झटका लगते ही प्रबुद्ध साधक सावधान होकर सकल्प-विकल्प की परिधि से बाहर निकल कर खड़ा हो जाता है

जीवन का रहस्य

एक दिन की बरसात ने मुझे जीवन का रहस्य समझा दिया !

काले-कजरारे गहन बादलो को चीरती हुई एक प्रभामयी विद्युत् रेखा चमक गई, क्षण भर के लिए दिशाएँ जगमगा उठी !

देखने वालो की आँखे चुधिया गई . आशा भरी नजर से ससार ने कहा – बहुत जोर से चमकी !

तभी मेघ की गभीर गर्जना से धरती-आकाश गडगड़ा उठा !

ससार ने विश्वास के साथ कहा—अब बहुत जोर से पानी बरसेगा.

मैंने चिन्तन सूत्र जोडा—चमकने के बाद गर्जना सार्थक है, विश्वसनीय है

पर, मैंने देखा कि आज का मानव तो चमकने से पहले ही गर्जना शुरू कर देता है, निस्तेज जीवन ! और धु आधार भाषण !

दो प्रकार के साधक

कुछ साधक धातु-पात्र के समान होते हैं, ये मान-अपमान, क्षुधा-पिपासा आदि सकटो की चोट खाकर भी अक्षुण्ण, अविभक्त बने रहते हैं

कुछ साधक मिट्टी के पात्र के समान होते है, वे मन पर छोटी-सी भी चोट लगते ही खण्ड-खण्ड हो कर बिखर जाते हैं,

जीवन सिद्धि का मत्र

भोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखता है स्वतन्त्रता अपना स्वार्थ भी देखती

है, और परमार्थ भी. संयम सिर्फ परमार्थ देखता है.

भोग से स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता से संयम—तीनो का यह क्रमिक आरोहण ऊर्ध्वगमन है, जीवन सिद्धि का मन्त्र है

तीन योग

गीता में तीनो योग का उपदेश है—भक्तियोग, ज्ञानयोग, एवं कर्मयोग ! यह जीवन का सम्पूर्ण दर्शन है.

भक्ति मे हृदय होता है, ज्ञान मे आंखे होती हैं तथा कर्म के पैर होते हैं.

भक्ति में एक प्रकार की आकुलता है, ज्ञान मे शान्ति है, कर्म मे सजीवता है.

असर

तुम्हारी भावना मे पवित्रता और कर्तव्य मे तेजस्विता है, तो पहला असर तुम्हारे जीवन पर पडेगा दूसरी अवस्था है पडोसियो व साथियो को प्रभावित करने की और तीसरी अवस्था मे पहुचने पर उसका प्रभाव समाज व जगत को भी आवेष्ठित कर लेगा

संगति का फल

सरिता का मधुर जल सागर मे जाकर खारा क्यो हो जाता है ?

अमृत-सा मीठा दूध काजी का स्पर्श पाकर फट क्यो जाता है ?

एक ही उत्तर है—"संसर्गजा दोष गुणा भवन्ति" संगति का परिणाम है.

दुर्जन का संग

दुर्जन की संगति कभी भी सुखप्रद नही हो पाती. दुर्जन की अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनो ही दुःखप्रद होती है जैसे कि जलते हुए कोयले का स्पर्श हाथ को जला डालता है, और बुझे हुए कोयले का स्पर्श हाथ को काला कर डालता है.

बर्फ के निकट बैठने से ही मन शीतलता से प्रसन्न हो जाता है, और अग्नि के पास बैठने से गर्मी से घबराने लगता है

दुर्जन का सहवास होते ही हृदय कष्ट से अकुलाने लगता है, और सज्जन के दर्शन करते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है.

यह सगति का स्पष्ट परिणाम है

सत कबीर ने इसीलिए कहा है

कविरा सगति साधु की ज्यो गाधी की वास ।
जो कछु गाधी दे नही, तो भी वास सुवास ।

और दुर्जन की सगति कैसी है, जानते हैं ?

शरावी का सहचर्य !

शराब नही पीने पर भी उसकी दुर्गन्ध से सिर फटने लग जाता है सगति करने से पहले उसके गुण-दोष पहचान लो । अच्छी सगति से सदा आनन्द उल्लास प्राप्त होगा,और बुरी सगति से कष्ट एव पीडा !

अग्नि का स्पर्श

निस्तेज काला कोयला भी अग्नि का स्पर्श होते ही रक्त वर्ण होकर तेज से चमक उठता है तो क्या पापी और पतित व्यक्ति साधु पुरुष के ससर्ग मे आकर सज्जन और सदाचारी नही बन सकते ?

जैसा संग, वैसा रग

ईट या पत्थर की दीवाल पर लगाया गया सीमेन्ट भी ईट-पत्थर की तरह वज्र लेप बन जाता है. और यदि मिट्टी की दीवाल पर लगाया गया तो मिट्टी की तरह कमजोर ही रहेगा । जैसा सग वैसा रंग !

वन्दन, चन्दन

वन्दन, चन्दन से भी अधिक शीतल है. चंदन का लेप क्षणिक सुवास

ओर तात्कालिक ताजगी देता है. किन्तु वन्दन की मधुरिमा तो हृदय को सदगुणों के सुवास से भरकर सदा के लिए नवस्फूर्ति देती रहती है. वन्दन चमत्कार है क्रुद्ध को शान्त करता है, उद्धत को विनम्र बनाता है. विद्या का द्वार खोलता है और व्यक्तित्व पर आब चढ़ाता है

साधना का मार्ग

साधना का मार्ग पर्वत की चढाई है. उसकी अमित ऊंचाई को छूना कठिन है, किन्तु जीवन की श्रेष्ठता उसी मे है.

भोग और वासना का मार्ग चिकनी और ढालू जमीन का रास्ता है, इसलिए आसान है, किंतु खतरनाक भी !

ज्ञान : क्रिया

ज्ञान के द्वारा तत्त्व का स्वरूप समझा जाता है, क्रिया के द्वारा तत्त्व की उपलब्धि होती है.

साधना का आरोहण

आत्म-ज्ञान के विना चित्त सन्देहरहित नही होता

आत्म-प्रतीति के विना आत्मा की ओर निश्चित श्रद्धायुक्त प्रयाण नही होता आत्मानुभव के विना अखण्ड चेतन सत्ता की अनुभूति नही होती.

आत्मज्ञान से आत्म-प्रतीति और आत्म-प्रतीति मे आत्मानुभव यह साधना का क्रमिक उच्च आरोहण है.
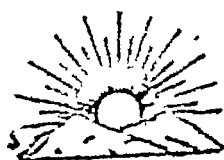
जा ग र ण

जागृति जीवन है, निद्रा मृत्यु !

जागृति में जीवन का कण-कण स्फूर्तिमान, तेजोदीप्त एव क्रियाशील रहता है

जागरण का सन्देश देते हुए एक महान् जैनाचार्य ने कहा है—

"जागरह नरा णिच्च, जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी"

मनुष्यो ! जगते रहो, जागृत मनुष्य की बुद्धि सदा स्फूर्तिमान रहती है.

उत्साह, विवेक, साहस, बुद्धिमानी, निष्ठा और सतत-जागरूक सर्वेक्षणशीलता ये सब जीवन की जागृति के मूलतत्त्व है, जागरण के प्रतीक है

जागरण

•

जागते रहो।

जगना जीवन है, सोना मृत्यु! जो सदा जगता रहता है, उसकी बुद्धि भी जगती रहती है.

प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री सघदास गणि ने कहा है—

> जागरह ! णरा णिच्चं जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी
>
> —बृह० भाष्य ३३८३

मनुष्यो जागते रहो ! जागते रहने वाले की बुद्धि भी सदा जागृत रहती है

जो सोता है, उसका ज्ञान भी सो जाता है, जो आलस्य करता है, उसकी बुद्धि स्खलित हो जाती है—

> "सुवति सुवतस्स सुय सकिय खलिय भवे पमत्तस्स"
>
> —निशीथ भाष्य ५३०४

संसार के जितने भी महापुरुष हुए हैं, बडे-बड़े वैज्ञानिक और विद्वान हुए हैं उनकी साधना का मूल मन्त्र यही रहा है—सदा जागृत रहो, कार्य मे जुटे रहो, और अखण्ड अविचल निष्ठा के साथ अपने ध्येय की आराधना करते रहो

√ आलस्य चूहा है,

आलस्य एक चूहा है, जो जीवन की डोरी को धीरे-धीरे काटता रहता है.

आलस्य खदान की एक आग है, जो धीरे-धीरे सुलग कर संपूर्ण खदान को स्वाहा कर डालती है.

जो सिद्धि का अमृत चाहता है, उसे आलस्य के जहर से बचना होगा. भगवान बुद्ध के शब्दो मे—

"पमादो मच्चुनो पद" —धम्मपद २११

प्रमाद—आलस्य ही मृत्यु का मुख है.

आचार्य संघदासगणि ने यही बात कही है—

"णालस्सेणसमं सोक्खं" —बृह० भा० ३३८५

आलस्य के साथ सुख का कोई मेल नही है

तेज प्रगट होगा

मैंने देखा एक बालक सलाई लेकर उसे दियासलाई पर रगड़ने की बजाय पत्थर पर बार-बार रगड कर उससे आग प्रकट करने की कोशिश कर रहा था. पर उसकी सलाइयाँ टूट गई, आग नही जली.

मेरे चिन्तन का सूत्र झनझनाया—मन भी एक सलाई है, किन्तु जब आत्मभाव के साथ उसकी रगड होगी तभी उससे तेज प्रकट होगा. पुद्गल रूपी पत्थर के साथ रगड करने वालो का प्रयत्न तो इसी बालक के तुल्य है

√ वृक्ष का मूल

उत्साह जीवन—वृक्ष है जिस वृक्ष का मूल सूख गया, वह वृक्ष संसार से मिट गया.

जिसका उत्साह समाप्त हो गया, वह जीवन ससार से लुप्त हो गया.

उत्साह का जहाज

जीवन समुद्र के समान है, इसमे कर्तव्य का अथाह जल भरा है तुम इस समुद्र को पार करना चाहते हो, तो उत्साह के जहाज पर चढो, और खेते जाओ, खेते जाओ किनारा अवश्य मिलेगा.

शीशेनुमा उत्साह

उत्साह को शीशे जैसा नाजुक नही, वज्र जैसा कठोर बनाइए।

शीशे पर जरा-सी आँच लगी कि वह टूट जाता है जरा-सी असफलता मिली कि उत्साह भग हो जाता है शीशेनुमा उत्साह प्रगति के पथ पर नही बढ सकता !

धूप और तूफान

क्या भीष्म ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप उन वृक्षो को सुखा सकती है, जिनकी जड़ो के नीचे मधुर जल का स्रोत प्रवाहित होता रहता है ?

क्या आधी और तूफान उन महावृक्षो को हिला सकती हैं, जिनकी जड़ें जमीन मे बहुत ही गहरी चली गई हो ?
नही।
तो फिर क्रोध की धूप उन हृदयो को शुष्क नही बना सकती, जिनके अन्तस्तल मे भक्ति की भागीरथी प्रवाहित हो रही हो

लोभ और वासना के तूफान उन महान आत्माओ को विचलित नही कर सकते जिनके चिन्तन की जडे ज्ञान की अतल गहराई को छूने लगी हो.

गजसुकुमाल, आर्यस्कन्दक और स्थूलिभद्र की जीवनगाथाएं इस सत्य को प्रतिध्वनित करती आई है.

तीक्ष्ण चिन्तन

यदि तुम्हारा चिन्तन लोहे की तीक्ष्ण कील के समान तीक्ष्ण एव सूक्ष्म हुआ तो वह जीवन के समस्त रहस्यो मे उसी प्रकार अन्तर्हित हो जायेगा जिस प्रकार कि तीक्ष्ण कील लकड़ी के सूक्ष्म छेदो में घुस जाती है।

यदि लोहे की मोटी छड़ के समान चिन्तन स्थूल ही रहा तो वह किसी भी रहस्य को नही पा सकेगा.

विश्वदर्शन: आत्मदर्शन

दूरवीक्षण यंत्र लगाकर असख्य तारो और नक्षत्रो की गणना करने वाले, एव समुद्र की अतल गहराई का दर्शन करने वाले मानव के पास आज वह दृष्टि कहा है कि वह अपने भीतर में झाककर आत्म-दर्शन भी कर सके.

विश्व दर्शन की होड़ मे आज आत्म-दर्शन कौन कर रहा है ?

सूखा वृक्ष

९ जिस वृक्ष की जड़ें सूख गई हैं, वह पानी सीचने से भी हरा-भरा नहीं होता, वल्कि सडने लग जाता है इसी प्रकार जिस हृदय मे विवेक या सद्भाव नष्ट हो चुका है, उसको सद्शिक्षा देने से लाभ नही, किन्तु हानि ही होती है

बुद्धि और हृदय

बुद्धि ने कहा—देखो मेरा चमत्कार, मैंने सब शास्त्रों का निर्माण किया है

हृदय ने कहा—मेरा चमत्कार भी देखो, मैंने सब कलाओ का आविष्कार किया है

बुद्धि सिर्फ 'सत्य' को देखती है, हृदय 'शिव' व 'सुन्दरं' को भी.

विवेक

आलस्य मे पशुता है, कर्म मे जीवन है, विवेक मे मनुष्यता है.

भौतिकबल की तात्कालिक तीक्ष्ण प्रभावशीलता हिंसक को फुसलाती है.

आत्मिकबल की शतत निश्चित सफलता अहिंसक को उत्साहित करती है.

भौतिक बलका प्रभाव क्षणिक है, आत्मिक बल का चिरस्थायी !

अवज्ञापात्र

ससार मे अवज्ञा उसी की होती है, जिसमे तेज नही होता

जलती हुई आग को कोई पैरो से नही रौदता, किन्तु राख को हर कोई रौदता है.

मानव ! तुम स्वयं तेज हो, अमृत हो—यजुर्वेदीय मत्र की भाषा मे–

"तेजोऽसि, अमृतमसि"

तुम तेज रूप हो, दीप्तिमान हो और अमृत स्वरूप हो तुम अपने स्वरूप को प्रगट करो, फिर किसकी हिम्मत है कि वह तुम्हारी अवज्ञा कर सकें.

युवा कौन ?

युवा कौन ?

जिसकी धमनियो मे उत्साह और उल्लास का रक्त दौड़ रहा है, वह वृद्ध होकर भी युवा है.

जिसके मन और बुद्धि पर आलस्य व निराशा की झुरियां पड़ गयी हैं, वह युवा होकर भी वृद्ध हैं

साहस और कायरता

सरलतापूर्वक अपने दोप और भूलो को स्वीकार करना सबसे बड़ा साहस है.

अपने दोपो पर शब्द-जाल का पर्दा डालकर छिपाना सबसे वड़ी कायरता है

नाविक कौन ?

खतरे से डरने वाला, कष्टों से घबराने वाला और आपत्तियों से भय-

भीत होने वाला, जीवन मे किसी भी तरह का क्रान्तिकारी काम नहीं कर सकता.

जो सर्वत्र भूत ही भूत देखता रहता है, उसे देवता के दर्शन कैसे हो सकते है ?

नाविक जब लंगर खोलकर चल देता है, लहरो के थपेडो से जूझता हुआ सघर्ष करता हुआ आगे बढता है, तो आधी तूफान मे पीछे नही देखता—वह किनारे तक पहुंच जाता है

जो तूफानो से घबराता है, वह नाविक नही हो सकता जिसके पास तूफानो से भिड़ जाने का होसला है, वही सफलतापूर्वक अपनी नौका खे सकता है.

परिवर्तन

'अवस्था के अनुकूल व्यवस्था'—यह स्थितिपालक मनोवृत्ति है, जिनमे परिवर्तन करने की कल्पना नही, उसे बर्दाश्त करने की क्षमता नही, उन्हे यह स्थितिपालकता स्वीकार्य है

"मानव ! तुम्हारा इतिहास विकास और क्रान्ति का इतिहास है, तुम निरन्तर आगे से आगे बढते रहे हो तुम्हारे प्राप्य की इयत्ता नहीं है, तुम्हारा लक्ष्य अनन्त आकाश से भी ऊँचा है जीवन के बधे बंधाये कठघरो मे रहने वाले तुम नही हो तुम्हे इन बन्धनो को तोड़कर जीवन मुक्त होना है विकास के चरम बिन्दु पर पहुँचना है.

लोह-शृंखलाओ को तोडकर तुम आगे बढो और अपने लक्ष्य के अनुकूल व्यवस्था बनाओ ! और उस ओर चल पडो !...

रोओ मत !

परिस्थितियों के ठुकराए युवक ! रोओ मत ! आंसू मत बहाओ !

ये आंसू, आंसू नही है, अन्त.करण के मानसरोवर मे भावनाओं की शुक्तियो मे जन्म लेने वाले ये बहुमोले मोती है

यह अश्रु-जल खारा पानी नही है ! इसमे तुम्हारे सुधा-पोषण की सुधा घुल-घुलकर बही जा रही है, मिट्टी के मोल !

तुम्हारी पराजित-सी आंखो के सम्पुट से उद्भूत यह कवोष्ण जलधारा जब गुलाबी कपोलो को भिगोती हुई नीचे उतरती है तो इसमे तुम्हारा शौर्य लजाता हुआ-सा बहता है
ये 'आंसू तुम्हे दर्शक जनता के दया-पात्र बना सकते है, श्रद्धा-पात्र नही'।
तुम्हारी धमनियो मे दौडता हुआ साहस का उष्ण रक्त, आँसू के माध्यम से अपनी उष्मा समाप्त किए जा रहा है !
युवक ! तुम अग्निपुंज हो ! तेज स्वरूप हो ! रोना, नीचे गिरना, तुम्हारा लक्ष्य नही हृदय को रिक्त किए—सुनसान बैठना युवक शक्ति का अपमान है
उठो ! साहस और सत्सकल्प से मन को भरो ! विश्व की रिक्तता को कर्तव्य से पूर्ण करो ।—

"लोक पृण, छिद्र पृण !" —यजुर्वेद १२।५४

तुम समस्त विश्व की रिक्तता को भर दो । जगत के समस्त छिद्रो को भर दो ! स्वय पूर्ण होकर ससार को पूर्ण बनाओ !...

सिद्धि एक से नही.

एक अगुली से कभी गाठ नही खुलती, एक हाथ से कभी ताली नही बजती, एक पाव से कभी चला नही जाता फिर एकांगी साधना से प्रभु को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

केवल वाणी की प्रार्थना प्रार्थना नही, वाणी-विलास है प्रार्थना मे मन और वचन दोनो मिलने चाहिए, मन की पवित्रता एव तल्लीनता जब होगी तभी वचन व्यापार प्रार्थना का रूप लेगा और जीवन की सिद्धि का द्वार उन्मुक्त करेगा

अपने बल पर...

कष्टो से वे घबराते है जिनमे साहस की कमी होती हैं, और दूसरो का सहारा वे ताकते है जिनका आत्म-विश्वास मुर्दा होता है
जिनमे साहस, शौर्य एव आत्म-विश्वास जीवित है, जिनके प्राणो मे कृतित्व की ऊर्जा स्फूर्त हो रही है वे कभी कष्टो, व भयो से आतकित

नही होते, दूसरो का सहारा नही ताकते वे चलते रहते है, बढते रहते हैं, केवल अपने वल पर !

भगवान महावीर की सेवा मे देवराज इन्द्र उपस्थित हुए, प्रार्थना करने लगे—"भगवन्! आपके साधनाकाल मे अनेक उपसर्ग, वाधाएं और सकट आने वाले हैं प्रभो ! आप तो उनसे निर्भय हैं, किन्तु मुझे सेवा का अवसर दीजिए, मैं सतत आपकी सेवा मे रहकर उनका निवारण करता रहूं."

ध्यानस्थ प्रभु ने निमेप खोले और एक मंदस्मित के साथ गभीर वाणी में कहा—देवराज ! यह कभी सभव नही है कि कोई भी साधक दूसरो के सहारे पर सिद्धि प्राप्त कर सके. अतीत, अनागत और वर्तमान मे जितने भी साधक हुए हैं, और होगे वे सव अपने साहस और आत्म-विश्वास के वल पर ही सिद्धि प्राप्त करते रहे हैं— "स्ववीर्येणैव गच्छन्ति जिनेन्द्रा परमागतिम्."

प्रभु के अलौकिक आत्म-तेज से दीप्त वचन सुनकर देवराज चरणो में श्रद्धावनत हो गए

/

भूख कैसे मिटे ?

भूख कैसे मिटे ? खाने से या देने मे ?

पेट की भूख ग्रहण करने से मिटती है, पर मन की भूख वड़ी विचित्र है यह आदान—लेने से नही, प्रदान—देने से मिटती है.

यदि आपको स्नेह एवं सम्मान की भूख है, तो उसे वटोरिए मत, उसे वांटते जाइए— आपकी भूख मिट जायगी !

आप किसी को स्नेह एवं सम्मान देने के लिए मजवूर मत कीजिए, बल्कि आपका स्नेह तथा सम्मान पाकर वह देने के लिए स्वय मजबूर हो जाएगा.

मन की भूख, लेने से नहीं, देने मे ही मिटती है. आदान नहीं, प्रदान चाहती है

यह जीवन क्या है ? भूलो की गठरी !

भूल करना, भूल होना जीवन का सहज क्रम है भूलो से ही मनुष्य बुद्धिमानी का पाठ पढता है बुद्धिमानी का माने ही है—भूलो से सीखा हुआ पाठ !

बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा—तुम इतने बुद्धिमान कैसे बने ? तुम्हारा गुरु कौन है ?

बीरबल ने गभीर होकर उत्तर दिया—'मेरे गुरु का नाम है मूर्ख !' मूर्खों की मूर्खता को देख कर ही मैंने सीखा कि जो काम करने स मूर्ख कहलाते है वह काम न किया जाय, बस, मै बुद्धिमान बन गया ! भूल भले हो, पर शर्त यह है कि एक ही प्रकार की भूल दुबारा न हो

भगवान महावीर की दिव्य वाणी मे यही तथ्य यो ध्वनित हुआ है—

"इयाणि णो, जमह पुव्वमकासी पमाएण"

—आचाराग १।१।४

जो भूल प्रमादवश एक बार कर चुके हो, अब उसे पुनः दुहराओ मत !

"बीय त न समायरे" —दशवै ८।३१

दुबारा उस भूल का आचरण न करे बस, इसी का नाम है बुद्धिमानी !

सफलता का गुर

एक सफल उपन्यास लेखक से पूछा गया—"आप उपन्यास सम्राट् कैसे हो गए ?"

छोटा-सा जबाव मिला—"एक दिन भी लिखने की नागा न करने से"

सफलता का ठोस गुर यह है कि निरन्तर काम मे जुटे रहो मुलायम रस्सी पत्थर पर निशान कर देती है निरन्तर गिरने वाली जल का बूंदे शिलाखण्ड पर गड्ढा बना देती है और निरन्तर कार्य मे लगा आदमी आकाश के तारे तोड लेता है

संस्कृत के एक नीतिकार का यह वचन स्मृति में रखिए -

"अवन्ध्यं दिवस कुर्यात्"

थोड़ा य बहुत काम अवश्य करिए, दिन को फालतू-खाली मत लौटने दीजिए !

विपत्तियों से लड़ना सीखो !

मनुष्य विपत्तियो से लड़कर ही महान वन सकता है ?

रामायण सुनते हो, महाभारत पढ़ते हो, कल्पसूत्र और आचाराग का वाचन करते हो, इशु के जीवन चरित्र पढते हो, मुहम्मद साहब की जीवनी का अध्ययन करते हो, किसलिए ? इसीलिए न कि आपके पूर्वजों ने किस प्रकार कष्टो मे सघर्ष किया है, विपत्तियो से जूझे है, और उन तकलीफो के खेल मे विजयी वनकर ही वे महापुरुष वने है. अपने को विपत्तियो से लडने के लिए तैयार करलो. पत्थरो की यह नदी वह रही है, तनकर खडे हो जाओ, और उस पार पहुंचो ! उस पार पहुंचने वाला ही इस जीवन यात्रा का सच्चा पथिक है.

शक्ति का परिचय

मनुष्य दीन नही है सर्वसमर्थ है. उसने क्या नहीं किया—

शेर जैसे हिंसक पशु को उसने सीखचों में वन्द कर दिया.

हाथी जैसे शक्तिशाली को अपने इशारो पर नचाया.

जिराफ जैसे लम्वे जानवर को भी बांधलिया.

व्हेल जैसे भारी भरकम जीव को भी पकड़लिया

थूक को वर्फ वना देने वाली सर्दी से वचने का उपाय निकाला.

पत्थर का पिघलाने वाली गर्मी को ठण्डा वनालिया

बिजली जैसी दानवी से चक्की पिसवाली.

फिर क्या वह जीवन के छोटे-मोटे दुःखों को दूर नही कर सकता ?

क्या मन को चचल वनाने वाले विकल्पों पर विजय नही पा सकता ?

अवश्य ! अवश्य ! पर तभी, जब वह अपनी अनन्त आत्म-शक्ति से परिचित होगा !

लकडी और चन्दन

समय एक नदी की भाति बहता जा रहा है- इसमें कांटे भी हैं, फूल भी है लकडी भी है, चन्दन भी ! कांटो से बचकर फूल चुनलो, लकड़ी को छोडकर चन्दन बीन लो !

दो परिभाषाएं

जिसका विचार सिर्फ देखने—"पश्यति" तक ही सीमित रहता है, वह पशु है

जो देखता है, और उस पर चिन्तन-मनन भी करता है—"मनुते" वह मनुष्य है

विचारशीलता

निर्णय करने मे जल्दबाजी न करो,
कार्य करने मे ढिलाई न करो,
फल पाने मे अधीर न बनो !

कार्य के आदि-अन्त मे 'धैर्य' एवं मध्य मे 'त्वरा'—यह प्रत्येक प्रवृत्ति को सफल बनाने का नियम है.

क्या चाहिए ?

कहो, तुम्हे क्या चाहिए !
धर्म या धन ?
सिद्धि या प्रसिद्धि ?
दया या प्रेम ?
अधिकार या कर्तव्य ?
दान या पुरुषार्थ ?
आश्रय या प्रेरणा ?

लौ की तरह जलो !

घनीभूत विकराल अन्धकार को चीरती हुई छोटी-सी लौ, निर्भयता पूर्वक सिर ऊपर उठाती है, और घोर तमस् को लील जाती है.

अथाह सागर के विशाल वृक्ष पर लहराती हुई नौका अपने लक्ष्य की ओर बढती हुई सागर की अपार दूरी नाप लेती है.

अनन्त आकाश के विस्तार पर व्यंग करता हुआ विमान उसके ओर-छोर को रोंद डालता है

युवक ! तुम लौ की तरह जलो ! नौका की तरह चलो ! विमान की तरह उडो ! जीवन का अनन्त पथ प्रशस्त करते हुए आगे बढो !

बीज की तरह.

साधक ! तुम कहीं भी रहो ! बीज की तरह सदैव पूर्णता की खोज मे रहो. लघु से महान् बनने की दिशा मे बढते रहो. पाताल से आकाश की ओर बढने की साधना करते रहो.

बीज—बीज रूप मे कठोर होता है, किन्तु अनुकूल अवसर पाते ही अंकुर के रूप में अपनी कोमलता को व्यक्त कर देता है सूरज के आतप से और चन्द्र की चन्द्रिका से भी वह लाभ उठाता है. रात के मलिन अंधकार से भी और दिन के उज्जवल प्रकाश से भी वह पोषण प्राप्त करता रहता है.

बीज की यह कला तुम्हारा जीवन दर्शन स्पष्ट करेगी.

आशा, उत्साह का सम्बल

उत्साही युवक ! उत्साह तुम्हारी परिभाषा है, आशा तुम्हारा जीवन है. तुम निराशा का आश्रय न लो !

सिर पर उमडती हुई काली घटाएं और घहर-घहर कर कडकती हुई बिजलियां तुम्हारे मन को भयभीत नहीं कर सकतीं. शौर्य तुम्हारे शोणित में वेगाकुल है, बल तुम्हारी भुजाओं में लहरा रहा है.

सिर पर मडराती हुई घटाएं तुम्हे जीवनदान देगी. कड़कती हुई बिजली तुम्हारे पथ को आलोकित करेगी, प्रतिकूलताएं अनुकूलता में बदल जाएगी !

युवक घबराओ नही ! आशा और उत्साह का सम्बल लिए बढ़ते चलो !

प्रगति के दो चरण

कुछ व्यक्ति सोचते है, और इतना अधिक सोचते हैं कि करने को समय ही नही रह पाता.

कुछ व्यक्ति करते है, और इतनी तेजी से करते हैं कि सोचने का अवकाश भी नही मिल पाता

ये दोनो ही प्रगति के अवरोधक तत्त्व है. दोनो से ही प्रगति अवगति होती है.

सही सोचना, आवश्यक सोचना, जल्दी सोचना.

सही करना, आवश्यक करना, जल्दी करना.

प्रगति के ये दो चरण जहां हैं, वहां गति है ऊर्ध्वगति है

प्रदर्शन

प्रदर्शन मे स्व-दर्शन ओझल हो जाता है, केवल पर-दर्शन ही मुख्य रहता है.

जिसे स्व-दर्शन अर्थात् आत्म-दर्शन करना है, उसे प्रदर्शन से बचना चाहिए. उसी प्रकार जैसे कि शीतलता चाहने वाला धूप से बचता है.

आशा : निराशा

मानव ! जब तुम आशाओ के मनोरम महल खड़े करते हो, तो कितना सुख मिलता है ?

और जब वे महल ढहने लगते है तो कितना दुख होता है ?

यदि तुम ये महल खड़े करना ही छोड दो, तो सुख-दुख के द्वन्द्व से छुटकारा नही हो जाए ?

मन्दिर के शिखर पर हवा मे सुन्दर ध्वज लहरा रहा है.

दूसरी ओर नींव मे एक मौन ईंट पड़ी है, सब की आँखो से ओझल ! सुस्थिर ! चुपचाप !

ध्वज मन्दिर का केवल प्रतीक है, ईंट उसका आधार है

मानव ! तुम मानव-मन्दिर के ध्वज बनना चाहते हो, या नींव की ईंट !

सोचो ! निर्णय करो ! और फिर तदनुसार आचरण भी !

बन्धन अपरिपक्व के लिए हैं !

परिपक्व के लिए कोई बन्धन नही, कोई उपदेश नहीं. बन्धन और उपदेश अपरिपक्व के लिए ही है

वृक्ष फल को तब तक बाँधे रखता है, जब तक वह पकता नही

गुरु शिष्य को तब तक उपदेश देता है जब तक कि वह परिपक्व नही होता.

भगवान महावीर ने कहा—"उद्देसो पासगस्स नत्थि" द्रष्टा और विवेकवान के लिए आदेश-उपदेश नहीं है ।

मृत्यु क्या है ?

मृत्यु क्या है ?

जीवन के समस्त कृतित्व का अन्तिम मूल्यांकन !

मृत्यु तो परीक्षा है, जो वर्ष भर के अध्ययन का अन्तिम परिणाम घोषित करती है

जिसने शानदार ढंग से जीया नहीं, उसकी मृत्यु शानदार कैसे हो सकती है !

सुन्दर व सुखद मृत्यु के लिए सुन्दर व सुखप्रद जीवन जीना सीखो.

मुर्दा जिन्दगी

लुढ़कती-घिसटती जिन्दगी क्या काम की ? वह तो मुर्दा जिन्दगी है. जीना है तो गतिशील और स्फूर्तिमय जीवन जीओ ! मुस्कराहट और प्रसन्नता विखेरते जीओ !

शूल न वनिए

यदि आप सूर्य के समान तेजस्वी तथा चाँद के समान शीतल नही बन सकते है, तो कोई बात नही, किन्तु राहू तो मत वनिए.

यदि आप फूल के समान सुरभित नही बन सकते है, तो कोई बात नही, किन्तु शूल तो न वनिए !

भविष्य को वनाइए !

जो भूत है, वह गुजर चुका, उसे वदला नही जा सकता किन्तु जो आने वाला भविष्य है, वह तुम्हारे हाथ मे है, उसका सुन्दर से सुन्दरतम निर्माण किया जा सकता है.

यजुर्वेद के महान भाष्यकार आचार्य उव्वट ने कहा है—

"भूत सिद्ध , भव्य साध्य भूतं भव्यायोपदिश्यते"

भूत सिद्ध है, और भविष्य साध्य है भविष्य के सुन्दर निर्माण के लिए ही भूत का उपदेश (आदर्श) है.

स्मृति का विपर्यास

मानव ! तू अपनी स्मृति को सुधार ! दूसरो ने तुझे क्या कहा. कैसा कहा, यह तो तू वहुत याद रखता है, किन्तु तुमने दूसरो को क्या कहा, कैसा कहा, यह भूल जाता है

स्मृति का यह विर्पायस जीवन मे सकट पैदा करने वाला है.

चौरासी अगुल का शरीर

एक प्राचीन उक्ति है कि—प्रत्येक मनुष्य का शरीर आत्मागुल से चौरासी अगुल का होता है

इसका तात्पर्य समझने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि चौरासी के चक्कर को काटने के लिए प्रत्येक एक अंगुल का महत्व है.

चौरासी के चक्कर को समाप्त करने के लिए चौरासी अंगुल प्रमाण शरीर का सदुपयोग कीजिए.

भूल को स्वीकार करो।

भूल हो जाना बुरा नहीं है, किन्तु भूल को स्वीकार न करना बुरा है.

और उससे भी ज्यादा बुरा है भूल को छिपाने के लिए दूसरी भूल करना.

भूल को स्वीकार करने का अर्थ है भूल से होने वाले दुष्परिणामों से बचना. भविष्य को सुखमय बनाना.

समय का प्रवाह

नदी के प्रवाह की भांति समय का प्रवाह अविराम गति से बह रहा है, इसे कोई रोक नहीं सकता हां, मोड सकता है, और जीवन के खेतों में पानी सींचकर आनन्द को फसल पैदा कर सकता है

उड़ान।

पक्षी अपने धूलि-धूसरित पंखों को फड़-फड़ाकर निर्धूल करके अनन्त गगन की उड़ानें भरता है.

मेरे मन ! तुम भी अपने विकार-धूलि से लिप्त पंखों (मन व बुद्धि) को फड़फड़ाओ, निर्मल बनो और फिर आत्म-विकास की अनन्त उड़ान भरते हुए चल पड़ो !

सैकेण्ड की सुई ..

सैकेण्ड की सुई की तरह निरन्तर गतिशील रहो. भले ही आज तुम्हारी गति को कोई समझ पाये या नहीं, किन्तु निश्चित मंजिल

पर पहुँचते ही सबको सावधान कर देगी और तुम्हारी सतत गति-शीलता पर ससार चकित होकर देखता रह जायेगा

क्षण ही जीवन है

जिसने एक 'क्षण' खो दिया, उसने समूचा जीवन खो दिया ।

क्षण-क्षण-क्षण । असख्य क्षणो की कड़ी ही तो जीवन की शृंखला है

कण-कण-कण । असख्य कणो का समवाय ही तो क्षीरसागर है

'क्षण' के विना जीवन शून्य है, कण के विना क्षीरसागर भी सूखा है

इसीलिए सावधान किया गया है—

"कणश क्षणशश्चैव विद्यामर्थं च सचयेत्"

कण-कण और क्षण-क्षण करके विद्या और अर्थ का संचय करते जाइए.

वर्तमान क्षण ।

यद्यपि वर्तमान का क्षण तुम्हे बहुत ही छोटा-सा प्रतीत होता है, पर वह बहुत मूल्यवान है

क्या तुम नही जानते, चिन्तामणि कितना छोटा होता है ? पर एक ही मणि जन्म भर के दारिद्रय को मिटा सकता है

क्या तुम नही जानते, अमृत का एक कण कितना छोटा होता है ? पर वह मूर्च्छित प्राणो मे नवजीवन का सचार कर सकता है.

चिन्तामणि और अमृतकण से भी अधिक छोटा और इसलिए अधिक मूल्यवान है वर्तमान का 'क्षण ।'

वर्तमान के क्षण की कद्र करो, वह तुम्हे निहाल कर देगा विधि के समस्त वरदानो का द्वार खोल देगा सृष्टि का अनन्त वैभव भुजाओ मे सिमट जाएगा.

जिसने वर्तमान को मूल्यहीन समझा, उसका जीवन मूल्यहीन होगया वह विधि के वरदानो मे वचित रह गया.

अतीत के क्षण 'कल' मे सो गए, और भविष्य के क्षण अभी गर्भ मे अव्यक्त है. वर्तमान तुम्हारे हाथ में है.

भगवान महावीर ने इसी वर्तमान को 'क्षण' (अवसर) कहा है—

"खणं जाणाहि पंडिए" — आचारांगसूत्र

इस क्षण को समझने वाला मेधावी है, वह समय को गफलत मे नही खोए—

"समय गोयम ! मा पमायए" उत्तराध्ययन–१०।१

क्षण भर भी प्रमाद न करो

स्वयं तैरना सीखें !

जो स्वयं तैरना नही जानता, वह दूसरो को कैसे तिराएगा ? यदि किसी डूबते हुए को बचाने का प्रयास करेगा तो स्वयं भी डूब जाएगा और उसे भी ले डूबेगा.

जो विषयों के सागर मे स्वय तैरना नही जानता, वह दूसरों को क्या उपदेश करेगा ?

यदि उपदेश करने जाएगा भी तो, कही स्वयं ही लोकैषणा के प्रवाह मे डूब कर ससार को भी डुबो देगा.

अपनी पहचान !

भगवान महावीर ने जागरण का उद्घोष करते हुए कहा है—

"सं बुज्झह ! किं न बुज्झह !" —सूत्रकृतांग

अपने को समझो, अपनी अनन्त शक्तियों को पहचानो !

अभी तक क्यों न समझ रहे हो !

मनुष्य अनन्त शक्ति का स्रोत है, जब वह करवट लेगा तो पर्वत थर-थरा जाएंगे, हवाएं सहम जाएंगी, दिशाएं कांप उठेंगी, और सूर्य-चांद चौकड़ी भूल जायेंगे । संसार की प्रत्येक शक्ति उसके चरणों में आकर विनत हो जायेंगी !

किन्तु हनुमान की तरह उसे भी शाप मिला हुआ है, जब तक कोई दूसरा उसे अपनी शक्ति का भान नही कराएगा, उसका अनन्त आत्मबल उद्दीप्त नही होगा !

अनन्त आत्म-शक्ति के उद्बोधक भगवान महावीर ने उसे प्रबुद्ध किया—जागो ! तुम देवताओ के प्रिय हो, विश्व के सर्वतोमहान प्राणी हो, और अनन्त वीर्यशाली हो !

अपने को दीन-हीन समझने वाले दिग्भ्रान्त मानव ! अब अपने आत्म-स्वरूप का भान करो ! अपनी पहचान करो।

गेंद और ढेला

मैंने देखा एक गेंद और एक ढेला ।

गेंद जितने वेग से गिरता है उतने ही वेग के साथ फिर उछलकर ऊपर उठ आता है

और मिट्टी का ढेला ! एक बार गिरते ही जमीन से चिपक जाता है; फिर उठने का नाम नही लेता

उत्साही व्यक्ति गेंद के समान है, हजार-हजार विपत्तियो मे गिरकर भी वह उछल कर उनसे उभर आता है

और निरुत्साही व्यक्ति मिट्टी के ढेले के समान ! गिरने बाद उठने का साहस ही नही करता !

तुम ढेले नही, गेंद बनो

कष्ट सहन ·

कष्ट सहन करने से मनुष्य के भीतर तीव्र स्फूर्ति जग जाती है. गेंद को नीचे फेंकने से वह अधिक वेग के साथ उछलती है भाप (वाष्प) को दबाने से वह तीव्र वेग के साथ धक्का मारती है

पुरुषार्थ का फल !

अतीत के श्रेष्ठ पुरुषार्थ का फल है वर्तमान जीवन का आनन्द !

यदि वर्तमान में श्रेष्ठ पुरुषार्थ नही होगा तो भविष्य का आनन्द कैसे प्राप्त होगा ?

महत्त्वाकांक्षा

मनुष्य की आकांक्षाओ मे महत्त्वाकाक्षा का प्रमुख स्थान है, जीवन की उन्नति और कार्यसिद्धि के लिए कुछ हद तक इसका अनिवार्य महत्त्व भी है.

महत्त्वकाक्षा की पूर्ति के लिए मनुष्य श्रम एवं निष्ठा को भूलकर भाग्य के पीछे दौड़ता है, ज्योतिषियों को जन्मपत्री और सामुद्रिको को हाथ दिखाता फिरता हैं, और जानना चाहता है कि उसके जीवन मे वह समय कौन-सा आयेगा जब वह बड़ा आदमी बनेगा

वस्तुत. बड़ा आदमी बनने में शारीरिक लक्षणो का वह महत्व नहीं है, जो उसके चरित्र व आचरण का है जिसका चरित्र ऊँचा है, वह महान बन सकता है, साहस, आत्म-विश्वास एव कार्यदक्षता ही मनुष्य को बड़ा बनाती हैं

ज्ञान : उपदेश

उपदेश दिया हुआ नहीं लगता. अन्तर से जगना चाहिए

दिया हुआ उपदेश और सुना हुआ ज्ञान आकाश से बरसने वाले पानी की तरह मन की भूमि पर गिरते ही सूख जाता है.

मन जब जागृत होता है, तब ज्ञान हृदय के अन्तरात्मा मे स्फुरित होता है, और वह भीतर से स्फुर्त ज्ञान पृथ्वी के अन्तराल मे छिपा जलस्रोत है, जो प्रतिपल, प्रतिक्षण अपनी शीतलता के द्वारा वनस्पति का पोषण करता रहता है.

कष्टों की अग्नि !

कष्ट अग्नि है, जलने दो उसे, घबराओ मत !

कष्टो की अग्नि का स्पर्श पाकर जीवन की मोमबत्ती प्रज्ज्वलित हो जायेगी, गुणो की अगरबत्ती महक उठेगी और तुम्हारे चरित्र का स्वर्ण निखर जाएगा !

जीवन मे कष्टो की अग्नि का जलने दो, उससे घबराओ मत !

चिन्तन की चाँदनी

व्य

ष्टि

और

स

म

ष्टि

विचारक ने उत्तर दिया—नही वह तो जन्म से नहीं, योग्यता ने प्राप्त अधिकार है यदि जन्म-सिद्ध अधिकार होता तो हर समाज मे बालको को मत-स्वातंत्र्य, मूर्खो को विचार स्वातन्त्र्य और दुराचारियो को आचार स्वातन्त्र्य मिलना चाहिए था ? और तब समाज और शासन का क्या रूप होता, भगवान ही जाने।

स्वतन्त्रता का जलकण

एक तोता खुशी में फुदकता हुआ, वृक्ष की टहनियो पर मचल-मचल कर किलक रहा था उसकी मस्तीभरी किलकारियो ने एक रसिक का मन मोह लिया. रसिक ने पकड़ा, और रत्नजटित स्वर्ण-पिंजर में बंद कर के अपने शयन-कक्ष के आगे टांग दिया

बच्चे प्यार से 'मिट्ठु-मिट्ठु' पुकार कर उसे किशमिश खिलाते गृहस्वामिनी उसे चादी के प्याले मे मीठा दूध पिलाती, सभी कोई खुश थे, तोते की तीखी किलकारी पर बच्चे ताली पीट कर झूम उठते थे

एक दिन गृहस्वामी ने देखा - तोता किलकता है, पर उसमे वह मस्ती नही, जो उस दिन उस वृक्ष की टहनी पर सुनी थी तोता क्षुधा मे तृप्त था, पर अनन्तगगन मे उन्मुक्त विहार की अतृप्ति उसे कचोट रही थी रसिक ने दूध का कटोरा सम्मुख रखते हुए तोते की आंखो में झांक कर देखा तो जैसे वह कह रहा था—

"तुम्हारे इस क्षीर सागर से भी अधिक मीठा है नीलगगन से गिरता हुआ ओस का वह एक जलकण, जिसमे आजादी की मधुरता एवं पवित्रता है. इन मेवो, और मिष्टान्नों से भी अधिक मधुर है, वृक्ष की टहनी पर लटकता हुआ वह वनफल, जिसमे स्वतन्त्रता का माधुर्य है"

स्वतन्त्रता की वर्षगाठ !

आज स्वतन्त्रता की वर्षगाठ है

विद्यार्थियो ! दृढ़सकल्प करो कि तुम अपनी स्वतन्त्रता को उत्तरोत्तर

विकसित करते रहोगे. राजनैतिक स्वतन्त्रता से बौद्धिक स्वतन्त्रता और आत्मिक स्वतन्त्रता की ओर प्रस्थान करते रहोगे.

क्या तुम अपने चरित्र, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ के स्वर्ण पात्र में स्वतन्त्रता सिंहनी के दूध को ग्रहण करके अपने शौर्य एवं पराक्रम को विश्वकल्याण के लिए अर्पण करोगे ?

सुख की गेंद

सुख एक गेंद के समान है

गेंद को अपने हाथ मे पकडकर बैठने से आनन्द नही आता, किन्तु दूसरो की ओर फेंकने मे ही आनन्द आता है

अपने सुख को गेंद को भी दूसरो को दीजिए, आनन्द की अनुभूति जगेगी, निश्चित जगेगी

नेता अभिनेता!

आज के नेता अभिनेता की तरह सिर्फ चुनावो के मच पर ही अपनी कलाबाजी दिखाने के लिए जनता के समक्ष प्रस्तुत होते है.

उन्हे जनता-जनार्दन के सुख से कोई वास्ता नही, वे निर्मोही सत की तरह जनता के सुख-दुख से दूर रहकर केवल अपनी ही चिन्ता— अर्थात् अपने घर, अपने परिवार, अपनी कुर्सी एव अपने दल की ही चिन्ता मे डूबे रहते हैं

समाज के दो वर्ग!

वर्तमान समाज मे दो वर्ग बने हुए है

एक वे— जिनके पास भूख से अधिक भोजन है.

दूसरे वे—जिनके पास भोजन से अधिक भूख है.

आज का सघर्ष इन्ही दो वर्गो का संघर्प है अर्थात् भोजन और भूख का सघर्प है

चित्रकार और कवि

चित्रकार की तूलिका रंगों की मोहक-छटा में सौन्दर्य का बाह्य दर्शन करा सकती है, किन्तु आत्मा के अनन्त सौन्दर्य को शब्दों की तूलिका से सजाकर अभिव्यक्त करने की कला तो कवि के पास है

कलाकार....

कांटा चुभने पर कांटे की पीड़ा का ज्ञान करना—सामान्य मनुष्य का सामान्य स्वभाव है

बिना कांटा चुभे ही उसकी वेदनानुभूति को समझना—विशिष्ट स्वभाव है

पहली कोटि—सामान्य जन की है

दूसरी कोटि—कलाकार की है

प्लास्टिक के फूल

पहले कागज के फूल आते थे अब प्लास्टिक के फूल भी बनने लगे हैं. देखने में सुन्दर, रंगबिरंगे, सदा खिले हुए ताजा प्रतीत होने वाले, प्राकृतिक फूल से भी अधिक मोहक।

पर, उस सौन्दर्य के साथ सौरभ कहां है ? उस रंगीनी के साथ माधुर्य कहां है ?

सचमुच आज का मानव प्लास्टिक का फूल बनता जा रहा है. कृत्रिम सुन्दरता के आवरण में सद्‌गुणों की सुवास कहीं गायब हो रही है ?

प्रतिबिम्ब !

दर्पण में आकृति का प्रतिबिम्ब दिखलाई देगा, यदि आकृति सुन्दर होगी तो प्रतिबिम्ब भी सुन्दर आएगा.

जनता दर्पण है, व्यक्ति के चरित्र का प्रतिबिम्ब, उसमें उद्‌भासित

होता है यदि चरित्र सुन्दर होगा तो प्रतिविम्ब निश्चय ही सुन्दर होगा.

तीन कोटिया

• दूसरो की भूल देखकर जो अपनी भूल सुधार लेता है, वह ज्ञानी है.
एक वार भूलकर के जो सुधर जाता है, वह अनुभवी है
जो वार-वार भूल करके भी सुधर नही सकता, वह मूर्ख है

जन · स्वजन . सज्जन

सौ जन मे कोई एक 'स्वजन' मिलता है, किन्तु हजार 'स्वजन' मे भी कोई 'सज्जन' मिल पाता भी है या नही ?

श्ववृत्ति—अश्ववृत्ति

दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ देखी जाती हैं—श्ववृत्ति और अश्ववृत्ति.

श्ववृत्ति—कुत्ता रोटी का टुकडा डालने वाले हर किसी के सामने पूँछ हिलाने लग जाता है

अश्ववृत्ति—घोडा अपने स्वामी को देखकर ही हिनहिनाता है, हर किसी के सामने नही

तुम जिस मनोवृत्ति को पसन्द करते हो, उसे जीवन मे अपना लो.

दो गोलियाँ

चीनी की गोली (टिकिया) पानी मे डाली गई तो गिरते ही गल कर पानी-रूप हो गई

काँच की गोली पानी मे गिरी तो वैसी की वैसी ही पड़ी रही

कुछ श्रोता चीनी की गोली के समान उपदेश के जल मे तदाकार हो जाते हैं. किन्तु कुछ काँच की गोली की तरह पानी मे रहकर भी सूखे-के-सूखे रह जाते हैं

लेक्चरप्रूफ !

वाटरप्रूफ और फायरप्रूफ वस्तुओं पर पानी और अग्नि का कोई असर नही हो सकता.

आज के मानव का मस्तिष्क भी लेक्चर-प्रूफ हो गया है. उसे चाहे जितने भी लेक्चर-भाषण सुनाइए, उसके मन और मस्तिष्क पर कोई प्रभाव नही पड़ता.

थर्मामीटर !

कुछ व्यक्ति समाज के थर्मामीटर होते हैं उनका गुण यह है कि वे समाज के हर एक गुण-दोष को सूचित करते रहते है.

किन्तु, उनका सबसे बड़ा दोष यह है कि इस वृत्ति मे उनका स्वभाव दूषित हो जाता है, वे कभी भी अपना दोष नही देख पाते.

भगवान महावीर की भाषा मे वे तृतीय पुरुष की श्रेणी में आते है—

"परस्सणामं एगे वज्ज पासइ णो अप्पणो"

वे दूसरो का ही दोष देखते है अपना नही.

अंगारा

विद्यार्थी संसार का वह जगमगाता अंगारा है, जो लोहे को भी भस्म कर सकता है.

किन्तु आज उस पर अज्ञान की राख चढ चुकी है. उस राख को हटाने के लिए प्रेरणा की एक तेज फूंक की आवश्यकता है.

बालक का जीवन !

बालक का जीवन कच्ची धातु के समान है. उसमे जैसा चाहे वैसा मिश्रण करके मन इच्छित रूप दिया जा सकता है

दिल को वात तब छूती है, जव हृदय मे श्रद्धा हो, और दिमाग को वात तब छूती है जव वुद्धि हो

आज के विद्यार्थी के पास दिमाग तो है, किन्तु दिल नही वुद्धि तो है किन्तु श्रद्धा नही. इसीलिए उसका ज्ञान वुद्धि की खिड़की से छनकर हृदय मे उतर नही रहा है.

उसकी वुद्धि प्रखर है, किन्तु हृदय कुण्ठा-ग्रस्त हो रहा है.

छेदवाला घडा

छेदवाला घडा जव तक पानी मे रहता है, भरा-भरा लगता है, किन्तु पानी से वाहर आते ही खाली

विद्यार्थी! तुम्हारा जीवन ऐसा तो न हो कि जव तक विद्यालय में रहे अध्ययनरत रहे, किन्तु वाहर आते ही रिक्त, शून्य हो जाए.

खाली लिफाफा !

जिस विद्यार्थी के जीवन मे विनय एव सच्चरित्र नही है, उसका जीवन उस शानदार लिफाफे के समान महत्वहीन है, जिसके सुन्दर कागज पर मनोहर एव सुरम्य चित्र अकित है, कलात्मक अक्षर-विन्यास से सज्जित है, किन्तु खाली है, भीतर पत्र नही है

जीवन की उर्वरभूमि

विद्यार्थी !

तुम्हारा जीवन समाज और राष्ट्र की रीढ है तुम समाज के नव-निर्माण के लिए सकल्प करो! तुम्हे चट्टान की तरह कठोर, तूफान की तरह गतिशील और धूमकेतु (अग्नि) की तरह ज्वलनशील वनना है

तुम्हारा जीवन वह उर्वरभूमि मे है, जिसमे वोया गया सच्चरित्र का छोटा-सा वीज भी शतशाखी के रूप मे समाज को शीतलछाया और मधुर फलो से कृतार्थ करेगा

विद्यार्थी जीवन समाज की प्रगति रेखा का आदि विन्दु है. यह नींव की वह ईंट है, जिस पर राष्ट्र के गौरव का महल खड़ा होता है

विद्यार्थी !

विद्यार्थी !

तुम, भावी भारत की नौका के कर्णधार हो।

देश मे सुख, समृद्धि और शान्ति की गगा लाने के लिए तुम्हे भगीरथ बनना है.

दुःख, दीनता, दरिद्रता और दुराचार के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए तुम्हे ही अभिमन्यु बनना है.

नवजागरण और नैतिकक्रान्ति का शख फूंकने के लिए तुमको ही श्रीकृष्ण बनना है.

जागो ! विद्यार्थी ! भावी भारत का नक्शा तुम्हारे हाथो के बीच है

माता-पिता !

पिता ने गर्वोद्दीप्त भाषा मे कहा—मैं योग्य पुत्र पर अपना सम्पूर्ण प्रेम न्योछावर कर देता हूं.

माता विनीत स्वर मे मुस्कराई—मैं तो पुत्र मात्र पर स्नेह बरसाती हूं, मेरी नजर मे योग्य और अयोग्य का भेद ही नही है.

देवत्रयी !

माता !

देवत्रयी का महान् संगम तुम्हारे मे हुआ है, तुम विश्व की पूजनीया हो।

तुम बालक को जन्म देती हो, अत. ब्रह्मा के समान वन्दनीया हो !

तुम शिशु का पालन-पोषण कर सक्षम बनाती हो, अत विष्णु के समान अर्चनीया हो ?

तुम सन्तान के दु खो व दुर्गुणो का विनाश करने मे समर्थ हो, अत शकर के समान अर्चनीया हो !

देवत्रयी का महान् सगम, माता के जीवन का महान्-दर्शन है

ज्योतिशिखा ।

भारतीय नारी शील की ज्योतिशिखा पर पतगो की भाति जलकर भस्म होना जानती है, किन्तु सरकस के शेरो की तरह हटरो के सपाटे मे कलाबाजी दिखाकर दीनता पूर्वक जीना नही जानती

तरुणी-तरणी

साथी ! सावधान !

तरुणी को तरणी (नौका) के रूप मे समझकर चलो ! वह अपने आश्रितो को मँझधार मे डुबो भी सकती है, और पार भी लगा सकती है

पीयूषघट

कोई पूछे, उन कलम की कौतुक-क्रीडा करने वालो से, कि उन्होने नारी के कृष्णपक्ष को ही चित्रित करके क्यो रख दिया ? उसके शुक्लपक्ष की उज्ज्वल तस्वीर वे क्यो नही खीच सके ?

उसे वासना का कर्दम कहकर दूर-दूर रहने की प्रेरणा ही क्यो दी ? उसके जीवन मे खिले साधना के शतदलो की सौरभ-स्निग्ध गाथा क्यों न गाई ?

उसे 'विषवेल' और 'नरक की खान' कहकर अपमानित क्यों किया ? उसके तप-त्याग, सेवा-स्नेह के पीयूषघट का बखान क्यो नही किया गया ?

यद्यपि जैनसस्कृति ने नारी के दोनो पक्षो को प्रस्तुत किया है, सूर्यकान्ता और नागश्री के विषबेलि रूप को, तो कान्तो, मृकान्ती, चेलना, कमलावती आदि के अमृत-रूप को भी !

विद्यार्थी जीवन समाज की प्रगति रेखा का आदि बिन्दु है. यह नीव की वह ईंट है, जिस पर राष्ट्र के गौरव का महल खड़ा होता है.

विद्यार्थी !

विद्यार्थी !

तुम, भावी भारत की नौका के कर्णधार हो !

देश मे सुख, समृद्धि और शान्ति की गंगा लाने के लिए तुम्हे भगीरथ बनना है.

दु:ख, दीनता, दरिद्रता और दुराचार के चक्रव्यूह को तोडने के लिए तुम्हे ही अभिमन्यु बनना है.

नवजागरण और नैतिकक्रान्ति का शख फूंकने के लिए तुमको ही श्रीकृष्ण बनना है.

जागो ! विद्यार्थी ! भावी भारत का नक्शा तुम्हारे हाथों के बीच है.

माता-पिता !

पिता ने गर्वोद्दीप्त भाषा में कहा—मैं योग्य पुत्र पर अपना सम्पूर्ण प्रेम न्योछावर कर देता हू

माता विनीत स्वर मे मुस्कराई—मैं तो पुत्र मात्र पर स्नेह बरसाती हू, मेरी नजर मे योग्य और अयोग्य का भेद ही नही है.

देवत्रयी !

माता !

देवत्रयी का महान् संगम तुम्हारे मे हुआ है. तुम विश्व की पूजनीया हो !

तुम बालक को जन्म देती हो, अतः ब्रह्मा के समान वन्दनीया हो !

तुम शिशु का पालन-पोषण कर सक्षम बनाती हो, अत विष्णु के समान अर्चनीया हो ?

तुम सन्तान के दु खो व दुर्गु णो का विनाश करने मे समर्थ हो, अत. शकर के समान अर्चनीया हो ।

देवत्रयी का महान् संगम, माता के जीवन का महान्-दर्शन है

ज्योतिशिखा !

भारतीय नारी शील की ज्योतिशिखा पर पतगो की भाति जलकर भस्म होना जानती है, किन्तु सरकस के शेरो की तरह हटरो के सपाटे मे कलाबाजी दिखाकर दीनता पूर्वक जीना नही जानती

तरुणी-तरणी

साथी ! सावधान !

तरुणी को तरणी (नौका) के रूप मे समभकर चलो ! वह अपने आश्रितो को मँभधार मे डुबो भी सकती है, और पार भी लगा सकती है

पीयूषघट

कोई पूछे, उन कलम की कौतुक-क्रीड़ा करने वालो से, कि उन्होने नारी के कृष्णपक्ष को ही चित्रित करके क्यो रख दिया ? उसके शुक्लपक्ष की उज्ज्वल तस्वीर वे क्यो नही खीच सके ?

उसे वासना का कर्दम कहकर दूर-दूर रहने की प्रेरणा ही क्यो दी ? उसके जीवन मे खिले साधना के शतदलो की सौरभ-स्निग्ध गाथा क्यो न गाई ?

उसे 'विषवेल' और 'नरक की खान' कहकर अपमानित क्यो किया ? उसके तप-त्याग, सेवा-स्नेह के पीयूषघट का बखान क्यो नही किया गया ?

यद्यपि जैनसस्कृति ने नारी के दोनो पक्षो को प्रस्तुत किया है, सूर्यकान्ता और नागश्री के विषवेलि रूप को, तो काली, सुकाली, चेलना, कमलावती आदि के अमृत-रूप को भी ।

नारी का द्वितीय रूप ही जैन संस्कृति मे उजागर हुआ है
नारी ! तुम अपने अमृत-रूप को देखो, समझो !

नारी-नाड़ी....

भारतीय संस्कृति मे नारी का वही महत्व है, जो मानव देह मे नाड़ी का ! वह सस्कृति की वुद्धि, समृद्धि और शक्ति की त्रिविध शक्तियों का स्रोत है.

सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के रूप मे मानव आदिकाल से उसकी उपासना, अर्चना एव पूजा करता आया है.

नारी की परिभाषा

नारी क्या है ?
न+अरि—जिसका कोई दुश्मन नही ।
प्रेम और वात्सल्य की रसधारा !
त्याग और वलिदान की कहानी !
स्नेह और श्रद्धा की मूर्ति !
सेवा और सहिष्णुता का अमर सगीत !

नारी की गरिमा

नारी ! तुम प्रेरणा की जीती जागती प्रतिमा हो ! तुमने मानव को सदा कर्तव्य के लिए उत्प्रेरित किया है, त्याग, वलिदान का पाठ पढाया है और दिग्भ्रान्त वन्धुओ को स्नेहमयी मधुर वाणी से मार्ग दर्शन किया है.

तुम ही हो, वाहुवली के अवरुद्ध मानस मे चिन्तन की चिनगारी सुलगाकर ज्योति प्रज्वलित करने वाली—ब्राह्मी सुन्दरी की मधुर गिरा !
तुम ही हो, राजुल की कड़कती तलवार ! जिसने डगमगाते रथनेमि के चरणों को साधना पथ पर स्थिर कर दिया ! तुम ही हो, माता

की करुण पुकार, जिसने कर्तव्य-विस्मृत अरणक की मोहनिद्रा भंग कर पुन: साधना पथ पर आरूढ कर दिया

तुम ही हो, मैत्रेयी और गार्गी की वह आध्यत्मिक-स्वर व्यञ्जना जिसने युग के भौतिक कुण्ठाग्रस्त मानस को झकझोरा—येनाहनामृता स्या कि तेन कुर्याम् (जिस धन से मैं अमर नही वन सकू, उसको लेकर क्या करूँ),

तुम ही हो मदालसा की वह मधुर दुलार जिसने पालने मे सोए शिशुओ को—"शुद्धोऽसि, वुद्धोऽसि" की लोरियाँ सुनाई.

तुम ही हो चारुभाषिणी चेलना की तर्कप्रवण प्रज्ञा—जिसने सम्राट् श्रेणिक के धार्मिक व्यामोह को दूर हटाकर धर्म का शुद्ध दर्शन कराया.

तुम ही हो, सूर और तुलसी को साहित्य-गगन मे सूर और चन्द्र वनाकर चमकाने वाली चिन्तामणी और रत्नावली की प्रेरणा से भरी मधुर भाव व्यञ्जना !

नारी ! तुम सदा सदा से महान् रही हो, प्रकाशस्तम्भ वनकर युग-मानस का पथ प्रदर्शन करती आई हो !

आज अपने गौरव-मडित अतीत का दर्शन करो !

नारी ! तुम महान् रही हो, अपनी महानता का जयनाद आज पुन उद्घोषित करो

धन को समाज के खेत मे डाल दो !

कूड़े-कर्कट को एकत्रित करके घर मे रखा तो वह गन्दगी पैदा करेगा, उसमे कीड़े कुलवुलाएंगे, यदि उस गन्दगी को खेत मे विखेर दी जाये तो खाद वनकर नई फसल तैयार कर देगी, गन्दगी जिन्दगी वन जायेगी.

धन की भी यही स्थिति है. यदि उसे अपनी तिजोरी मे वन्द करके रखा तो ममता के कीडे कुलवुलाने लगेगें उसे समाज के खेत मे डाल दो, वह नई सृष्टि का निर्माण कर देगा.

जो है, सो दो

कहावत है—'देवं गो देवता'—जो देता है वह देवता है तुम्हारे पास जो भी है, वह अर्पण कर दो ! चिन्ता न करो, यदि धन, अन्न अथवा अन्य वस्तु नहीं है तो ?

देखो ! तुम्हारे पास हाथ है न ? इन हाथो से किसी वेदना से कराहते हुए मानव के आंसू पोछ सकते हो जिनके दिल का दिया निराशा की आंधी से बुझ-चुका है, उनके लिए प्रेरणा-प्रदीप बन सकते हो ! मन के द्वारा उनके प्रति शुभ कामना कर सकते हो ? मीठी वाणी से उनको सान्त्वना दे सकते हो ? फिर तुम देना क्यो भूल रहे हो ?

देने वाला मधुर !

मैंने नदी से पूछा—तुम्हारा ही पानी समुद्र मे जाता है, फिर क्या कारण है कि नदी का पानी मीठा है और समुद्र का पानी खारा ?

कलकल करती हुई नदी ने जैसे उत्तर दिया – मैं सतत दान करती रहती हूँ, जबकि समुद्र सिर्फ सग्रह ही करता रहता है.

जो देता रहता है, व मधुर बना रहता है. संग्रह करने वाला घृणा व कटुता का पात्र होता है.

मधुर-दान

वही दान मधुर होता है जो दाता अपनी स्वेच्छा मे देता है, आग्रहपूर्वक लिए हुए दान मे खटास आ जाती है.

फल वही मधुर होता है जो वृक्ष स्वय देता है, तोड कर लिए हुए फल खट्टे होते है

सत्ता की गेंद !

जनतन्त्र के खिलाड़ियो ! सत्ता की गेंद को पकड़ कर मत बैठो !

जब तक यह गेंद दौड़ती रहेगी तभी तक खेल चलेगा, दर्शक, खिलाड़ी दोनों को आनन्द आयेगा गेंद को पकड़कर बैठ गये कि खेल खतम !

तैरने के लिए जल फेंकिए !

जो व्यक्ति जल मे तैरना चाहता है, वह जल को हाथो से दूर फेंकता है.

संसार सागर मे तैरना चाहते हो, तो परिग्रह रूप पानी को दूर फेंकते रहिए.

नेता की परिभाषा

एक विचार गोष्ठी मे चर्चा का विषय था— नेता की परिभाषा.'

एक वक्ता ने कहा— 'नेता वही हो सकता है, जो सड़क पर की गई वत्ती की भाँति दूसरो को मार्गदर्शन करता रहे, पर स्वयं जहाँ है वही स्थिर रहे."

दूसरे वक्ता मंच पर आये, और नेता की परिभाषा करने लगे— "नेता, वह पेशेवर चित्रकार है, जो योजनाओ मे देश का सुनहला भविष्य अंकित करके गरीब जनता को खुश करने का प्रयत्न करता है"

"आकाशवाणी केन्द्र की भाँति इधर-उधर की चुलबुली खबरें सुनाकर लोगो का जमघट लगाने वाला नेता होता है"- तीसरे प्रवक्ता ने परिभाषा दी.

तभी सभापति महोदय ने परिचर्चा का उपसहार करते हुए कहा— "नेता वह है, जो आदर्श की वात कर सकता है, भविष्य की सुनहली कल्पनाओ से जनता का मन मोह सकता है, लच्छेदार भाषण दे सकता है, स्वय खाकर दूसरो को खिला सकता है, सब कुछ करके भी वह कमल की भाँति सदा निर्लेप—(अर्थात् निर्दोष) सिद्ध हो सकता है"

रमणीय या बीभत्स ?

यह विश्व क्या है ?
महाकाल का एक अभिनय ! इसे न रमणीय कहा जा सकता है, न वीभत्स ! न अमृत कहा जा सकता है, न विष !

एक ओर प्रभात की सुनहली किरणो मे मोहक आशा एवं सरसता छिपी है, तो दूसरी ओर सन्ध्या की पीली उदास छाया मे अनन्त भविष्य की निराशा !

एक ओर यौवन का मदकता-हास है, तो दूसरी ओर जरा का क्रूर अट्टहास !

एक ओर सौरभ से मदमाती कलियो की मधुर अंगडाई है, तो दूसरी ओर मुरझाकर धूलि-लुण्ठित होने की नीरव सुस्ती !

फिर कौन क्या जाने, महाकाल का यह नाटक रमणीय है, या वीभत्स !

पत्थर और आदमी

एक पत्थर रास्ते मे पड़ा था, कोई अभिमान मे अकड़ा हुआ धनी उधर से गुजरा, पत्थर की ठोकर लगी और मुंह के बल गिर पड़ा.

"मुझे उठाकर एक ओर रखदो न ? पत्थर मूक भाषा मे बोला."

"बदतमीज ? यही पर पड़ा ठोकरें खाने लायक है"—धनिक ने घूर कर कहा, और ऐंठा हुआ-सा आगे चल दिया. पीछे से आते हुए एक मजदूर ने पत्थर को आत्मीयभाव के साथ उठाया और मन्दिर की सीढ़ी पर रख दिया

सायकाल मन्दिर की बूढ़ी पुजारिन आई, उसने पत्थर पर सिन्दूर का टीका लगाया और लाकर अपनी देव परिषद् मे बिठा दिया.

दीपक जले, आरती होने लगी। वही ठोकर खाने वाला धनिक उसी पत्थर के सामने हाथ जोड़कर नतमस्तक खड़ा है, वह कातर स्वर मे याचना करता है—पुत्र के लिए—"कुल का एक उजियारा दे दो देव। इस मन्दिर पर स्वर्णकलश चढ़ा दू गा" बहुमूल्य पदार्थों से अर्चना कर दो क्षण तक देवता की प्रसन्नता के लिए हाथ जोड़े खड़ा रहा

और पत्थर मनुष्य की इस विवेकमूढ़ता को देखकर स्तम्भित-सा रह गया.

बुराई-भलाई से कोई अलग चीज नही है

भलाई ही तो गलत जगह, गलत समय, गलत पात्र के साथ, गलत तरीके से की जाने पर बुराई का नाम पाती है

गुलाब का फूल डाली से अलग होकर मिट्टी मे मिल सकता है, और भट्टी पर चढकर इत्र भी बन सकता है

तुम मिट्टी मे मिल जाते हो तो बुराई शेष रहेगी, भट्टी में चढकर इत्र बन कर गन्ध छोड़ जाते हो तो भलाई शेष रहेगी

इतिहास का सार

ससार का इतिहास इस प्रथम वाक्य से प्रारम्भ होता है—मनुष्य जन्मा ! और उस इतिहास का अन्तिम वाक्य है– मनुष्य मरा !

'जन्म और मृत्यु' इसके सिवाय मनुष्य जाति का और क्या इतिहास हो सकता है ?

कहा जाता है कि एकबार ईरान की गद्दी पर एक बादशाह बैठा, उसने देश भर के चोटी के विद्वानो को बुलाकर अपनी इच्छा जाहिर की– कि विश्व की मानव जातियो का एक सम्पूर्ण इतिहास तैयार कीजिये जिससे मुझे राज्य सचालन मे सुविधा हो, और यह जान सकूँ कि और देशो के राजा लोग अपना राज-काज कैसे चलाते हैं, और दुनिया के इतिहास मे कैसे-कैसे राजा हुए है ?

बादशाह की आज्ञा से देशभर के विद्वान इतिहास निर्माण के काम मे जुट गए पूरे मनोयोग एव तल्लीनता के साथ कार्य करते हुए बीस साल के बाद विद्वान लोग राज-दरबार मे पहुँचे. उनके साथ १२ ऊँट थे जिन पर इतिहास की ६६ हजार जिल्दें लदी हुई थी

बादशाह ने इतनी जिल्दें देखी तो सिर पर हाथ रखा, काश ! आप लोग इतिहास को सक्षिप्त रूप मे तैयार करते ! इतनी जिल्दें तो मैं जिन्दगी भर रात दिन पढता रहू तब भी पूरी नही पढ पाऊँगा !"

बादशाह के आदेश से पण्डित लोग दुबारा पुस्तकालयों की ओर चल पड़े. बीस साल बाद फिर लौटे तो उनके पास सिर्फ एक ऊँट और दो खच्चर थे जिस पर एक हजार जिल्दें थी. बादशाह ने देखा तो फिर सिर धुनकर कहा—उफ ! आपने मेरा मतलब नही समझा ! इतिहास को और संक्षिप्त कीजिए.

पण्डित लोग पुनः इतिहास को संक्षिप्त करने मे जुट गए. बीस साल बाद लौटकर आए तो उनके साथ केवल एक खच्चर था और उस पर एक ही जिल्द लदी हुई थी !

द्वारपाल ने पण्डितो का स्वागत करके कहा—"जनाब, जल्दी कीजिए, क्योकि बादशाह अन्तिम सांसें गिन रहे हैं !"

पण्डित लोग बादशाह के पास महलो मे पहुँचे, बादशाह ने मृत्यु-शैय्या पर करवट बदलते हुए उस जिल्द पर निराशा की दृष्टि डाली और बोले—"हाय ! अब मैं मनुष्य जाति का इतिहास पढे बिना ही इस संसार से विदा हो रहा हूँ !"

तभी बूढे राजपण्डित ने कहा—नही, जहाँपनाह ! ऐसा नही हो सकता ! यह जिल्द और भी संक्षिप्त की जा सकती है, और आपके लिए उसका सार मैं एक वाक्य मे ही कहे देता हूँ—

"सब जन्मे, सबने कष्ट भोगे, और सब मर गये !"

बादशाह ने आराम से अन्तिम साँस ली ।

संसार का इतिहास

संसार का इतिहास जानना चाहते हो ? तो, लो पढो ! सागर की छाती पर इठलाती बलखाती हुई लहरो का चंचल उत्थान-पतन !

तो, लो पढ़ो, प्रकृति के अंचल मे साथ-साथ पलते हुए सौंदर्य-रमणीय जरा-मृत्यु के विभिन्न, विचित्र रूप !

सुख-दुःख के मिश्रित सम्मोहन मे धड़कती हुई सृष्टि की धड़कन को पढो, संसार का इतिहास अपने आप खुलकर सामने आ जायेगा

चिन्तन की चाँदनी

अ

न्तः

श

ल्य

मनुष्य के प्रयत्न, पुरुषार्थ एवं पराक्रम का अन्तिम साध्य है—मन प्रसन्नता, आनन्द एवं शान्ति.

प्रसन्नता, आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति तब स्फुरित होती है, जब हृदय सरल, निर्मल एवं निःशल्य हो.

शल्य— अर्थात् कांटा, जिस हृदय में कांटा चुभा हो, वह आनन्द की अनुभूति कैसे कर सकेगा ? जिस आँख में कांटा चुभ गया हो, उसे चैन कैसे पड़ेगा ?

दुर्विचार—काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, चिन्ता, प्रमाद, ईर्ष्या, निंदा ये सब मन के कांटे हैं. भगवान महावीर ने इन्हें 'अन्तःकरण के सूक्ष्मशल्य'—"सुहुमसल्ले"—कहकर पुकारा है.

जिस हृदय में शल्य है, वह दुःखी है. जिसका शल्य निकल गया, वह परमसुखी है

अन्तःशल्य

●

कुविचार

कुविचार एक जहरीले फोड़े की तरह है.

फोड़े का आप्रेशन करके जब तक उसका मवाद बाहर नहीं निकालोगे तब तक शान्ति नही मिलेगी.

कुविचार को नष्ट करके जब तक उसकी भावना मन से बाहर नही निकलेगी, तब तक मन शान्त एव प्रसन्न नही होगा.

लोभी और पारा

मैने देखा है—लोभी और कजूस आदमी दान और सेवा की बात आने पर वैसे ही खिसक जाते है, जैसे अगुली से छूने पर पारा खिसक जाता है

विषयो की गोली

मछली आटे की गोली को देखती है, किन्तु उसमें लगे काटे को नही देखती और उसमे फस जाती है

भौतिक विषयो की ओर आकृष्ट होने वाले प्राणी विषयो की बाह्य मधुरता देखते है, किन्तु उनके कटु परिणाम को नही देखते और वे उनमे आसक्त हो जाते हैं.

अफीम का फूल बहुत सुन्दर लगता है, किन्तु उसका रस कितना नशीला और जहरीला होता है? सत्ता और सम्पदा भी प्रारम्भ मे सुन्दर प्रतीत होती है किन्तु उनका रस-परिणाम अन्त मे नशीला और खतरनाक होता है.

अन्धा कौन ?

जो धर्म के स्थान पर धन को पूजता है, सन्त की जगह पन्थ को महत्व देता है, और प्रेम की जगह मोह का आदर करता है, समझलो वह आंखें होते हुए भी अन्धा है

तप्त तवा

मैने देखा, सुना और अनुभव किया है, ईर्ष्यालु का हृदय तप्त तवे की तरह प्रतिक्षण जल-जलकर काला होता जाता है.

ईर्ष्या की नागिन

मानव !

तुम ईर्ष्या की काली नागिन से सदा डरते रहो! उसकी विषैली फुंकार तन, मन और जीवन के कण-कण को विषमय बना देगी. तुम्हारी दैहिक एव मानसिक शक्तियो के रस को जलाकर भस्म कर डालेगी

प्रबुद्ध मानव ! ईर्ष्या-नागिन से सदा सावधान रहकर चलो.

चिन्ता

चिन्ता मधुमक्खी है, इसे जितना हटाने का प्रयत्न करो, उतनी ही अधिक चिपटेगी

तीन अगुली !

मैने देखा—जब दूसरो के दोषो की ओर इंगित करने के लिए मेरी एक अगुली उठी, तो सहसा तीन अगुलियां मेरी तरफ मुड़ गई.

मैंने सोचा—दूसरो की ओर एक बार देखने से पहले अपनी ओर तीन बार देखो यही प्रकृति का सकेत है सस्कृति का संदेश है

आलोचक कौन ?

✓ आलोचना वही करता है, जो स्वय कुछ नही कर पाता.

जो स्वय कर्तृत्व सपन्न है, वह कभी दूसरो की आलोचना नही करेगा, वह तो अपने निर्मल कर्तृत्व से विश्व का मार्गदर्शन ही करता रहेगा.

सहस्राक्ष

आज का मनुष्य दूसरो के दोप देखने के लिए सहस्राक्ष बन रहा है.

किन्तु दु.ख तो इस बात का कि वह अपने दोप देखने के लिए तो आज एकाक्ष भी नही रहा, बिल्कुल अन्धा बन गया है

राहू नही, सूर्य

मेरे मित्र ! तुम दूसरो के तेज को मिटाने के लिए मन-ही मन जल कर काले राहू क्यो बन रहे हो ?

दूसरो के तेज को समाप्त करने की भावना पहले तो उचित नही, फिर भी यदि है, तो सूर्य की तरह अपना प्रचण्ड तेज निखारो, अपने आप तुम्हारे सामने दूसरो का तेज फीका पड़ जायेगा.

✓ दोपज्ञ !

गुणज्ञ की तरह दोपज्ञ होना भी एक विशेपता है किन्तु अन्तर इतना ही है कि—गुण दूसरो के देखने चाहिए और दोप अपने

जो अपने गुण और दूसरो के दोप देखता है, वह गुणज्ञ की जगह अहंकारी और दोपज्ञ की जगह 'निन्दक' का पद पाता है

दोप-दृष्टि

दोप दृष्टि—वस्तुत एक दूपण है. इससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी परेशान होते हैं

किन्तु इस दूषण को भूषण भी बनाया जा सकता है. बशर्ते कि वह दृष्टि दूसरो की ओर न घूम कर अपनी ओर घूम जाए.

जिसने अपने दोष देख लिए, वह फिर कभी दूसरो के दोष देखना ही नहीं चाहता.

सजातीय

दोष वही देखेगा, जिसमें स्वयं में दोष होंगे.

दोष के पास ही दोष आता है दोष-दोष परस्पर सजातीय है, बन्धु है.

आलोचना

आलोचना एक साबुन है, जो मैल को धोकर साफ कर देता है.

पर, आश्चर्य है कि इस का प्रयोग हर कोई दूसरो की सफाई के लिए करता है. अपनी सफाई के लिए कोई ध्यान भी नही देता.

विकारो का रावण !

मन के सिहासन पर जब तक विषय विकारों का रावण बैठा है, तब तक विवेक-वैराग्य का राम वहाँ आएगा ही नहीं.

यदि मन के सिहासन पर विवेक-वैराग्य के राम को बैठाना है, तो विकारो के रावण को दूर भगाइए. आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है—

ताव ण णेज्जइ अप्पा विसएसु णरो पवट्टए जाव

जब तक मनुष्य विषयो को जानता है, तब तक आत्मा को नही जान सकता. विषयो को भुलाने से आत्मा को जाना जायेगा.

मूल क्या है ?

मनोविज्ञान के आचार्य फ्राइड ने 'काम' को सब प्रवृत्तियों का मूल माना है.

नवीन समाजवाद के आचार्य कार्लमार्क्स समस्त प्रवृत्तियों का मूल 'अर्थ' मानते हैं.

अध्यात्म के आचार्य काम एव अर्थमूलक समस्त प्रवृत्तियो (कर्म) का मूल प्रेरक 'मोह' मानते हैं—'कम्म च मोहप्पभव वयंति"

—भगवान महावीर (उत्तराध्ययन)

मुर्दे

मुर्दे दो प्रकार के होते हैं—

एक मृत मुर्दे, जो श्मशान मे जला दिए जाते हैं. या कब्र मे दफना दिए जाते हैं एक जीवित मुर्दे—जो अपनी लाश खुद उठाए समाज मे घूमते फिरते हैं, गन्दगी और सडाद पैदा करते रहते हैं.

जिनके उत्साह की ऊष्मा ठंडी पड़ गई हैं, जो बात-बात मे दूसरो का सहारा ताकते हैं, हर काम को 'कल' पर टालकर 'आज' पड़े-पडे बिताना चाहते हैं वे कायर और आलसी व्यक्ति जीवित मुर्दे हैं, उनके आलस्य की बदबू से समाज का स्वास्थ्य चौपट हो जाएगा, सावधान!

चार परिभाषाएं

जो आवश्यकता से अधिक चाहता है, वह दरिद्र है.

जो आवश्यकता के अनुरूप चाहता है, और प्राप्त कर लेता है, वह धनवान है

जो कभी आवश्यकता के लिए कुछ चाहता नही, वह सन्त है.

और जो कभी आवश्यकता का अनुभव भी नही करता, वह परमयोगी है

दरिद्र कौन ?

दरिद्र कौन ? एक प्रश्न चारो ओर गूंज उठा! उत्तर नही मिला सभा मे आसीन बडे-बडे सेठ-साहूकार और सम्राट भी मौन थे.

सन्त ने कहा—क्या धन के अभाव मे कोई दरिद्र होता है ?

सबकी आकृति स्वीकृति सूचक थी.

किन्तु इस दूपरण को भूषण भी बनाया जा सकता है.
दृष्टि दूसरो की ओर न घूम कर अपनी ओर घूम जाए.
जिसने अपने दोप देख लिए, वह फिर कभी दूसरो के दो
नही चाहता.

सजातीय

दोप वही देखेगा, जिसमे स्वय में दोप होगे.
दोप के पास ही दोप आता है. दोप-दोप परस्पर सजा
वन्धु है.

आ

आलोचना एक साबुन है, जो मैल को धोकर साफ कर देता है.
पर, आश्चर्य है कि इस का प्रयोग हर कोई दूसरों की सफाई के
करता है. अपनी सफाई के लिए कोई ध्यान भी नही देता.

विकारो का रावण !

मन के सिहासन पर जब तक विषय विकारों का रावण बैठा है, त
तक विवेक-वैराग्य का राम वहाँ आएगा ही नहीं.
यदि मन के सिहासन पर विवेक-वैराग्य के राम को बैठाना है, तो
विकारो के रावण को दूर भगाइए. आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है—

ताव ण णेज्जइ अप्पा विसएसु णरो पवट्टए जाव.

जब तक मनुष्य विपयों को जानता है, तब तक आत्मा को नहीं जान
सकता विपयो को भुलाने से आत्मा को जाना जायेगा

मूल क्या है ?

मनोविज्ञान के आचार्य फ्राइड ने 'काम' को सब प्रवृत्तियों का मूल
माना है.
नवीन समाजवाद के आचार्य कार्लमार्क्स समस्त प्रवृत्तियों का मूल
'अर्थ' मानते हैं.

चिन्तन की चांदनी

अध्यात्म के आचार्य काम एव अर्थमूलक समस्त प्रवृत्तियो (कर्म) का मूल प्रेरक 'मोह' मानते हैं—'कम्म च मोहप्पभवं वयति."

—भगवान महावीर (उत्तराध्ययन)

मुर्दे

मुर्दे दो प्रकार के होते हैं—

एक मृत मुर्दे, जो श्मशान मे जला दिए जाते हैं, या कब्र मे दफना दिए जाते हैं एक जीवित मुर्दे—जो अपनी लाश खुद उठाए समाज मे घूमते फिरते हैं, गन्दगी और सडाद पैदा करते रहते हैं.

जिनके उत्साह की ऊष्मा ठंडी पड़ गई हैं, जो बात-बात मे दूसरो का सहारा ताकते है, हर काम को 'कल' पर टालकर 'आज' पडे-पडे बिताना चाहते है वे कायर और आलसी व्यक्ति जीवित मुर्दे है, उनके आलस्य की बदबू से समाज का स्वास्थ्य चौपट हो जाएगा, सावधान !

चार परिभाषाएं

जो आवश्यकता से अधिक चाहता है, वह दरिद्र है.

जो आवश्यकता के अनुरूप चाहता है, और प्राप्त कर लेता है, वह धनवान है.

जो कभी आवश्यकता के लिए कुछ चाहता नही, वह सन्त है.

और जो कभी आवश्यकता का अनुभव भी नही करता, वह परमयोगी है

दरिद्र कौन ?

दरिद्र कौन ? एक प्रश्न चारो ओर गूंज उठा ! उत्तर नही मिला. सभा मे आसीन बडे-बडे सेठ-साहूकार और सम्राट भी मौन थे.

सन्त ने कहा—क्या धन के अभाव मे कोई दरिद्र होता है ?

सबकी आकृति स्वीकृति सूचक थी.

'तब तो मैं भी दरिद्र हूँ'—सन्त की वाणी पर सब चौक उठे, "नहीं ! नही ! आप तो सम्राटो के सम्राट हैं"

तो क्या दरिद्र वह है जिसके हृदय में परितृप्ति नही है ?

सभी श्रोता अपने-अपने भीतर दृष्टि गडाए बैठे थे.

सन्त ने दरिद्र की सच्ची परिभाषा की—दरिद्रता द्रव्य में नहीं, दिल में रहती है, धन-हीन दरिद्र नही, किन्तु धन होने पर भी जिसके दिल में तृप्ति और संतोष नही है, वही दरिद्र है

तृष्णा !

तृष्णा प्रारम्भ मे वामन की तरह लघुरूप लेकर चलती है, किन्तु धीरे-धीरे विष्णु की तरह विराट् रूप बनाकर ससार को अपने गर्भ मे समाहित कर लेना चाहती है.

परिग्रह विग्रह है.

आत्मद्रष्टा की दृष्टि मे उपाधियाँ व्याधियाँ हैं, श्लोक (प्रशसा) शोक हैं और परिग्रह विग्रह है.

तीन रोग : एक दवा

मन का रोग है—आधि.

तन का रोग है—व्याधि.

धन का रोग है—उपाधि.

और तीनो रोगो की एक दवा है—समाधि !

बहुरूपियापन

मनुष्य के आचार-विचार में आज विचित्र बहुरूपियापन आ रहा है उसके मन और वाणी में अन्तर है, वाणी और कर्म में विसंगति है. कथनी और करनी में भेद है, कहनी और रहनी मे बहुरूपियापन छाया हुआ है.

उसके मुह पर मधुरता है, किन्तु हृदय मे घोर कटुता छलछला रही है. उसकी वाणी फूल वरसाती-सी लगती है, किन्तु उसके हाथ तो ससार के लिए काटे ही वो रहे हैं.

हाथी के दांतों की तरह उसका जीवन भी दिखाने का और, वरतने का और। यह वहुरूपियापन ही आज की अशान्ति, दु.ख एव असफलताओ का मूल है

अन्धवल।

नीतिवल, ससार व्यवहार को देखकर चलता है.

आत्मवल, अपने अन्त करण को देखकर चलता है किन्तु जो न ससार व्यवहार को देखता है और न अन्त.करण को, वह तो अन्धवल है.

वासना और व्यभिचार

शारीरिक सुख की कामना, वासना है, भोग है वासना जब नीति, समाज और सदाचार की मर्यादा को लाघ जाती है तो व्यभिचार कहलाती है

अत्याचार और कायरता

अत्याचार और कायरता मे कोई अन्तर नही.

कायर आत्म-रक्षा के लिए अत्याचारी वनता है और अत्याचारी अपने से वड़े अत्याचारी के समक्ष कायर वन जाता है

केले के छिलके

दुष्ट व्यक्ति सड़क पर गिरे हुए उस केले के छिलके के समान है, जिसका भूल से स्पर्श होने पर भी व्यक्ति औंधे मुंह गिर पड़ता है

दु ख का मूल।

पेट का विकार ही सब रोगो की जड़ है।

और मन का विकार? ससार के समस्त दु.खो का मूल है.

आत्म-प्रशंसा सुनकर गुब्बारे की तरह फूलनेवालो को यह भी जान लेना चाहिए कि– गुब्बारे की फुलावट कब तक है ?
पराई हवा पर, और पराई प्रशंसा पर क्या कभी क्षणभर का भी भरोसा किया जा सकता है ?

कर्तृत्व और कीर्ति

यदि तुम्हारे मे गुण है तो प्रशंसा अपने आप प्राप्त होगी.
फूल मे सौरभ है तो मधुकर अपने आप आ जायेंगे.
कर्तृत्व है, तो कीर्ति अपने आप फैल जायेगी

मोह के बादल !

दिग्दिगन्त को आलोकित करने वाला सूर्य का प्रखर-प्रकाश. और शान्त रात्रियो को विहंसानेवाली चन्द्र की शीतल-शुभ्र निर्मल-ज्योत्स्ना बादलो के नीलाभ आवरणो से ढंककर धुंधली पड जाती है. पर क्या वह बादलो का धुंधलका चिरकाल तक उस प्रकाश पुंज को ढंके रख सकता है ?
नही.
साधक ! तुम्हारी आत्मा के दिव्य प्रकाश पर भी मोह के बादल घिर आए हैं और तुम अन्धकाराच्छन्न-से हो रहे हो, आत्म-चिन्तन के दक्षिणी पवन से उन बादलो को नष्ट-भ्रष्ट कर डालो.

आत्मज्योति निखर उठेगी. दिव्य प्रकाश विहंस उठेगा.

मोह का आवरण

मोह सबसे बड़ा आवरण है, मोह का आवरण टूटे बिना न सम्यग्-दर्शन की प्राप्ति होती है, न श्रावकधर्म, श्रमणधर्म और न केवल-ज्ञान की ही

सत्य के द्वार पर मोह सबसे बडा कपाट है सत्य का साक्षात्कार करना है तो मोह का दुर्भेद्य कपाट तोड डालिए.

गणधरगौतम के मन मे एक सूक्ष्म-राग था, मोह था। और उस मोह के आवरण ने उनके केवलज्ञानालोक को भी आच्छादित किए रखा, जब तक आवरण नही हटा, आलोक प्रगट नही हुआ. जब तक वह कपाट तोडा नही गया, सिद्धि का द्वार नही खुला

सचमुच मोह एक ऐसा जहरीला कांटा है, कि जब तक लगा रहता है, मन एक सूक्ष्म अकुलाहट और पीडा से व्यथित रहता है.

मन की प्रसन्नता और स्वस्थता के लिए मोह के काटे को निकाल फेंकिए

मोह की खुजली....

मोह एक खुजली है. खुजली से ग्रस्त व्यक्ति को खुजलाने मे आनन्द की अनुभूति होती है, मोह से ग्रस्त व्यक्ति को भोगो मे आनन्द की अनुभूति होती है

जिसके अन्त.करण मे मोह के कीटाणु नही रहे, उसे भोग, रोग के समान लगते हैं, जैसे कि स्वस्थ व्यक्ति को खुजलाना बिमारी जैसा लगता है

✓ मोह और प्रेम

मोह और प्रेम मे महान अन्तर है दोनो पूर्व और पश्चिम की तरह कभी नही मिलने वाले दो किनारे है.

प्रेम आक्सिजन की तरह प्राणपोषक है, और मोह हाइड्रोजन की तरह प्राणशोषक. प्रेम आत्मा के अन्त करण से प्रस्फुटित होने वाला मधुर स्वरनाद है, मोह मन की विह्वलदशा मे गुनगुनाया हुआ स्पन्दनहीन गान है

प्रेम की निर्मल और पवित्र धारा मे आत्मगुणो का पल्लवन होता है. मोह की कल्मष-पंकिल वीथियो मे आत्महता कीटाणु कुलबुलाते रहते है. प्रेम आत्मा का सरगम है. मोह विकारो का अट्टहास!

प्रेम चैतन्य देही की उपासना करता है. मोह जड देही की.

प्रेम जन्मान्तर का शुद्ध संस्कार है, मोह जन्म-जन्म में घनीभूत होता हुआ मानसिक विकार है.

प्रेम की पगडण्डियां साधना और योग की ओर बढ़ती हैं, मोह के कुटिल कदम वासना और भोग की ओर लड़खड़ाते रहते हैं.

प्रेम और मोह का उद्भव अन्तःकरण के सागर में होता है. परन्तु एक जीवनदायी अमृत है, तो दूसरा सर्वघाती हलाहल विष !

मेरे मन ! तू प्रेम की साधना कर ! प्रेम की अग्नि जला, पर उसमें मोह का धुआं न होने दे.

मोह का बन्धन !

एक छोटा सा कोमल-कोमल लघु चरणोंवाला मधुकर काठ में छेद करके उससे बाहर आ सकता है, परन्तु कमल की कोमल पंखुड़ियां को नहीं छेद सकता ?

क्यों जी ?—प्रज्ञा ने पूछा.

हृदय ने उत्तर दिया—फूलों के साथ भ्रमर का निगड़-स्नेह बंधन है. काठ के साथ वह निर्मम है. स्नेह कभी-कभी बंधन की बेड़ियां बन जाता है, और निर्मम कभी-कभी मुक्ति का द्वार खोल देता है.

मोहन !

भगवान अपने गुणात्मक नाम से सुविश्रुत है. उनके हजारों नाम हैं, सभी अपने में किसी विशिष्ट गुण की अभिव्यंजना लिए हुए हैं.

'मोहन'—भगवान का मधुर नाम है—कितनी गम्भीर व्यंजना है इस नाम में—मोह+न ! जिसे किसी में मोह नहीं. मोह दोष है. प्रभु का पवित्र नाम इस दोष से दूषित कैसे हो सकता है ?

मोहन का पवित्र नाम लेने के लिए, मन को मोह रहित करना होगा. मोहन के दर्शन करने के लिए दृष्टि को मोह मुक्त करना होगा. मोह के घर में रहने वाला मोहन का दर्शन नहीं कर सकता. मोहन की उपासना करने वाला कभी मोह के चंगुल में नहीं फंसता.

आओ ! मोह का निवारण करे, तभी मोहन के दिव्य दर्शन होंगे.

पाप ताप . संताप

पाप निश्चय ही मन मे ताप पैदा करता है, और ताप जन्म-जन्म तक संताप का कारण बनता है

बहुत सोचना बीमारी है.

बहुत सोचना भी एक बिमारी है.

जो जानदार है, वह जवान है, जवान ज्यादा नही सोचता, वह शीघ्र ही निर्णय पर पहुचता है और क्षणभर मे कार्य सम्पन्न ।

सोचना, सोचना और बहुत सोचना—इस का नाम है बुढ़ापा। सोचते-सोचते कुछ नही करना—इसका नाम है मृत्यु ।

डाक्टर यदि रोगी को देखकर घटो सोचता रहे तो, रोगी मर न जाये? रेलगाडी का ड्राइवर यदि सोचता ही रहे तो रेलो को भिड़न्त कराके सैकड़ो को मौत के घाट नही उतार दे.

शीघ्र सोचना, शीघ्र करना जानदार जवानी है

उदासी और निराशा

महापुरुष भी कभी-कभी उदासी और निराशा के शिकार हो जाते है. पर, वे उससे भागने की कोशिश नही करते. वे उदासी और निराशा मे लडते है उनके सामने जीवन का एक निश्चित उद्देश्य होता है, और उसी उद्देश्य को सामने रख कर वे अपने कार्य मे जुट जाते है निराशा और उदासी उनकी प्रेरणा बन जाती है

चिन्ता . [illegible] बनाम चिन्तन

चिन्ता करना और चिन्ता मे फसना—इन मे बहुत बड़ा अन्तर है चिन्ता करना चिन्तनशीलता है, समाधान की तलाश है, और चिन्ता मे फंसना—घबराकर 'हाय-हाय' करना है, धैर्य खोकर निराशा मे डूब जाना है

चिन्ता करने मे चिन्ता मनुष्य की चेरी बन कर वश में रहती है, विपत्ति में हाथ बंटाती है.

चिन्ता में फंसने पर चिन्ता भूत बनकर सर पर सवार हो जाती है, साहस की कमर तोड देती है.

जब किसी विपत्ति मे फंसने पर उसके निस्तार का उपाय सोचा जाता है, तो वह चिंता, सोचना या चिंतन कहलाएगा.

और जब विपत्ति से घबराकर 'हाय मरे' 'हाय मरे' पुकार कर निराशा के अंधकार में भटक जाते हैं तो वह चिन्ता या फिक्र कहलाएगी.

पहली स्थिति में चिंता सर्जक है, चिंता-चेरी है, दूसरी स्थिति में चिंता विनाशकारिणी है, चिंता चुड़ैल है.

चिंता-चेरी को अपनाइए और चिंता-चुड़ैल से बचिए।

पैसा और पाप

पंडित लोग कहते हैं—पैसा और पाप की राशि एक है जहाँ पैसा होगा वहाँ पाप भी होगा.

वर्तमान का चिन्तनशील मानस आज धनकुबेर अमेरिका की जीवन-दिशा के सम्बन्ध मे चिंतातुर है. वहाँ पैसा अधिक है, इसलिए पाप भी अधिक हो रहा है, हत्याएं और व्यभिचार भी अधिक फैल रहा है.

प्रे० कैनेडी, मार्टिन लूथर किंग और राबर्ट कैनेडी जैसे शान्तिप्रिय महामानवों की नृशंस हत्याए देखकर संसार चौंक उठा है कि धन-कुबेर अमेरिका के लोग कहीं विश्व के सबसे अधिक भयानक व्यक्ति तो नहीं हैं?

धन का पर्दा

धन एक ऐसा पर्दा है, जो पाप और मूर्खता को अपने नीचे आवरण में छिपा देता है.

पर, यह भूलना नही चाहिए कि वे पर्दे की ओट मे और भी गहरे पनपते जाते हैं.

अर्थ . व्यर्थ या सार्थ

अर्थ व्यर्थ नही है, पर उसके बिना ससार मे मनुष्य का जीवन व्यर्थ हो जाता है. बिना परो के पक्षी की, और बिना पतवार (मस्तूल) के नौका की जो गति होती है, वही गति ससार मे अर्थाभाव से पीडित दरिद्र मनुष्य की होती है

अर्थ जीवन के लिए अर्थपूर्ण (सार्थ) है, पर उसकी सार्थकता इसी बात मे है कि मनुष्य उसे अपनी वासनापूर्ति का साधन न बनाए. अपने भोग एवं अहकार की परितृप्ति के लिए नही, किन्तु जीवन-यापन के लिए ही अर्थ का उपयोग करे

भोग

भोगजन्य सुखो के अन्त में दु.ख की अनुभूति छिपी है, जिस प्रकार कि सेक्रीन की मधुरता के अन्त मे कड़वाहट छिपी रहती है

जिस प्रकार बर्फ की शीतलता मे भी उष्णता रही हुई है, उसी प्रकार भोगासक्तिजन्य शान्ति के अन्त मे पश्चात्ताप का सताप छिपा हुआ है.

इमली की छाया शीतल भले ही लगे, किन्तु वह सुखद नही है, शरीर मे ऐंठन पैदा कर देती है, अग-प्रत्यग मे दर्द होने लगता है विषय-भोग से प्राप्त होने वाली सुखानुभूति भी इसी प्रकार की है

चिकना फर्श

विषयो का यह एक ऐसा चिकना फर्श है, जिस पर गिरकर अगणित मनुष्यो ने अपनी हड्डी-पसली तोड़ दी, पर फिर भी मनुष्य कहाँ सभला है ? गिरता ही जा रहा है

भूख !

भूख-शब्द दो अक्षरों के संयोग से बना है, भू+ख.

'भ'—का अर्थ है पृथ्वी, और 'ख'—का अर्थ है आकाश. जो पृथ्वी और आकाश को एक करदे—उसका नाम है भूख !

'भूख' की पीडा सबसे विकट व असह्य है. तलवार के घावों से नही डरने वाले भूख से व्याकुल होकर छटपटाने लग जाते हैं.

माया का जाल

माया एक जाल है. दीखने मे सुन्दर ! छूने में कोमल !

किन्तु इस जाल मे फंसने के बाद, न फंसनेवाला निकल सकता है, और न फेंकने वाला. दोनों ही उसमें फंस जाते है.

निन्दा

साथी ! तुम्हारी निन्दा या आलोचना वस्तुत. झूठी है, तो तुम्हें निन्दक पर क्रोध नही, दया आनी चाहिए कि वह व्यर्थ ही तुम्हारे निमित्त से पतित हो रहा है.

यदि तुम मानते हो कि निन्दा सही है, सत्य है, तो फिर तुम्हे कृतज्ञ व विनम्र बनना चाहिए कि उसने कृपा करके तुम्हें सावधान किया है

सत्ता की दासता

अर्थ और सत्ता की दासता बड़े से बडे मनुष्य को भी सत्वहीन बना देती है

द्रोपदी के चीरहरण के समय भी भीष्म जैसे महारथी को भी इसलिए मौन रहना पड़ा कि वे दुर्योधन की सत्ता के चगुल मे फंस गए थे.

गांठ में रस नहीं

ईख में मधुर-रस छलछलाता है, पर मैंने देखा—जहां गांठ है, वहां रस नहीं.

जीवन भी अमृत रस से भरा हुआ ईख है, किन्तु जहां गांठ लग गई वहां रस नही रह पाता.

विषयों का व्यामोह

मैं नदी के किनारे खड़ा-खड़ा देख रहा था कि—एक कुत्ता हांफता हुआ आया और नदी के भीतर चला गया. पानी के भीतर वह गले तक डूबा जा रहा था, किन्तु फिर भी जीभ लपलपाकर पानी को चाटने का प्रयत्न उसका चालू था.

मेरे मन में एक विचार रेखा कौंध उठी—ससार के अज्ञानियो की यही दशा है. दु.ख में आकण्ठ डूबे हुए है, मृत्यु सामने खडी है, फिर भी विषयों को चाटने का व्यामोह नहीं छोड सकते.

क्रोध का उफान !

क्रोध का उफान 'फ्रूटसाल्ट' की तरह होता है, किन्तु जो उसे पीजाए वह दुर्गुणो को हजम करके जीवन में मधुरता प्राप्त कर लेता है.

क्रोध का आदि अन्त

क्रोध का प्रारम्भ करते समय मनुष्य केवल मूर्ख ही होता है, किन्तु अन्त होते-होते तो वह अपराधी भी बन जाता है.
और फिर अपने अपराध पर आंसू भी बहाने लग जाता है.

अमृतजडी

क्रोध का उपचार एक ही है—विचार. क्रोध के दुष्परिणामो पर यदि विचार किया जाए तो क्रोध उत्पन्न ही नही होगा, यदि हो गया तो बहुत ही शीघ्र समाप्त हो जायेगा.
इसीलिए आचार्यों ने क्रोध के ज्वर की अमृतजडी 'अपायचिन्तन' (दुष्परिणाम का चिंतन) बतलाई है.

आंधी और तूफान

क्रोध की आंधी चली नहीं, कि विवेक का दीपक गुल हो गया

लोभ का तूफान आया नही, कि शान्ति का उपवन उजाड़ हो गया.

क्रोध की फूंक

दर्पण पर फूंक मारने से धुंधला हो जाता है, फिर प्रतिबिम्ब दिखलाई नही देता

मन के दर्पण पर क्रोध की फूक मत मारो ! वह धुधला हो जायेगा, फिर माता-पिता, भगिनी भ्राता आदि का परिज्ञान नही हो पायेगा और तुम बिल्कुल अबोध कहलाओगे

क्रोध, दुर्बलता का लक्षण है.

क्रोध शक्ति का नही, अशक्ति का लक्षण है. बल का नही, दुर्बलता का चिन्ह है. ज्ञान की नही, अज्ञान की निशानी है.

क्रोध से विरोध

क्रोध से विरोध का जन्म होता है, प्रतिशोध की आग प्रज्ज्वलित होती है.

क्रोध मे ज्ञान नही

खौलते हुए पानी मे अपना प्रतिबिम्ब दिखलाई नही दे सकता उसी प्रकार क्रोध से विक्षुब्ध मानस में हित-अहित का ज्ञान उदित नही हो सकता.

चार रोग : चार प्रयोग

क्रोध की अग्नि को क्षमा के पानी से शान्त कीजिए.
अहंकार के पर्वत को नम्रता के वज्र से तोड़ डालिए.
कपट की कंटीली झाड़ियो को सरलता के फरसे से काट डालिए.
लोभ के अन्धगर्त को सन्तोष की मिट्टी से भर दीजिए

मन के खटमल

विकार मन के खटमल-मच्छर है. थोड़ा-सा अन्धकार हुआ कि भन-भनाने लगते है, काटने दौडते हैं. किन्तु जैसे ही ज्ञान का प्रकाश फैला कि कही जाकर छुप जाते है, फिर दिखाई नही देते.

चिन्तन की चाँदनी

पं

चा

मृ

त

जीवन की कुण्ठा और मन की मूर्च्छा को दूर करने के लिए विचारों का यह पंचामृत प्रस्तुत है.

यह पंचामृत वैद्य भी है, औषधि भी है. विविध सद्विचारों का सम्मिलन पंचामृत की अद्भुतशक्ति को स्फूर्त करेगा जीवन की भूलों का परिशोधन करेगा. अन्तश्चैतन्य को स्फुरित करेगा.

पंचामृत

पचा हुआ विचार

पचा हुआ आहार शरीर मे रक्त-मास की वृद्धि करता है. पचा हुआ विचार जीवन मे बुद्धि का विकास करता है

अहंकार का सिगनल

मैंने देखा है कि जब तक सिगनल नही गिरता, गाड़ी स्टेशन की सीमा मे प्रवेश नही करती.

जब तक अभिमान का सिगनल नही गिरेगा, तब तक ज्ञान रूपी गाडी जीवन के स्टेशन मे प्रविष्ट नही होगी

जागते रहो !

चालाक चोर—असावधान व्यक्ति पर हमला करते है.

हिंसक पशु—असावधान व्यक्ति को दबोच लेता है

मन के विकार—असावधान व्यक्ति पर आक्रमण करते है.

जागरूक रहिए ! जगने वाले से चोर डरते है, हिंसक पशु भय खाते है और विकार निकट नही आते.

कीर्ति !

मनुष्य कीर्ति चाहता है, नाम चाहता है. बिना कुछ काम किये भी वह नाम कमा लेना चाहता है.

कीर्ति से पेट नही भरता, फिर भी वह खाली पेट रहकर कीर्ति पाना पसन्द करता है.

भाव और विचार

भाव एक स्फुरणा है, गति, वेग एव बल है.

विचार एक विश्लेषण है, कांट-छांट, व्यवस्था व योजना है.

भाव-युक्त विचार एक क्रियाशील प्रक्रिया है

✓ अर्थ-माधुर्य

चीनी में उतना ही पानी डालना चाहिए जितने से उसकी मधुरता कम न हो. उतने ही शब्दो का प्रयोग करना चाहिए जितने से अर्थ का माधुर्य बना रहे.

जोड़ना और काटना

काटने का काम सरल है, जोड़ने का कठिन !

कैंची जितनी तेजी के साथ वस्त्र को काटती है, क्या उतनी तेजी के साथ सूई उसे जोड़ सकती है ?

जोड़ने मे अनेक बाधाएँ और घुमाव आते है, काटने मे कोई कठिनाई नही होती.

गति-स्थिति

जीवन के लिए जितनी गति आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक है स्थिति. जो केवल चलना ही जानता है, वह जीवन मे ठोकर खाकर उसी प्रकार गिरता है जिस प्रकार बिना ब्रेक के तेज गति से चलने वाली कार टकराने पर चूर-चूर हो जाती है.

अन्तिम अनुभूति !

मृत्यु के क्षण जो कष्टानुभूति और पश्चात्ताप होता है, वह यदि पहले हो जाए तो मृत्यु के समय मनुष्य हँसता हुआ मर सकता है. वह जीवन में फिर पाप व अन्याय नही करेगा.

गाँठ डालना सहज है, खोलना कठिन है.
मेरे हाथ मे एक धागा है, इधर से उधर हुआ और गाँठ पड गई धागे को पुनः उधर से इधर किया मगर गाँठ खुली नही, और अधिक उलझ गई.
मैं सोचता रहा—गाँठ पैदा करने मे बुद्धिमानी नही, खोलने मे बुद्धिमानी की आवश्यकता है.
गाँठ डालना बन्दर को भी आता है, किन्तु खोलना मनुष्य की ही बुद्धि का काम है

साहित्य का श्रेयार्थ

बुद्धि की शिथिलता को दूर करने के लिए साहित्य एक श्रेष्ठ टॉनिक है
मन की कुण्ठाओ को तोडने के लिए साहित्य अचूक रामबाण दवा है.
बुद्धि मन एव जीवन का परिष्कार ही साहित्य का श्रेयार्थ है.

साहित्य का विशेष

साहित्य—हमारी आन्तरिक सुरुचियो का परिष्कार करता है. आध्यात्मिक शक्तियो का विकास करता है और मन में शक्ति एव स्फूर्ति का सचार करता है

अपना स्थान

प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही उपयोगी और सुन्दर लगती है. काजल आँख मे सुन्दर लगता है और महावर पैरो मे

नेक और बदनाम

मनुष्य को नेक बनने के लिए समूचा जीवन भी अपर्याप्त है किन्तु बदनाम होने के लिए एक क्षणभर ही काफी है

बड़प्पन का लक्षण

केवल शक्तिसम्पन्न होना ही बड़प्पन का लक्षण नहीं है, शक्ति का जनहित मे प्रयोग करने से बड़प्पन प्राप्त होता है

यदि कोई तुम्हारी नकल करता है तो तुम क्यो कतराते हो ? जानते हो, नकल असल की ही होती है, महत्वपूर्ण वस्तु के नाम पर ही दूसरे तत्त्व अपना महत्त्व स्थिर करना चाहते हैं ?

हीरे-पन्ने-माणक-मोती की नकल होती है, पर कोई ककर-पत्थर की भी नकल करता है ?

तुम्हारी नकल करने वाले आज तुम्हे महत्त्वपूर्ण तो मान ही रहे हैं, हो सकता है, कल अनुगामी भी वन जाएँ

प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा

दूसरो की प्रतिष्ठा देख-सुनकर स्वय को अप्रतिष्ठित अनुभव करना मूर्ख का काम है

विवेकवान वह है, जो दूसरो की प्रतिष्ठा के कगार को छूकर उससे आगे वढना चाहता है.

मूल्य

जिस आँख मे कभी आंसू नही छलके, वह हँसने का मूल्य क्या जाने ? जिस मानव ने कभी दु.ख नहीं देखा, वह सुख का मूल्य क्या जानें ?

सदाचार की सौरभ !

जिस जीवन में सदाचार की सौरभ है, उसके पास भक्त रूप भौंरे विना वुलाए ही आजायेगे.

फूल भौंरों को नही वुलाता, हीरा जौहरी को नही वुलाता, फिर सन्त भक्तो को क्यो वुलाए ?

अन्तर !

मानव और पशु की गति मे क्या अन्तर है ?

मानव कर्तव्य से उत्प्रेरित होकर कार्य करता है, और पशु भय से संत्रस्त होकर.

बूंद और सागर !

एक-एक बूंद से सागर भर जाता है, एक-एक क्षण से जीवन बन जाता है.

जो बूंद को समझ लेता है, वह सागर को भी समझ लेता है, जो क्षण का महत्व जान लेता है, वह जीवन का महत्व भी जान लेता है.

स्वर्ग की ओर

यह कहा जाता है कि मनुष्य के पैर नरक की ओर है और सिर स्वर्ग की ओर !

क्या तुम्हे पैर की ओर बढना है या सिर की ओर ? अधोगति करना है या ऊर्ध्वगति ?

दृष्टि का चश्मा !

जिसने जैसा चश्मा लगाया. उसे वैसा ही दिखलाई पढेगा.

सफेद वस्त्र को हरा चश्मेवाला हरा देखेगा, और काले चश्मेवाला काला.

जिसकी दृष्टि मिथ्यात्व से धूमिल है, वह सत्य को भी असत्य रूप में देखेगा।

सत्य से निर्मल दृष्टि वाला असत्य में से भी सत्य को निकाल कर ग्रहण कर लेता है—जैसे हस जल-मिश्रित दूध में से दुग्धाश को ग्रहण कर लेता है

समुद्र और मगरमच्छ

ससार यदि समुद्र है, तो घर, परिवार और पुद्गलों की ममता, विशाल-काय मगरमच्छ है

पारगमनाभिक ! इस देह की नाव पर बैठकर तुम्हें समुद्र के उस पार जाना है, सावधान होकर चलो !

प्रलोभनो के तूफान और ममता के मगरमच्छ तुम्हें निगलने को जीभ लपलपा रहे हैं

छिपाना या प्रकट करना

✓ पाप पुण्य छिपाने से बढ़ते हैं, प्रकट करने से घटते हैं. अतः पाप को छिपाना नही चाहिए. पुण्य को प्रकट नही करना चाहिए.

पाप-पुण्य

✓ शिष्य ने गुरु से पाप की परिभाषा पूछी गुरु ने समाधान देते हुए कहा—"जिस कार्य को करते हुए और करने के पश्चात् मन भयभीत होता हो, लज्जा एव ग्लानि का अनुभव होता हो, वह कृत्य 'पाप' है."

और पुण्य ?

"जिस कृत्य को करते समय मन मे आनन्द की अनुभूति हो, एव अन्त में उल्लास तथा आल्हाद से युक्त प्रसन्नता जगमगाती हो. समझलो वह पुण्य है"

कर्म : मशीन

एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया—जब कर्म जड़ है तो फिर हर पाप-पुण्य का बराबर फल वह कैसे दे सकता है ? क्या वह कर्ता व कर्म-फल को पहचानता है ?
मैंने समाधान दिया—
गणित की मशीन (कम्प्यूटर) अकगणना मे कभी गलती करती है ?
"नही !" उत्तर मिला
क्या उसे यह ज्ञान है कि कौन-सा अक कहाँ लगाना है ?
'नही !'
फिर भी वह मनुष्य के मस्तिष्क से भी अधिक दक्षता के साथ कार्य करती है, क्या यह जड़-शक्ति का चमत्कारी प्रमाण नही है ?
जब जड़ गणित-मशीन भी अक गणना मे कोई गलती नही करती है, तो कर्म भी उचित फल-प्रदान में कैसे भूल कर सकते है ?

पाप : पुण्य

पाप दुर्गन्ध की तरह बहुत शीघ्र फैलता है, जबकि पुण्य सुगन्ध की तरह बहुत धीरे-धीरे प्रसार पाता है.

दुर्गन्ध से जितना जल्दी दम घुटता है, सुगन्ध से उतना जल्दी मस्तिष्क तर नही होता

पाप प्रसरणशील है, पुण्य संकोचशील.

बुद्धिमान और मूर्ख

खेल में कही हुई वात से भी वुद्धिमान शिक्षा ग्रहण कर लेता है, जवकि मूर्ख को हजार-हजार ग्रन्थ सुनाए जाएँ तव भी वह उन्हे खेल समझता रहता है.

अधिक लाभ

सुनने से अधिक लाभ है पढ़ने में. पढने से अधिक लाभ है पढ़ाने मे पढाने से भी अधिक लाभ है जीवन मे उतारने से.

श्रम और चिन्ता!

कड़े से कड़े श्रम से भी स्वास्थ्य नही विगडता, किन्तु थोडी-सी चिन्ता भी उसे चौपट कर डालती है. और निराशा तो उसे निगल ही जाती है

सम स्वभाव

पानी और विद्या का स्वभाव एक जैसा है पानी कभी ऊँचाई की ओर नही वहता, और विद्या भी कभी अभिमानी (जो अपने को ऊँचा समझता है) की ओर नही जाती. दोनों समस्वभावी हैं.

सर्वांगशिक्षा

जो शिक्षा सिर्फ बौद्धिक ही हो, वह पूर्ण शिक्षा नहीं कही जा सकती. शिक्षा का अर्थ व्यापक है, सब अंगो की शिक्षा ही सर्वांगशिक्षा कहलाती है—देह को श्रम करने की मस्तिष्क को सोचने की और मन को करुणा-सहृदयता की शिक्षा ही वस्तुत. सर्वांगशिक्षा है

प्रतीति और प्रीति....

विना नीति के प्रतीति (विश्वास) नही हो सकती, और विना प्रतीति के प्रीति का जन्म ही कहा से होगा ?

नीति से प्रतीति और प्रतीति से प्रीति—यह प्रेम का सात्त्विक मार्ग है.

जीभ एक क्यों है ?

मनुष्य के आँख दो है, कान दो है और हाथ भी दो है, किन्तु जीभ एक है प्रकृति के इस निर्माण का रहस्य क्या है ?

चिन्तन के उजाले में इसका रहस्य स्पष्ट दिखलाई दिया—जितना देखें, जितना सुनें और जितना श्रम करें उससे आधा बोलना चाहिए.

मनुष्य देखता कम है, सुनता कम है, करता कम है, मगर बोलता अधिक है यही सब समस्याओ की जड है.

मौन और उपवास

मौन भी एक खाद्य है. उपवास भी एक औषधि है.

मन मस्तिष्क की शान्ति के लिए मौन आवश्यक है. शरीर की शुद्धि के लिए उपवास जरूरी है

अंग्रेजी कहावत के अनुसार बोलना चांदी है, चुप रहना सोना है.

'मौन सर्वार्थसाधनम्' इस सुभाषित पर विचार करके मौन रहने का अभ्यास करिए.

घनी पत्तियां !

बहुत बोलने वाला व्यक्ति कार्य बहुत कम कर पाता है.

बहुत घनी पत्तियों वाले वृक्ष पर अक्सर फल कम आते हैं,

मुकाबला

हठ का सामना हित से करो, हठ परास्त हो जायेगा.

तलवार का सामना रेशम से करो तलवार हार जायेगी.
द्वेष का सामना प्रेम से करो, द्वेष खण्ड-खण्ड हो जायेगा.

दिल का दण्डकारण्य

दिल के दण्डकारण्य में दुर्गुणों के दैत्य घूमते रहते हैं. इसमें बुद्धि-विवेक रूपी सीता-राम को भ्रमण करने दो, दैत्य भाग जायेंगे और तब इस दण्डकारण्य मे सद्भाव, सौजन्य, स्नेह, संयम आदि सद्गुण-रूपी ऋषिगण अपना आश्रम बनाकर आनन्द से निवास करते रहेंगे.

अशक्ति और आसक्ति

अशक्ति एक शारीरिक बीमारी है, उसका उपचार सरल है
आसक्ति एक मानसिक बीमारी है, उसका उपचार बहुत कठिन है.

विवाद और संवाद

विवाद विग्रह को जन्म देता है, संवाद समन्वय को
एकता के लिए संवाद का मार्ग अपनाइए, विवाद से तो वैमनस्य ही पैदा होता है.

जादूगर और साहूकार

जादूगर से पूछा—तुम्हारी विशेषता क्या है ? जनता तुम्हारे पर क्यों पागल हो रही है ?

उसने बताया—मैं हाथ की और बात की सफाई दिखाता हूँ.

साहूकार से पूछा—तुम्हारी विशेषता क्या है ? तुम्हारे विश्वास पर जनता क्यों अन्धी हो रही है ?

उसने बताया—मैं हाथ की और बात की सच्चाई जानता हूँ

हाथ की और बात की सफाई दिखाने वाला जादूगर होता है और सच्चाई दिखाने वाला साहूकार ।

मेरे मित्र ! सोचो, तुम्हें क्या बनना है ?

सिद्धि और प्रसिद्धि

सिद्धि की कामना करने वाले साधक को प्रसिद्धि से दूर रहना चाहिए.

सिद्धि और प्रसिद्धि में विरोध है, जैसे कि पूर्व और पश्चिम मे

गुड और गोड

जो गुड (GOOD) (श्रेष्ठ) बन गया है, वह गोड (GOD) (ईश्वर) भी अवश्य बन जायेगा.

गोड का मार्ग गुड बनने से ही मिलता है.

फूल और माला

पहले फूल चुने जाते हैं, फिर माला पिरोई जाती है.

पहले विचार-रूपी फूलो का चयन कीजिए, फिर आचार की माला गूँथी जायेगी.

कल्चर मोती

आचारहीन विचार कल्चर मोती हैं, जिसकी चमक कृत्रिम और अस्थायी होती है

चोर और साहूकार

घर के सिंह द्वार से निकलने वाला साहूकार होता है, और खिड़कियों से कूदने वाला चोर !

देखो ! तुम जीवन के सिंहद्वार से निकल रहे हो या खिड़कियों से ?

विचार और विवेकयुक्त आचार-जीवन का सिंहद्वार है और विवेक-शून्य दुराचार जीवन की पिछली खिड़की है.

हीरा और ढेला

सूर्य की तेजस्वी किरणें हीरे पर भी गिरती हैं और मिट्टी के ढेले पर भी.

हीरा किरणो की प्रभा से चमक उठता है, किन्तु ढेला वैसा का वैसा ही रहता है

कुछ शिष्य हीरे के साथी होते है जो गुरु की ज्ञान-रश्मियो का प्रकाश ग्रहण कर तेजोदीप्त हो जाते हैं और कुछ शिष्य मिट्टी के ढेले के साथी होते हैं, जो सूर्य के समान सद्गुरु को पाकर भी तेजोहीन रह जाते हैं

मृत्यु क्या है ?

मृत्यु से भय खाने वाले कायर मनुष्य ! कभी सोचा है, यदि तुम मर्त्य (मरणधर्मा) नही होते तो संसार का क्या हाल होता ?

नित नई सुबह मे खिलने वाला फूल कभी मुरझाता नही, तो उपवन की क्या दशा होती ?

विभिन्न जल-स्रोतो मे प्रवहमान जल यदि कभी सूख कर क्षीण नही होता तो पृथ्वी की क्या स्थिति होती ?

मृत्यु, भय और आतंक नही है, वही तो सृष्टि की सुरक्षा, सौन्दर्य और सरसता का अन्तरिम कारण है ?

जीवन एक यात्रा है, मृत्यु एक पड़ाव ! फिर यात्रा और फिर पड़ाव ! जब तक मजिल नही आ जाती, तब तक जीवन-मृत्यु के चरण निरन्तर पथ की दूरी को नापते चले जायेंगे

जीवन एक नाटक है, मृत्यु एक पटाक्षेप ! फिर नाटक ! फिर पटाक्षेप ! जब तक अभिनय समाप्त नही हो जाता, नाटक मे पटाक्षेप का क्रम टटेगा नही.